यदि आप अभी तक इस सिरीज के ग्राहक नहीं बने हैं, तो ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए; या पुस्तक के पृष्ठभाग पर दी हुई सूची में से अपनी पसद की पुस्तकें चुनकर अपने स्थानीय पुस्तक-एजेंट मे लीजिए ।

सरस्वती-सिरीज़ नं॰ २०

सर्वदानंद वर्मा

प्रकाशक

इंडियन प्रेस लिमिटेड

प्रयाग

Printed and published by K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd., Allahabad

नरक

जो ज्यादातर नीची जाति के, मोटर-ड्राइवर वगैरह थे। तेरह बरस की आयु तक मैं वहाँ रही, फिर मुझे वहाँ से किसी तरह हटना ही पड़ा। वे शोफर आदि मुझसे प्रेम के प्रस्ताव करने लगे और कदम-कदम पर मेरा पीछा करने लगे।

राजरानी—अगर प्रेम के प्रस्तावों से और पीछा करने से तुम घृणा करती हो तो यहाँ तुम किसी काम न आ सकोगी।

सविता—तब उमर कम होने से, भोलापन ज्यादा होने से, मैं डरती थी।

राजरानी—आशा है, अब तुम उतना नहीं डरतीं और भोली भी ज्यादा नहीं हो। तुम्हारा चेहरा देखने से जान पड़ता है, तुम दुनिया की हरकतों से पूरी तरह जानकार अभी नहीं हो। खैर, उस नरक के बारे में और तुम्हें क्या कहना है। वह चाची का मकान ही तुम्हारे लिए नरक बन गया था न?

सविता—हाँ, अंशतः। उसके बाद मैं दूकानों पर काम करने लगी, लोगों के सामान उनके घर पहुँचा देती। आप जानतीं नहीं, मेरी तरह और भी लड़कियाँ यही काम कर रही हैं। कुछ तो अपने उस जीवन से सन्तुष्ट हैं, कुछ इस जीवन को नरक समझती हैं। चाची के पास से भागकर मैंने एक और जगह नौकरी की जहाँ मुझे तीन और बड़ी लड़कियों के साथ सोना पड़ता था। हम नौकरों की तरह थे। हमें रात-दिन काम करना पड़ता था। वे तीनों लड़कियाँ भी अच्छे चरित्र की नहीं थीं। इसी तरह इधर से उधर और उधर से इधर मैं फिरती रही। कई बार ऐसा हुआ कि मुझे खाने भर को भी नहीं मिलता था। सबेरे मुझे बड़ी कमजोरी होती। दो साल तक यह क्रम चलता रहा, जब मैं पन्द्रह बरस की हुई तब एक युवक से मेरा परिचय हुआ। एक बार रात को मैं दूकान से घर आ रही थी तभी इस युवक ने मुझसे बातें की। मैं [illegible] के [illegible] की अभ्यस्त हो गई थी। वे [illegible]

किया करते, पैरो मे पैर फँसाकर खींचा करते, किन्तु यह युवक सब से भिन्न जान पड़ा। वह साँवले रङ्ग का आकर्षक युवक था। उसने कहना शुरू किया कि मै बहुत सुन्दर हूँ, बहुत आकर्षक हूँ, आदि-आदि। तब से वह प्रतिदिन शाम को मिलने लगा। मैंने उसे बताया कि मै कैसी गन्दी जगह रहती हूँ—क्या करती हूँ। उसने मुझसे अपने साथ रहने को कहा। वह किराये पर एक कमरा लेगा जिसमे हम दोनो रहेगे। मैंने सोचा, इस नरक से तो वह अच्छा ही होगा। उसने यह भी कहा कि जब मैं सोलह बरस की हो जाऊँगी तब वह मुझसे ब्याह कर लेगा। वह एक चित्रकार था। मैं उसके साथ उसके कमरे मे रहने लगी। पर थोड़े दिनो बाद वह भी मुझसे ऊब उठा। वह यह चाहने लगा कि मैं सिलाई-बुनाई करके अपने खाने-पहनने का व्यय तो चला ही लूँ, साथ ही उसे भी, जो कुछ हो सके, दूँ। यह मेरे लिए नामुमकिन था। उसने मुझे निकाल दिया। अब आप यही समझें कि सबके बाद, मै आपके पास आई हूँ।

सविता की आँखो मे आँसू छलछला आये। राजरानी ने कहा—मैं तुम्हारी कहानी पर विश्वास करती हूँ। तुमने मेरा नाम कैसे सुना? यहाँ तुम्हे किसने भेजा?

सविता—किसी ने नही। मै यहाँ पहले भी आ चुकी हूँ।

राजरानी—सच?

सविता—हाँ। जब मैं तेरह-चौदह बरस की थी और दूकान पर काम करती थी, तब आपके यहाँ की एक स्त्री ने कुछ सामान उस दूकान से खरीदा था। वही पहुँचाने यहाँ आई थी।

राजरानी ने कुछ सोचा, कहा—तो तुम इस मकान को नरक से अच्छा समझती हो?

सविता—नहीं श्रीमतीजी, मैं कह चुकी हूँ कि मुझे स्वर्ग नहीं चाहिए। मै जानती हूँ कि यहाँ मुझे क्या करना होगा। उस काम में स्वर्ग नहीं है। फिर भी, मै चेष्टा करूँगी कि आपको और आपके ग्राहकों को खुश करूँ—मै वचन देती हूँ। और कोई उपाय मेरे लिए नहीं है।

राजरानी ने संतुष्ट होकर कहा—अच्छा, तुम यहाँ रहो।

——

३

राजरानी ने घर की निरीक्षिका दासी को बुलाकर कहा—इस लडकी को उन्नीस नम्बर के कमरे मे ले जाओ जहाँ सरयू रहती थी। हाँ, इनका नाम है केसर .

सविता ने वात काटकर कहा—लेकिन, मेरा नाम ..

राजरानी ने अपने गोरे, भरे हाथों के इशारे से सविता को आगे वोलने से रोक दिया। कहा—मै हमेशा अपनी लडकियो का नाम स्वय रखती हूँ। कपडे भी उन्हें मेरी रुचि के पहनने पडते है। चम्पा! (दासी) देख, इसके कमरे मे तौलिया वगैरह काफी रखवा दे, विछौना खूव वढ़िया लगवा दे। आज इसे कोई काम न करना होगा। नहाने के वाद आराम करेगी। डाक्टर जरूर आयेगा, पर पहले आराम जरूरी है। मै पाँच वजे के वाद आकर देख लूँगी। खाना कमरे मे ही भेज देना।

सविता, अव केसर, को यह सव वड़ा अच्छा लगा। कई तौलिया, वढ़िया विछौना, स्नान, भोजन—यह सव और कहाँ इतने अच्छे रूप मे मिलता! काम कुछ नहीं!

दासी उसे लेकर उन्नीस नम्बर के कमरे मे आई। केसर एकवारगी चौक पडी। इतना सजा हुआ और सुन्दर कमरा उसने अपने जीवन मे कभी नहीं देखा था। अकचकाकर वोल उठी—क्या यह मेरे लिए है?

दासी को यही आशङ्का थी। जिस समय राजरानी ने उसे इस लडकी को नम्बर उन्नीस मे रखने को कहा तभी उसे कुछ अच्छा नहीं लगा था। वहुत छोटी लड़कियो से वह चिढ़ती थी,

नहाने आदि से छुट्टी पाकर केसर ने सोचा, भगवान् की प्रार्थना की जाय पर तुरन्त ही खयाल आया—क्या ऐसी जगह कोई पूजा आदि करता है ? अगर भगवान् कहीं हो तो वे मेरे जैसी लड़कियों से घृणा करेंगे !

वह बिछौने पर लेट गई। अपनी माँ की मृत्यु के बाद से उसे बिछौने का इतना सुख कभी नहीं मिला था। नरम तकिया था जो उसकी कोमल गर्दन के नीचे आराम दे रहा था। वह भरनींद सो गई। जब उठी, चार कभी के बज चुके थे। उठते ही उसके मुँह से निकला—कुछ भी हो, यह जीवन स्वर्ग की तरह ही है।

इसी समय राजरानी कमरे मे आई। गौर से केसर की ओर देखते हुए कहने लगी—शरीर के अवयव तो ठीक जान पड़ते है ! स्त्रियों के पाँव का सौन्दर्य इसमे है कि उनकी जाँघें इतनी सीधी हो कि घुटने मे जो गढ़ा पड़े उसमे एक पैसा दब सके। तुम्हारी वैसी ही हैं। छाती तुम्हारी छोटी है जरूर पर आकर्षक है। प्रत्येक स्तन आधे सेब के फल की तरह हैं और कड़ा, भरा हुआ है। गले की बनावट भी ठीक है। हाँ, गले की हड्डियों को थोड़ा ढँकना होगा। और तो कोई ऐब नहीं है। देखूं! केसर, तुम देखती रहना, हमारी कली जैसी लड़कियो मे तुम फूल बनकर चमकोगी। हमारे ग्राहकों के लिए तुम एक अनूठी चीज होगी—उन ग्राहको के लिए जिन्हे हमेशा कुमारियो की चाह रहती है।

केसर चुप रही। वह राजरानी का मतलब समझ रही थी !

जान पड़ता था, कमरा लड़कियो से भरा हुआ है। दर्जनों लडकियाँ जिनमे काली, गोरी, मोटी, पतली, नाटी, लम्बी, सभी तरह की थीं और सब केसर को गौर से देख रही थीं। पर दर्जनों रही नहीं होगी, राजरानी बीस लड़कियो मे अधिक रखती ही न थी। उसमे से भी कुछ कार्यवश बाहर चली गई थीं, यद्यपि अधिकांश यही सोचकर घर रह गई थीं कि वे आज एक विचित्र चीज देखेंगी। उन्होंने सुन रक्खा था, एक बहुत ही कम आयु की लडकी यहाँ भर्ती हुई है, जो बहुत सुन्दर है, जो पुरुषों के लिए अत्यन्त आकर्षण की वस्तु है और कुमारी है। सोलह लडकियाँ वहाँ एकत्र थीं, और आश्चर्य है कि उन सोलहों में से एक भी केसर को दिल मे नहीं चाहती थी। बडे और बुजुर्ग व्यक्ति वही होते थे जिनके पास ज्यादा रुपया होता था और जो उसे मुक्त हस्त से खर्च भी करते थे। कुछ ऐसे भी होते थे जो बम्बई घूमने के इरादे से आये हैं, घर से लखपती बाप की गाढ़ी-कमाई के पैसे लेकर निकले हैं और यहाँ आकर उड़ा रहे हैं। लेकिन वे कभी-कभी आनेवाले हैं। उन पर है भरोसा नहीं किया जा सकता। यहाँ तो रोज की बात देखनी है सो, इस समय उन सोलह लड़कियो की तीखी, टेढ़ी दृष्टियाँ केसर के ऊपर गड़ी हुई थीं।

और तब हुआ यह कि देखते ही देखते कुछ लड़कियो की तीखी कटु दृष्टियाँ एकाएक मधुर और स्निग्ध हो उठीं। उन्हें अपना भूला हुआ अतीत केसर को देखकर याद आ गया

गुलाबी ने, जिसका असली नाम कुछ दूसरा ही था, धीरे-धीरे राजरानी के मकान पर, मकान मे रहनेवालो पर अपने कौशल, विद्या-बुद्धि और सुन्दरता से प्रभाव जमा लिया था। जहाँ अन्य लड़कियो को किसी सलाह की जरूरत होती वहाँ वह सलाह भी देती। उमर उसकी इस समय बत्तीस बरस के लगभग थी, पर देखने से पच्चीस-छब्बीस की जान पडती थी। तीन साल पहले वह राजरानी की शरण मे आई थी और तब से अब तक लोग उसे पच्चीस छब्बीस बरस की ही समझते आये हैं। राजरानी के यहाँ का नियम था कि अधिक से अधिक अट्ठाईस बरस की स्त्री ही उसके यहाँ रह सकती है, उसके ग्राहक यौवन और युवती की ज्यादा कद्र करते थे।

गुलाबी ने, जो यहाँ रहते-रहते अब अनुभवी हो गई थी, केसर की सकुचाती हुई मूर्ति देखी। उसे दया आई। उसने समझा कि यह अभी बिलकुल बच्ची है। पास आकर कहा—क्यो! कहाँ से आ रही हो? क्या पढ़ने-लिखने से जी ऊब गया?

केसर ने वैसे ही, सीधे-सीधे, उत्तर दे दिया—मेरा जी नरक से ऊब गया था। हालाँकि उस नरक मे एक ही आदमी का निवास था, पर नरक तो वह था ही! मुझे उस नरक से छुटकारा चाहिए था, सो मै यहाँ चली आई। कल दिन भर मैंने आराम किया है, बड़ा मजा आया।

गुलाबी—हम यह जानती है। खबरे तो हमारे यहाँ ऐसे फैलती हैं जैसे रेगिस्तान मे ढोल की आवाज फैलती है। अगर तुमने यहाँ हमारे ग्राहको पर नजर नहीं डाली तो यह विश्वास रक्खो, तुम्हे जितने चाहोगी पुरुष मिल जायँगे और अगर तुम हमारे मन मुताबिक चली, तो हम तुम्हे सहायता ही पहुँचायेंगी।

केसर—मै तुम लोगो के मन मुताबिक चलने की कोशिश करूँगी।

सब लड़कियो ने हँसकर इस बात का स्वागत किया। गुलाबी ने पूछा—और तुम हम लोगो को क्या समझती हो ?

केसर ने जवाब दिया—मेरी समझ मे, आप सभी बहुत सुन्दर हैं।

इस बातचीत के सिलसिले मे, घनिष्ठता अधिक बढ़ जाने पर, गुलाबी और अन्य लडकियो ने केसर को अपने-अपने प्रेमियो के बारे मे लम्बी-चौड़ी कहानियाँ सुनाई। सबको लखपती और करोड़पती ही बतलाया। किन्तु, आश्चर्य है कि, इन कथाओ से केसर तनिक भी उत्तेजित न हुई। उसके पिछले जीवन के अनुभवो ने उसके मस्तिष्क मे यह बात जमने ही नहीं दी कि केवल रुपयों का लालच छोडकर पुरुषो मे और भी किसी कारण विवाह किया जा सकता है। वह यह भी जानती थी कि यदि तमीज और तरकीब मालूम हो तो राजरानी के मकान मे रुपये आसानी से कमाये जा सकते हैं। राजरानी के मकान मे रहने के लिए किस 'तमीज' और 'हिकमत' की जरूरत है, यह केसर धीरे-धीरे समझने लगी थी और तभी, अपने कोमल और अछूते हृदय को कठोर कर, आगे आनेवाली घटनाओ के लिए उसने अपने को तैयार कर लिया था। पर उसे भ्रम हुआ। यहाँ आने के पहले ही दिन वह समझ गई कि बात को वह पूरी तरह नहीं हृदयङ्गम कर पाई है। यहाँ जीवन व्यतीत करने के लिए जिस तरह के अध्यवसाय और लगन, जिस तरह के मानसिक वातावरण और जिस विचारधारा की आवश्यकता चाहिए, वह उसमें नहीं है। फिर भी, वह यहाँ अब आ ही गई है। यहाँ न आती तब भी, बाहर तो और कोई रास्ता उसके लिए खुला नहीं था। यहाँ, कम से कम, राजरानी तो उदारता से बर्ताव करती है—अन्य लड़कियाँ भी, कम या अधिक उदार ही हैं। अन्य लड़कियो की अपेक्षा, उसे कुछ अधिक यत्न करना भी नहीं पड़ता। इतना अवश्य है कि राजरानी की भविष्यद्वाणी पूरी हो रही है। उसने कहा था—तुम हमारे

ग्राहकों के लिए एक अजीब चीज होगी। सो ही तो वह देख रही है। -युवक, वृद्ध, सभी उस पर बेतरह लट्टू हैं। उसके बालसुलभ कोमल सौन्दर्य ने और केशो की चमक ने सबके दिलों पर एक-सा अधिकार कर लिया है। उसकी मॉग चारो तरफ है। यह भी वह देख सकती थी कि भीतर ही भीतर अपने इस विकट और अवश्यम्भावी आकर्षण के कारण, वह राजरानी की अन्य पालिता स्त्रियो के द्वेष और घृणा की केन्द्र हो रही है। यह सच है कि राजरानी की कृपापात्र और प्रिय होने के कारण उससे स्त्रियाँ स्पष्ट कुछ कहती नही, पर उनके मन मे विद्वेष की आग तो सुलग ही रही है। कभी-कभी उनकी मुखाकृतियों से यह भाव स्पष्ट भी हो जाता है।

केसर के मन मे यही बात आई कि एक महादुर्गन्धिमय भयङ्कर नरक से निकलकर वह दूसरे, कुछ परिष्कृत और कम त्रासदायक नरक में आ पड़ी है। यह उसका तीसरा नरक-प्रवास है। पहला था चाची का निर्दयतापूर्ण व्यवहार और दूकानो की नौकरी, जहाँ रात दिन लोगो की उत्सुक और कामुक दृष्टियो का सामना करना पड़ता था, दूसरा उस युवक के साथ रहने का ढोंग और तीसरा यह। इन तीनो मे से किसी नरक के साथ परिचय प्राप्त करने की इच्छा तो उसे नहीं ही थी। हॉ, यह तीसरा नरक उन दोनो से कहीं अच्छा है। सड़को पर मारी-मारी फिरने से कहीं सुखद है। जितना ही वह यहॉ रहेगी उतना ही यहॉ के अब तक के अनभ्यस्त जीवन से परिचित होती जायगी। यह ठीक है कि लाचार, निराश और दुखी स्त्रियो के लिए नदी का जल हमेशा स्वागत को प्रस्तुत रहता है। उसने भी पहले दिन राजरानी से यही कहा था कि यदि आपने मुझे नहीं अपनाया तो मैं डूब मरूँगी, पर डूब मरने का साहस वह अभी नहीं बटोर सकी है। कहने को तो बहुत से व्यक्ति कहा करते है कि वे आत्महत्या कर लेंगे, पर कर कितने पाते हैं, प्रश्न यह है।

मृत्यु की भावना से ही केसर काँप उठती—वह उसके लिए एक भयङ्कर वस्तु थी। फिर, नदी मे डूबकर मरना! कौन जानता है, आगे क्या हो। और यही कौन कह सकता है कि आगे कुछ होगा हो—एक भयङ्कर और अथाह शून्य के अतिरिक्त कौन जाने कुछ न हो। यही होगा कि पानी की एक बूँद की भाँति मिट गये, दुनिया और सृष्टि का क्रम ज्यों का त्यों चलता रहेगा। अगर कभी ऐसा मौका आवे, यदि कभी नदी के अकेले तीर पर डूब मरने की प्रतीक्षा मे खड़े रहना पड़े तो शायद वह जल्दी से दौड़कर फिर राजरानी के कोलाहलपूर्ण, आलोकमय विलासभवन मे ही छिप रहेगी!

पर, उसके सिवा और लड़कियाँ भी तो यहाँ हैं—वे क्यो कुछ नहीं सोचतीं? वे क्यो सुखी, परितृप्त और सन्तुष्ट जान पड़ती हैं। क्यो निश्चिन्त होकर हँसती खेलती है, अपने प्रेमियो पर अपनी विजयगाथा को गर्व के साथ कहते नहीं अघातीं? वह क्यो नहीं अपने अनगिनत प्रेमियो पर गर्व कर पाती? वह इस तरह की बातें सुनना भी नहीं पसन्द करती? अरे, यह सब क्यो?

राजरानी के भवन की पुरानी लड़कियाँ केसर से डाह रखतं वह अधिक धन कमा रही थी। उसे किसी चीज की आवश्यक अधिक नहीं होती—केवल जवाहरात की भेंट ही वह अपने चाह वालों से स्वीकार कर लेती। इस मकान में आने के छः-सा महीने के अन्दर ही उसके पास सत्रह ब्रेसलेट, हीरे की चूड़िय आदि हो गई थीं। कितने ही हार, इयररिङ्ग, अँगूठियाँ, नकते उसे उपहार में मिले थे। उसका भाग्य!

पुरुष! पुरुष! क्या इस जीवन से छुटकारा पाने के लि वह [illegible] का मुँह देखकर किसी पुरुष से विवाह करे! उस सोचा—नहीं, मैं मर्दों से घृणा करती हूँ।

वह एक रात को...

५

केसर, इधर कायदे से नाचना सीख रही थी।

यों तो वह पहले से ही कुछ न कुछ नाचना जानती थी—आज की प्रत्येक लड़की कुछ न कुछ हाथ-पाँव चलाना जानती है। माँ जब जीवित थी तब वह सड़क पर लड़कियों के साथ—अपनी बाल-सहेलियों के साथ—नाचती फिरती थी। पर इस नाच और उस नाच में जमीन-आसमान का फर्क था।

राजरानी इस बात का हमेशा खयाल रखती थी कि उसकी लडकियो मे कौन किस 'टाइप' की है—कौन किस योग्य है। बहुत सम्भव है, जैसा केसर स्वयं महसूस करती थी, वह जानती रही हो कि केसर किसी योग्य नहीं है, किन्तु वह भीतर ही भीतर केसर मे बहुत दिलचस्पी रखती। अपनी स्वर्गीय और यौवनमय मधुरता के कारण केसर ने सब लडकियो के ऊपर स्थान प्राप्त कर लिया था। मालूम होता था, वह एक प्रतिमा सी है। हाँ, उस प्रतिमा की आँखे जरूर एक गम्भीर व्यथा के भाव से भरी रहतीं।

राजरानी का व्यापार भावुकता की नींव पर नहीं चलता था, यद्यपि वह केसर को और लड़कियो की अपेक्षा अधिक मानती थी। उसे अपने व्यापार को भी देखना था, व्यापार की सफलता को भी सँभालना था। यदि कोई ऐसी लड़की हो जिसके विषय मे पुरुष अधिक सतर्क हो, इधर-उधर कानाफूसी करें, तो उससे व्यापार मे अधिक सफलता की आशा है। केसर मे राजरानी ये सब बाते पाती थी, अगर सही-सही ट्रेनिङ्ग उसे मिले तो वह एक सफल आय का स्रोत हो सकती है।

राजरानी जब अपने यौवनकाल में थी, तब एक नर्तकी—मिस मालती—ने काफी धूम मचा रक्खी थी। उसने स्वयं कई नाच निकाले थे, जिन्हे समय-समय पर प्रदर्शित कर वह लोगो को आकर्षित करती थी। राजरानी को यह स्मरण था और वह समय-असमय केसर से मालती और उसके नृत्यो की बातचीत किया करती। उसका उद्देश्य नृत्य मे केसर की दिलचस्पी पैदा करना था। इसी उद्देश्य को सामने रखकर उसने केसर को एक पुराने उस्ताद से, जिनके दिन आजकल बिगडे हुए थे, कई चलते और तेज नृत्यो की शिक्षा दिलाई। एक कीमती ग्रामोफोन भी खरीदा गया जिसके रिकार्डों के नाच की गत पर केसर नृत्य करती, कभी-कभी यो भी, बिना किसी बाहरी सहायता के, स्वयं गुनगुनाकर वह नाचती रहती। थोडे ही महीनो मे उस्ताद द्वारा उसने नृत्य की सारी शिक्षा ग्रहण कर ली—राजरानी इसी दिन की तो धडकते हृदय से प्रतीक्षा कर रही थी।

उन्ही दिनो एक लखपती बम्बई आया। या तो वह अभी कुँआरा था या पत्नी द्वारा त्यागा हुआ था। इससे राजरानी को मतलब भी नहीं था। वह कुछ भी हो, राजरानी ने अपने मित्र को, जो उस लखपती—राजकिशोर—से मिल चुका था, सलाह दी कि वह किसी तरह उन्हे इस बात पर राजी करे कि राजरानी के विलास-भवन मे एक दिन पुरुषो की मजलिस करें। राजरानी का आशय था कि वह उस समय अपना शीशोवाला कमरा, जिसमे नीले शीशे की छत, सुनहले सितारोवाली, और काले शीशे की जमीन, जिसके नीचे से रगबिरगी बिजलियाँ चमकती रहे, उनके स्वागत के लिए खोले और इस प्रकार उस व्यक्ति से काफी धन लूट ले। ऐसे ही लखपतियों के आगमन के समय वह कमरा खोला जाता था और भवन की सीमो युवतियाँ बिलकुल नंगी होकर उसमे नाचती थी। उस समय का खास नाच था—कुमारी परियो का

मालूम होता है, भगवान् ने शायद उन्हें ऐसा ही बनाया है, तभी सृष्टि के आरम्भ से ही वे ऐसे हैं, बदले नहीं। यह स्वाभाविक तथा प्राकृतिक है। फिर प्रकृति से क्यों लड़ा जाय? यह तो व्यर्थ ही होगा। इससे हमें रुपया तो मिल जाता है। वास्तविकता यही है कि पुरुष स्त्रियों से अच्छे होते हैं। बर्बर और जंगली होना, खास कर स्त्रियों के मामले में, उनके प्रेम और उनके शरीरों से मनमाना खेल करने के मामले में, उनका स्वभाव है और स्त्रियों को उन्हें उनके इस स्वभाव के लिए क्षमा देनी होगी। पर इस समय मैंने इस बहस के लिए तुम्हें नहीं बुलाया। तुमने इधर नाच आदि में जो असाधारण उन्नति की है उसके लिए तुम्हें बधाई देने को बुलाया है और यह कहने को बुलाया है कि आज तुम्हें भी उस अठपहलू शीशे के कमरे में नाचना होगा। आज यहाँ एक पार्टी है। तुम्हें अपना ही नाच नाचना होगा। अब तो खुश हो?

केसर—तो मैं अपना कपड़ा पहन रह सकती हूँ न?

राजरानी—तुम भी उसी आवरण में रहोगी जिसमें सब लड़कियाँ होंगी, यानी बिलकुल नङ्गी रहना होगा।

केसर का चेहरा शर्म से लाल हो आया। राजरानी ने उसे देखा, पर समझ नहीं सकी कि यह लाली गुस्से की थी या शर्म की। केसर ने तब धीरे से कहा—मुझे माफ करें। मैं आपका कहना न कर सकूँगी।

राजरानी—मैं इस मकान में कभी कुछ 'कहती' नहीं, हुक्म दिया करती हूँ।

केसर—मैंने सदा इस बात की चेष्टा की है कि आपको खुश रक्खूँ। आप चाहें मुझे निकाल बाहर करें, आपका अधिकार है। पर यह बात मुझसे न होगा।

केसर को निकाल बाहर करने का विचार राजरानी नहीं कर सकती थी। उसने कहा—तुम बेवकूफ हो।

केसर—हो सकता है; जन्म की बात छूट थोड़े सकती है।

राजरानी—तुम ऐसे समय नाचने से अस्वीकार कर रही हो जब एक लखपती से तुम्हारे बारे मे सब कुछ कहा जा चुका है और वह अपने मित्रो को लेकर आवेगा, तुमसे मिलना चाहता है। सोचो तो, क्या यह ठीक होगा ?

केसर—मै नाचने से कहाँ अस्वीकार कर रही हूँ ? केवल यही कह रही हूँ कि बिलकुल नङ्गी होकर नाचते मुझसे न बनेगा। वह नाच सुन्दर हो सकता है, चारों तरफ लगे शीशो मे नङ्गा शरीर झलकेगा, बदन के हर हिस्से पर रङ्ग-बिरङ्गी रोशनियाँ पड़ती रहेगी, सब कुछ होगा पर मुझसे यह न होगा।

राजरानी—जान पड़ता है, तुम्हे अपने ऊपर बड़ा घमण्ड हो गया है।

केसर—नहीं, घमण्ड की बात नहीं। मैंने आपसे कह दिया है, आपके कहते ही मैं चली जाऊँगी। सब कुछ छोड़कर चली जाऊँगी। पहले भी कई बार मैंने जाने की सोची है। जान पडता है कि आपके यहाँ का जीवन मुझसे झिलेगा नहीं। लेकिन मुझमे साहस का अभाव है और बाहर की जिन्दगी से मुझे न जाने क्यों डर लगता है, तभी मै रुकी हुई हूँ।

राजरानी फिर हँसी, कहा—तुमने कहा था, तुम यहाँ नरक से छुटकारा पाने के लिए आई हो—उस नरक से जहाँ एक दरिद्र युवक के साथ तुम्हे एक छोटे कमरे मे रहना पड़ता था और जो तुम्हें हर वक्त निकाल बाहर करना चाहता था।

केसर ने दृढ़ता से कहा—मैं अब समझ गई हूँ कि स्त्रियों को जिन्दगी भर एक न एक तरह के नरक में रहना ही पड़ता है। नरक मे रहने के ही लिए वे बनी हैं।

राजरानी—तुम्हारा तो कहीं भी निबाह होना कठिन है।

केसर—हो सकता है, मैं कुछ अजीब सी हूँ भी। और लड़कियाँ वैसी नहीं होतीं। जिस परिस्थिति में वे रहती हैं, थोड़े दिनो

बाद उसकी अभ्यस्त हो जाती हैं। व्याह के बाद कुछ लड़कियाँ अपने राक्षस जैसे पतियों के साथ भी निभा लेती हैं, मैं तो शायद लात मार देती। सम्भवतः मैंने यह स्वभाव अपनी माता या पिता से पाया है। अच्छा, क्या मैं जा सकती हूँ? मैं केवल अपनी चीजें ही लेकर जाऊँगी, आपका दिया हुआ कोई सामान साथ न ले जाऊँगी।

राजरानी ने अपना कुतूहल दबाते हुए पूछा—कहाँ जाओगी?

केसर—मैं नहीं जानती।

कहने को तो 'मैं नहीं जानती' कह गई, पर उसके मन में अब भी सुन्दर और स्वच्छ जीवन के अरमान बाकी थे। वह अपने ऐसे जीवन की कल्पना करती थी जहाँ सुन्दर मकान हो, भले सोसायटी हो, साफ-सुथरा जीवन हो। पर उसने यह सब कुछ नहीं कहा, केवल कहा—मैं नहीं जानती।

राजरानी—सुनो केसर, अपने घमण्ड और हुक्मउदूली के कारण तुम निकाल दी जाने लायक हो, पर तुम मेरी आश्रित हो, मैंने तुम्हें उस समय और उस हालत में शरण दी थी जब मेरे य[illegible] की सब लड़कियाँ, मेरी नौकरानी तक तुम्हारे विरुद्ध थीं। [illegible] इतने दिनों तुम्हें लिखा-पढ़ाकर आदमी बनाया है। मैं [illegible] चाहती कि तुम्हारे चले जाने से सब मुझसे कहें—'मैं पहले मना कर रही थी, मैं जानती थी कि वह एक न एक दिन भाग[illegible] आपको धोखा देगी।' मैं यह सब नहीं सुनना चाहती। [illegible] अलावा एक बात और है। नङ्गी होकर नाचने के विरुद्ध तुम[illegible] जो विचार है वह तुम्हारे ही उपयुक्त है। इस बार मैं तुम्हें [illegible] पहले ही बतला दूँगी, निःसन्देह यह तुम्हारे ही हित के [illegible] होगा। फिर भी तुम कपड़े पहने नाच सकती हो। लेकि[illegible] [illegible] कपड़े न पहनने पाओगी, मैं जार्जट, काले जार्जट के [illegible] कपड़ा बनवा दूँगी जो तुम्हारे नृत्य की प्रत्येक गति के [illegible] रहेगा। तुम सबके बीच में रहोगी।

इस बार केसर ने, राजरानी की कूटनीति भरी बातो को न समझते हुए, कहा—धन्यवाद ! मैं भरसक अच्छा नृत्य दिखाने की चेष्टा करूँगी।

राजकिशोर लखपती बहुत गम्भीर आदमी था—कम से कम दिखता ऐसा ही था। लम्बा, दुबला-पतला सा था। अपने शहर मे, यदि कोई राजरानी जैसा अड्डा होता भी, तो उसकी हिम्मत वहाँ जाने की न पड़ती। यहाँ वह स्वतंत्र था, कोई देखने-वाला नहीं था। उसने बम्बई मे राजरानी के विलासभवन की चर्चा सुन रक्खी थी। उसके अठपहलू शीशे के कमरे और कुमारी परियो के नाच की बात भी वह सुन चुका था। स्वयं तो उसे विशेष प्रवृत्ति इस जलसे मे शरीक होने की नही थी किन्तु उसे कुछ मित्रो का मन रखना था। साथ ही वह बम्बई मे ही रहनेवाले, अपनी बहन के लडके, आनन्द को इस काम से नीचा भी दिखाना चाहता था। आनन्द बम्बई मे ही रहकर, किताबें लिखकर और पत्रकार की हैसियत से, अपनी जीविका उपार्जन करता था और राजकिशोर की बहन का लड़का था। शुरू मे राजकिशोर ने उसे रुपयो से मदद पहुँचानी चाही थी पर आनन्द ने इन्कार कर दिया था। इसका कारण था कि पति द्वारा ठुकराये जाने पर जब आनन्द की माँ अपने भाई राजकिशोर के पास सहायता और आश्रय के लिए गई तब उसने उसे मदद नहीं दी। इसी की जलन आनन्द के मन मे थी। स्त्रियो के विषय मे आनन्द के विचार बहुत ऊँचे थे, और राजरानी के विलासभवन जैसी सस्थाओ और गुप्त अड्डो को वह घृणा की दृष्टि से देखता था। तभी राजकिशोर ने उसे चिढ़ाने की नीयत से और भी इस जलसे का आयोजन किया था। जब आनन्द के पास इस जलसे का निमन्त्रण पहुँचा तो एक बार तो उसके जी मे आया कि लिख दे कि नही आ सकता। फिर सोचा, यदि मैं न गया तो राजकिशोर

को सबसे यह कहने का अवसर मिल जायगा कि आनन्द मे—जो इतनी क्रान्तिकारी पुस्तको का लिखनेवाला है और जो 'रियलिस्ट' (यथार्थवादी) होने का दम भरता है—स्वयं जरा भी क्रान्ति नहीं है—साहस नहीं है। यह बात नहीं कि आनन्द को इसकी विशेष चिन्ता हो कि राजकिशोर उसके या उसकी पुस्तको के बारे मे क्या कहते हैं, पर उसने सोचा कि आज राजरानी के विलासभवन मे एकत्र व्यक्ति और उनकी हरकते लिखने की उसे काफी सामग्री दे सकते हैं—प्रत्येक लेखक को ऐसे दृश्य देखने चाहिएँ। सो, आनन्द भी लखपती राजकिशोर की पार्टी मे गया।

शीशेवाले कमरे का नाच, निःसन्देह एक आश्चर्यजनक और सुन्दर दृश्य था। सभी रस ले रहे थे। आनन्द ने भी, आश्चर्य है, उन लड़कियो को पसन्द किया। इतना वह जरूर पढ सका कि अधिकांश लड़कियाँ दिल से इस नग्न-शरीर-प्रदर्शन को नहीं पसन्द कर रही हैं और उन्हें बरबस ऐसा करना पड़ रहा है। नाच खतम हो जाने पर सब लड़कियाँ शीशो से लगकर खड़ी हो गई, जिससे उनकी नगी पीठें साफ झलक उठीं। अब राजरानी उठीं, कहा—अब कुमुदिनी-नृत्य होगा, जो एक पर्देदार लड़की नाचेगी।

धीरे-धीरे, सगीत की गति पर, काले जार्जेट के तारो से बने कपडे मे, हाथ के कुमुदिनी के फूलो को डुलाते हुए केसर आई और नृत्य करने लगी। तारो मे से उसके गोरे-गोरे पाँव जाँघो तक ऐसे झलकने लगे जैसे काले पानी मे कोई मूर्ति हो। सबकी आँखे उत्सुकता मे उस सौन्दर्य यौवन की मूर्ति पर गडी हुई थीं सबकी भूखी दृष्टियाँ उसका घूँघट फाड़कर मुख तक पहुँचना चाहती थीं। इस कुतूहल और व्यग्रता की स्थिति मे उसने अपना नृत्य समाप्त किया। चारों ओर से 'वाह-वाह', 'वन्स मोर' की ध्वनियाँ आने लगीं, पर केसर ने भाग जाना चाहा। वह च

पर बीच मे ही राजकिशोर ने, उतावले होकर उसका हाथ पकड़ लिया। यह काम इतनी जल्दी मे हुआ कि बिल्ली जैसी तत्परता रखते हुए भी केसर लाचार हो गई। वह कॉप गई। इधर राजकिशोर ने, जल्दी से, मित्रो की ओर मुँह करके, केसर की कमर मे हाथ लपेट, उसका घूँघट अलग कर दिया! एक क्षण के लिए तो वह स्थिर हो रही, फिर हाथ के फूलो के डठल से राजकिशोर के मुँह पर इतनी जोर से मारा कि फूल टूटकर गिर पड़े और अपने को उनके पाश से अलग कर लिया। राजकिशोर ने फिर उसे पकड़ लिया होता, पर तुरन्त ही आनन्द ने उठकर उनका कन्धा पकड़ लिया। कहा—अजी! यह आप क्या कर रहे है?

इस एक वाक्य ने ही राजकिशोर की वासना को समाप्त कर दिया, खास कर आनन्द के सामने ही वह इतने कामोत्तेजित हो उठे, इस विचार से उन्हे बड़ी लज्जा हुई। केसर एक क्षण चुप, स्थिर खड़ी रही और पलभर ही उसने आनन्द के मुख की ओर देखा। आह, इसी के लिए तो वह स्वप्न देखा करती थी। भलमनसाहत और सभ्यता का उस मुख पर राज्य था।

वह चली गई पर एक दर्द, कलेजे की कसक लेती गई। पल भर का दृष्टि-विनिमय, वह फिर उसे देखना भी नहीं चाहती, पर इस याद को सदा अपने पास रखना चाहती है। वह वास्तव में 'पुरुष' था—उसका आदर्श! उसने सोचा—मैं जीवन भर इस दृष्टि को याद रक्खूँगी। पर यह नहीं चाहती कि वह भी मुझे याद रक्खें। शायद उन्होने भली भॉति मुझे देखा भी नहीं। यही ठीक है, यही चाहिए।

उसी दिन से केसर अपनी आय में से कुछ न कुछ बचाने लगी। मन ही मन उसने कुछ निश्चय किया था और, जान पड़ता है, उसी निश्चय को पूरा करने के लिए वह कंजूस बन गई। जवाहरात भी वह ख़ूब बटोरने लगी। रह-रहकर वह यही सोचती कि उसे एक न एक दिन भले आदमियों के बीच रहना है, उनसे मिलना है, उनसे ही मिलकर सभ्य और प्रतिष्ठित जीवन बिताना है। कई महीने बीत गये, एक साल से ज़्यादा उसे यहाँ रहते हो गया। अब वह सत्रह-अठारह वर्ष के बीच थी और यद्यपि इस तीसरे नरक में उसने दयनीय जीवन बिताया था, फिर भी पहले की तरह ही उसका सौन्दर्य और यौवन सुरक्षित था।

भवन की अन्य लड़कियाँ अपने लिए तरह-तरह के वस्त्राभूषण ख़रीदती रहतीं पर केसर इस मामले में उदासीन थी—जहाँ तक हो सकता, कम से कम वस्त्र वह अपने लिए ख़रीदती और वह भी अत्यन्त सादे और कम क़ीमत के। बहुत सीधे-सादे ढङ्ग से वह रहती थी। इधर एक आदत उसमें और आ गई थी। रोज़-रोज़ अपने बचाये हुए रुपए और जवाहरात, जिन्हें वह आलमारी के एक ड्राअर में छिपाकर रखते हुए थी, निकालकर गिनती रहती और जैसे मन ही मन किसी उद्देश्य को लक्ष्य कर ख़ुश होती रहती। वह लक्ष्य या वह अन्तर्व्यापिनी भावना क्या थी, यह कोई नहीं जाने, पर यह तय था कि उस भावना से उस युवक से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था जिसे आज से लगभग एक साल पहले उसने उस [illegible] [illegible] के नृत्य के समय हमारत भरी

निगाहो से देखा था और अब तक मन ही मन जिसकी आराधना करती रही है। उस घटना को लेकर कोई निश्चित उद्देश्य मन में स्थिर करना, वह समझती थी कि, भूल है और तभी उसे भूलने की चेष्टा करती रहती थी। तब वह ख़ुश होती थी केवल अपने ही भावी जीवन को लेकर, यही जान पड़ता है। और जब भीतर ही भीतर वह एक निश्चय पर पहुँच गई तब एक दिन उसने राजरानी से कहा—मुझे दुःख है, बहुत समझाने पर भी मेरा मन आपके यहाँ के जीवन के लिए तैयार नहीं होता। न जाने क्यो भीतर ही भीतर विद्रोह सा होता है। मैं ऊब गई हूँ। साथ ही, जान पड़ता है, मै कुछ बीमार भी रहती हूँ। मुझे थायसिस का सन्देह हो रहा है।

यह सब कहने मे केसर को बहुत कष्ट हुआ—बीमारी की बात सफेद झूठ थी और केसर की झूठ बोलने की आदत नहीं थी। परिस्थितियो से लाचार थी। सुनकर राजरानी ने कहा—हे भगवन्, यह क्या? हॉ, हॉ, मुझे तुम्हारी बातो पर विश्वास नही होता, हँसी आती है। तुम बड़ी कमजोर मिजाज की हो, यही बात है। बीमारी कैसो? जैसी तुम पहले थीं, वैसी ही तो हो। हाँ, थोड़ी पीली जरूर पड़ गई हो।

केसर—थायसिस के सभी रोगी ऊपर से अच्छे ही दिखते हैं, मैंने ऐसा बहुत सुना है। मेरी माँ भी थायसिस से ही मरी थी। सम्भव है, अभी उपाय होने पर मैं अच्छी भी हो जाऊँ, लेकिन यह यहाॅ रहकर तो हो नहीं सकता। फिर, एक बात और है। थायसिस के रोगी को, जहाँ तक हो सके, सबसे अलग रहना चाहिए। या तो अलग मकान मे या सैनिटोरियम आदि मे, पहाड़ों पर। मुझे बीमारी है, यह आप अपने डाक्टर से पूछ सकती हैं, मैंने उन्हे दिखाया भी था।

राजरानी का विलासभवन जैसा था, वैसी संस्थाओ में डाक्टर की विज़िट जरूरी होती है। सभी प्रायवेट हाउसो के

संचालक इस बात के लिए सतर्क रहते हैं कि उनकी लड़कियों को कोई बीमारी न होने पावे, इसमें उनकी रोजी पर आ बनेगी। वेश्याएँ भी, जो स्वतन्त्र रूप से यह तन का व्यवसाय करती हैं, अपने स्वास्थ्य का सदैव ध्यान रखती हैं और डाक्टरों से समय समय पर अपनी परीक्षा कराया करती हैं। प्राय. एक न एक डाक्टर वैद्य को वे चुन लेती हैं और उसी के द्वारा हमेशा ये परीक्षाएँ होती हैं। राजरानी के मकान के डाक्टर का नाम था डाक्टर रामचन्द्र। केसर ने भी यहाँ रहकर धूर्तता करनी सीखी थी। अपने को बीमार का सार्टिफिकेट दिलाने के लिए डाक्टर रामचन्द्र को उसने काफी घूस दी थी। उसने कहा—मुझे यहाँ से जाना ही होगा, डाक्टर की भी यही राय है।

राजरानी ने कुछ सोचा, फिर कहा—कहाँ? कहाँ जाओगी?

केसर—यह मैंने अभी स्थिर नहीं किया है। शायद पहाड़ पर जाऊँ।

राजरानी को उसकी बातों पर विश्वास होने लगा, बोली—तुम ज़रूर अच्छी हो जाओगी। कुछ महीनों बाद, अच्छी हो जाने पर तो यहाँ फिर आ जाओगी?

केसर—हो सकता है कि अच्छी हो जाऊँ।

राजरानी—बोलो, फिर आओगी न? मैं विश्वास करूँ कि आओगी?

केसर—ज़रूर, ज़रूर विश्वास कीजिए। यदि अच्छी हो गई तो अवश्य आऊँगी, और जाऊँगी ही कहाँ? लेकिन, अभी तो मुझे जल्द से जल्द जाने की आज्ञा दीजिए। आप नहीं समझतीं मैं कितनी बीमार हूँ। जाने के पहले, मैं यहाँ के सब लोगों को धन्यवाद भी करना चाहती हूँ—आप लोगों ने इतने दिनों मेरे साथ जो सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया है, उसके लिए।

यह सब तय हो गया, पार्टी भी। राजरानी ने पहाड़ पर रहकर दवा कराने का आधा व्यय केसर को देना चाहा, पर उसने विनम्रता से अस्वीकार कर दिया। उसने बताया कि इस काम के लिए मैंने काफी धन जमा कर लिया है।

राजरानी—क्या दावत मे पुरुष भी होगे ?

केसर—नही, नहीं—उन्हे मै घृणा करती हूँ। मै अपनी दावत नष्ट नही करना चाहती।

७

राजरानी के विलासभवन के पिंजड़े में बसनेवाली कोई 'चिड़िया'—कोई लड़की—उस दिन की, केसर की दी हुई, दावत को नहीं भूल सकती। शाम होने के कुछ पहले ही—ग्राहकों के आने के पहले—यह दावत हुई थी; क्योंकि राजरानी अपना शाम का वक्त बरबाद नहीं करना चाहती। उधर लड़कियाँ खाने-पीने में लगी रहीं और इधर कोई ग्राहक वापस चला गया तो! दावत के साथ ही, इक्कीस छोटे-छोटे पार्सल भी वहाँ रक्खे हुए थे—बीस लड़कियों के लिए और एक स्वयं राजरानी के लिए। सबमें केसर की एक-एक छोटी फोटो और एक छोटी या बड़ी उपहार-सामग्री थी। सबने केसर को इसके लिए धन्यवाद और बधाई दी। राजरानी तो इतनी अधिक प्रसन्न हुई कि जिसका ठिकाना नहीं। वह इस समय बिलकुल बच्चों जैसा बर्ताव कर रही थी। उन छोटी और युवतियों के साथ मिलकर वह भी, इस समय, अपनी आयु के विरुद्ध, सहज सरल युवती बनी हुई थी। अपना उपहार पाकर वह, ताली पीटकर, बोल उठी—मैं कहती हूँ केसर, तुम एक दिन रानी बनोगी। देख लेना। तुम अच्छी होकर लौटोगी यहीं इसी मकान में, तुम्हें एक दिन अपने मन का राजा मिलेगा जो तुमसे विवाह करेगा। आह! वह दिन कैसा होगा!

केसर स्वयं नहीं जानती, वह दिन कैसा होगा, पर उसने ऐसा भाव बनाया जैसे बड़ी उत्सुकता से यह सब सुन रही हो और प्रसन्न हो रही हो। उसके मुख पर कोई विशेष भाव-परिवर्तन नहीं हुआ। राजरानी ने कई बार मन ही मन सोचा था

ऐसा तो नहीं है कि केसर को कोई धनी युवक प्रेमी यहाँ मिल गया हो और वही उसे यहाँ से भाग चलने को कह रहा हो! विलास और वैभव को त्याग कर जाने के लिए, राजरानी समझती थी कि, एक औरत को यही प्रलोभन बढ़ावा दे सकता है, और तभी वह केसर और उसके ग्राहकों पर कड़ी नज़र रखने लगी थी। पर, केसर ने, अपनी थायसिस की बीमारीवाली बात पक्की करने के लिए कभी-कभी खाँसना भी शुरू कर दिया था, और राजरानी यह भी देखती थी कि वह किसी विशेष व्यक्ति की ओर आकर्षित नहीं है। तब उसे, अन्त मे, बीमारीवाली बात सच माननी ही पड़ी। एक कारण और हुआ। केसर ने अपने लिए नैनीताल के एक होटल मे एक कमरा भी रिज़र्व करा लिया और जब होटल के मैनेजर का पत्र राजरानी ने देख लिया तब उसे बीमारी की बात पर पक्का विश्वास हो गया। केसर ने विश्वास दिलाया कि वह नैनीताल मे पूर्ण विश्राम करेगी। अपना सब कीमती सामान उसने कायदे से बाँध-बूँधकर अपने कमरे में ही छोड़ दिया और राजरानी से वचन लिया कि लौटने पर यही कमरा उसे मिलेगा। (काश, राजरानी समझ सकती कि केसर उस कमरे को किस घृणा की दृष्टि से देखती है।) और राजरानी किसी और लडकी को केसर का स्थान न लेने देगी—जब तक कि एकदम अनिवार्य न हो उठे।

राजरानी को केसर की इन झूठी और धूर्तता भरी बातो से पूरा विश्वास हो गया कि उसे धोखा नहीं दिया जा रहा है। उसने केसर के सामान के साथ, कुछ खाने-पीने की चीजें, ऐसे उपन्यास जिनसे एक बीमार का जी बहल सके, कुछ ताजे फूल और फल वगैरह अपनी ओर से रख दिये। इस तरह केसर, झूठ के आवरण मे, अपनी रक्षा के लिए राजरानी के विलास-भवन से बाहर हुई। पर कहीं से भाग निकलना ही वहाँ की परिस्थिति से

परित्राण पाने का उपाय नहीं होता। केसर के जीवन में यह पहली अकेली रेल की यात्रा थी। बिलकुल बच्चे की तरह वह रास्ते के भागते हुए दृश्य, हर स्टेशन पर उतरने-चढ़नेवाले यात्रियों का समूह और अपने साथी यात्रियों को देख रही थी—यह नहीं चाहती थी कि उसे कोई देखे। क्या करना होगा, यह उसने मन ही मन तय कर लिया था। हमेशा के लिए गायब हो जाने का उसका इरादा था। केसर नाम की कोई युवती अब ढूँढ़े न मिलेगी। यात्रा के अन्त तक जाने के बजाय वह बीच के ही एक स्टेशन पर उतर गई। एक हैंडबैग के अतिरिक्त सारा सामान भी उसने गाड़ी में ही छोड़ दिया। उसका वहाँ उतरना एक साधारण बात थी। कई व्यक्ति और उतर-चढ़ रहे थे। बैग में उसके जवाहरात और नकद रुपए थे। इतने से काफी दिनों तक उसका काम चल जायगा। जब यह सब समाप्त हो जायगा तब तक कोई न कोई नया रास्ता वह निकाल लेगी। या वह मर तो सकती है। मौत से उसे डर लगता है, यह सही है पर इसके सिवाय और कोई उपाय जब न रह जायगा तब इसके लिए तैयार होना ही होगा।

उसे कोई सवारी करके जाने का भी साहस नहीं हो रहा था क्या जाने कोई पहचान ले। कदम-कदम पर तो यह डर लगा हुआ था कि शायद राजरानी ने ही पीछे जासूस लगा दिये हों वह पैदल ही चली। चलते-चलते एक साधारण, पर साफ-सुथरे होटल में पहुँची। इतनी जल्दी वह चल रही थी कि यह देखने का भी उसे अवकाश नहीं था कि शहर कैसा है, क्या है। [illegible] सोचा कि चित्त की अवस्था ठीक होने पर वह यह सब देख लेगी [illegible] है, [illegible] एक सहयात्री के पास की किताब में उसने पढ़ा था कि यहाँ [illegible] है यहाँ एक पहाड़ है, [illegible] है [illegible] इन्हें अवश्य कभी न कभी देखेगी। अभी तक तो कोई

दृश्यो का ज्ञान उसका बम्बई के आसपास के दृश्यो तक ही सीमित था, अब वह संसार के सारे प्राकृतिक दृश्य जी भरकर देख लेना चाहती थी। उसका खयाल था, सच्चा सौन्दर्य उसके जी की जलन को दूर कर सकता है।

केसर ने होटल मे एक छोटा कमरा किराये पर ले लिया और अपना नाम नकली बताया—रामप्यारी। उसने अपने को विधवा बतलाया। एक दिन का कमरे का किराया भी पेशगी चुका दिया। अपने कमरे मे जाकर उसने बड़ा बैग खोला और जवाहरात और नकद रुपये निकालकर एक छोटे से बैग मे रक्खे जिसे लेकर आसानी से कहीं जाया जा सके। और फिर पैदल ही बाहर उसे लेकर निकल गई। बाहर निकल जाने पर उसे फिर भय हुआ कि कही उसकी पोल खुल न जाय, अत. उसने तय किया कि वह होटल लौटकर न जायगी। लेकिन उसका सामान जो वहाँ था। उसने एक दूसरा होटल ढूँढ़ा। वहाँ भी एक कमरे का पेशगी किराया चुकाया और एक पत्र लिखकर पहलेवाले होटल के मैनेजर के पास नौकर द्वारा भिजवाया। उसमें लिखा कि एक मित्र के मिल जाने की वजह से मुझे उसके साथ रहना पड़ रहा है और इसी लिए मेरा सामान इस नौकर के हाथ भेज दिया जाय। यह सब कर-कराकर, नये होटल के कमरे में ही बैठे-बैठे उसके मुँह से अपने तई निकला—अब ठीक है। अब मेरा पता राजरानी इस जन्म मे नहीं पा सकती।

राजरानी को धोखा देकर इस तरह निकल भागना केसर को मन ही मन कुछ बहुत अच्छा नहीं लग रहा था। वह केसर के प्रति काफी उदार थी। सम्भवत वह केसर के पहुँचने के तार का इन्तजार करेगी, खत का इन्तजार करेगी। यह वह समझ भी नहीं पावेगी कि चिड़िया बरबस अपना सुरक्षित पिंजडा छोड़कर जङ्गलो मे उड़ती फिरने को निकल गई है। पर, अब केसर ने

अपने को, कुछ भी हो, मुक्त समझा। उसे ऐसा लगा कि जितनी प्रसन्नता उसे इस समय हो रही है उतनी जीवन मे कभी नहीं हुई — तब भी नही जब वह बहुत नन्हीं सी थी और माँ की प्यार-दुलार भरी गोद में खेला करती थी। वह फिर बाहर निकल गई और चलते-चलते वहाँ पहुँची जहाँ वह छोटी झील थी। पानी साफ हरा था, सुहावना मौसम था, कुछ-कुछ बादल आकाश में मँडरा रहे थे। केसर ख़ुशी से नाच उठी, मन ही मन कहा— क्या मै सचमुच ही धूर्त हूँ, जब कि सुन्दर वस्तुएँ, बिलकुल बच्चे की ही तरह, मेरे मानस मे सरलता का संचार कर देती हैं ? लेकिन हाँ, मैं सचमुच ही धूर्त और पतित हूँ। मैने कितना नारकीय जीवन बिताया है। कितने ही नीच काम मुझे करने पड़े हैं— केवल इसलिए कि मैं कायर हूँ और मुझमे इतना साहस नहीं कि इस पानी जैसे जल में डूबकर अपने पापो को धो डालूँ। यह सत्य है कि मैं भली हो सकती हूँ। लेकिन उसके लिए मेरे चारों ओर अच्छे और भलेमानस होने चाहिएँ, मुझे उनका साथ चाहिए।

अच्छे और भलेमानस ? हाँ, इन्हीं की खोज में तो वह सारे साल भर से, सत्य की ओर, बढ़ रही है। ऐसे व्यक्ति, जिन्हें जीवित रहने के लिए नीचता की शरण न लेनी पड़े। वह उन्हें पायेगी, जरूर पायेगी। खोजने निकली है—स्वतन्त्र और मुक्त होकर।

केसर के चले जाने से राजरानी को कितना दु:ख हुआ, यह वही जानती थी। वह राजरानी के विलासभवन की आय की प्रधान सूत्र थी। जब राजरानी को केसर का कुछ पता न चला, कोई तार या ख़त भी न आया तो वह घबरा गई। बेचारी केसर! शायद लम्बी यात्रा से बहुत थक गई हो, बीमार भी तो थी! राजरानी ने घबराकर उस होटल के मैनेजर को तार दिया जहाँ ठहरने की बात केसर कह गई थी और जहाँ का ख़त राजरानी को दिखाया था। दूसरे दिन जवाब आया कि न तो केसर वहाँ गई ही और न कुछ ख़बर ही दी। राजरानी पागल सी हो गई। या तो रास्ते में ही केसर कहीं बहुत बीमार पड़ गई है या उसने बरबस, विलासभवन के जीवन से ऊबकर, बीमारी का बहाना कर अपने किसी प्रेमी के साथ भाग जाने की यह चाल खेली है! अगर वह सचमुच ही बीमार है तो कभी न कभी अच्छी भी हो जायगी। ऐसी बीमारी उसकी नहीं कि मर जाय। पर अब तो राजरानी को उसकी बीमारी की बात पर भी सन्देह होने लगा। अगर वह जान-बूझकर गायब हो गई है तो वह यह नहीं चाहती थी कि कोई यहाँ का आदमी उसका पता-ठिकाना जाने। पहली दशा मे वह कभी न कभी खत जरूर भेजेगी, दूसरी हालत मे नहीं लिखेगी, और राजरानी को विश्वास होता जाता था कि अन्त मे कोई न कोई गुल जरूर खिलेगा।

अगर राजरानी रुपये खर्च करके किसी आदमी को उसके पीछे लगा दे तो कभी तो उसका पता लगेगा ही, लेकिन फायदा

क्या ? वह केसर की अभिभावक या संरक्षक तो है नहीं। अपने धनी प्रेमी का साथ छोड़कर राजरानी के पास फिर वह लौट आवे, इसके लिए कोई उस पर कैसे दबाव डाल सकता है ? इस बात की चेष्टा करने से ही कलङ्क और अपवाद की बातें फैलेंगी। आखिर केसर ने धोखा दिया ही। राजरानी ने यही तय किया कि अब वह इस मामले में चुप ही रहेगी—कुछ भी न करेगी। केसर विलासभवन के लिए एक मूल्यवान् वस्तु थी और राजरानी ने सोचा—अगर कभी वह पछताई, अच्छी हो गई, धन और प्रेमी साथ छोड़ गये और वह मेरे पास वापस लौटी तो मैं उसे भर्ती फिर कर लूँगी किन्तु उसके प्रति उतनी उदार नहीं रहूँगी जितनी थी। मैं बहुत उदार हो गई थी—उसके भोलेपन ने मुझ पर जादू सा कर दिया था। शायद, शुरू से अखीर तक, उसकी सारी कहानी ही झूठी थी।

राजरानी ने किसी को यह नहीं बताया कि केसर ने उसे धोखा दिया है और वह कपट करके चली गई है। उसने सोचा—सब मुझ पर हँसेंगी—मैं नारी-चरित्र की जानकारी का दावा रखनेवाली कैसे एक छोकरी के धोखे में आ गई। और यह अच्छा नहीं होगा कि वे सब मुझ पर—अपनी स्वामिनी पर—हँसें। उसने इतना ही बताया—केसर ने लिखा है कि वह अब अच्छी हो रही है।

गुलाबी ने कहा—ताज्जुब है कि वह हमें इतना जल्दी भूल गई। हममें से किसी के पास वह खत नहीं भेजती।

राजरानी ने हँसकर कहा—नैनीताल में स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ तो नहीं रहतीं। शायद हमारी केसर वहाँ बहुत व्यस्त हो गई होगी। मैं तो सोचती हूँ, कहीं वह किसी धनी युवक से वहाँ शादी न कर ले और हमें एकदम त्याग दे।

[illegible] ने [illegible] के साथ जवाब दिया—अगर मुझे ऐसा अवसर मिल जाय तो कौन औरत ऐसा न करेगी ? कल से मैं

जिन्दगी आराम से तो कटेगी। मुझे भी कोई ऐसा ही मिल जाता, भगवन्!

× × × ×

बीच मे, थोड़े दिनो केसर ने क्या किया, कहाँ रही, किससे कैसे मिली, यह अँधेरे मे है। इस समय, जिस समय की बात हम कह रहे है, वह एक अच्छे शानदार होटल में रहती थी। कमरा छोटा ही था पर खूब सजा हुआ। कमरे से लगा हुआ ही ग़ुसलख़ाना था। सामने बारजा था जिस पर नारङ्गी की लता चढ़ी हुई थी। बारजे मे एक छोटी सी मेज और दो कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। यह होटल और अपना यह कमरा केसर को बहुत पसन्द था। खिड़कियो पर पर्दा पड़ा हुआ था और कमरे मे पलँग पर उसका बिछौना बिछा रहता था। इस होटल मे वह कैसे आई, यह हम नही जानते। इतना ही कह सकते हैं कि होटल की मालकिन श्रीमती कनकलता से कही उसकी जान-पहचान हो गई थी और उन्हीं ने जोर देकर उसे यहाँ ठहराया था। उसने केसर को यह लोभ दिया था कि मैं तुम्हे अच्छे और भले लोगो से मिलाऊँगी। नगर का नाम सुनकर आप क्या करेंगे, कहानी भर जानिए।

तब हुआ यह कि एक दिन, घूमने जाने पर, श्रीमती कनकलता ने रास्ते मे जिन दो 'अच्छे और भले आदमियो' से उसका परिचय कराया उन्हे देखकर केसर—अब रामप्यारी—बिना चौके न रह सकी। एक को उसने पहचाना। वह उस लखपती युवक की पार्टी मे विलासभवन मे शरीक हुआ था। नाम था किशोर सेठ। एक मिनट के लिए उसने सोचा, वह मर जाती तो अच्छा था, पर तुरन्त ही अपने को उसने सम्हाल लिया। सोचा—यह तो एक न एक दिन होना ही था। वहाँ का कोई न कोई मिलता ही। अच्छा, यह भी एक परीक्षा है।

—

केसर, चेष्टा करने पर भी, उस पार्टी मे देखे हुए मनुष्यों के चेहरे नहीं भूल सकती थी। उसने सोचा, क्या मेरे मुख को लोग भूल गये होंगे। इस विधवा के आवरण मे भी क्या मैं छिप सकती हूँ? अगर यह बूढ़ा सेठ किशोर मुझे पहचान लेता है और उसी तरह की बातें करता है तो, उसने सोचा, मैं झूठ बोलूँगी। जितना भी होगा, झूठ का अम्बार खड़ा कर अपने को पहचाने जाने से बचाऊँगी। उसने सेठ की ओर देखा, हिम्मत के साथ देखती रही, यद्यपि भीतर ही भीतर उसका हृदय जाल में फँसे हुए पक्षी की भाँति फड़क रहा था। एक क्षण के लिए तो उसे ऐसा लगा जैसे वृद्ध ने उसे नहीं पहचाना, क्योंकि उसने एक अपरिचित की तरह ही देखा। उस दृष्टि से वह घृणा करती थी, यद्यपि अब केसर को उससे डरने का कोई कारण नहीं था। वह अब रा-गनी के विलास भवन की रहनेवाली 'केसर' तो रह नहीं गई थी, जिसे ग्राहकों को खुश रखने के ही लिए सारा सुख, आराम और सुविधा मिलती थी। उसने मन ही मन कहा कि जब मुझे 'इज्जतदार और भलेमानस' व्यक्तियों से मिलना है तब ऐसों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकेगी।

ऐसे व्यक्तियों से परिचय उससे कराया गया। वे आन्तरिक रूप से [illegible] सुन्दरी युवती के, कपड़ों से लदे, तन का जैसे [illegible] आँखों में आ जाने लगे। दोनों का यह विश्वास [illegible] कि यदि वे कभी चेष्टा करें तो शायद कभी उस युवती का [illegible]। उसका सम्पूर्ण, मर्यादित रूप पा सकें। ज्यादा से

केसर ने कनकलता की ओर देखा। उसने ही उत्तर दिया—हम लोग तो सिनेमा जा रहे हैं। आप कहाँ जायँगे? आप लोग तो, जब हम मिले हैं, दूसरी ओर को जा रहे थे।

किशोर—फिर भी, हम मिले तो! इसी लिए हम लौट भी आये। सिनेमा तो हम जा नहीं रहे थे। हाँ, मिस रामप्यारी, क्या मैं आपको आपका नाम लेकर पुकार सकता हूँ?

केसर ने आपत्ति की—नहीं, मुझे अच्छा नहीं लगता। हमारी आपकी कोई खास जान-पहचान नहीं है, तब यह भद्दा लगता है। मैं इन सब बातों के लिए यहाँ नहीं आई।

बाकी तीनों बुत बन गये। कनकलता ने कहा—अभी मैं इनसे पूछ रही थी कि क्या आप किसी धार्मिक स्कूल में पढ़ी हैं। बतलाती नहीं हैं, पर मैं समझती हूँ, बात सही है।

केसर ने कहा—बात कुछ-कुछ ठीक है। मुझे सिखाया गया था कि अच्छे व्यवहार और तरीके क्या चीज हैं, और यह कि जीवन में वे बहुत जरूरी भी हैं।

इस पर किशोर सेठ भद्दी हँसी हँस उठा। उसने कहा—ये पुरानी बातें हैं मिस रामप्यारी!

केसर—हो सकता है। शायद आप 'अच्छे और भलेमानस' व्यक्तियों के सम्पर्क में कम ही आये हैं।

केसर की बात कटु थी। कोई आत्मसम्मानी व्यक्ति होता तो उसे चोट लगती पर [illegible] बात ही उलटी थी। दूसरे व्यक्ति ने हँस-कर कहा—हमसे बढ़कर अच्छा और भलामानस कौन होगा? [illegible] बात दूसरी है पर हमारे पास वह है जो सभी [illegible]।

'वह क्या चीज है?'

'रुपया, रुपया और क्या ? यहाँ एक भी स्त्री ऐसी नहीं जिसे चाहने मात्र से ही हम न पा सके। रुपया सब कर सकता है।'—पहले व्यक्ति ने हँसकर कहा।

केसर चिल्ला उठी—कनक, तुम क्यों नहीं इन्हे मुँहतोड जवाब देतीं ?

किशोर ने उसी तरह हँसते रहकर जवाब दिया—ओह, कनक ऐसी औरत नहीं है कि इस बात का जवाब दे। अच्छा, इस झगड़े को हटाओ, चलो किसी होटल में चलें। कनक, सिनेमा का प्रोग्राम इस वक्त रहे, फिर कभी देखा जायगा। क्यो जी ?

पहले व्यक्ति ने, दाँत निकालकर, इस प्रस्ताव का समर्थन किया और कनक मे तो जैसे इन दोनों व्यक्तियो की बात टालने का साहस ही न था। क्यो नहीं था, यह जानने के लिए हमे दो-तीन बरस पहले का इतिहास जानना होगा। किशोर सेठ और उसका साथी प्रतिवर्ष यहाँ आते थे और कनक के होटल मे ही ठहरा करते थे। इफरात का रुपया उनके पास था, पानी की तरह बहाते थे। कनक को जब यह मालूम हुआ कि ये दोनो अच्छी और सुन्दरी युवतियो की तलाश मे ही यहाँ आते हैं तो वह बुरी तरह इनकी ओर आकृष्ट हुई। उस समय वह पूर्ण युवती थी। पति उसका यद्यपि उस समय जीवित था, फिर भी, उससे काफी सन्तोष न हो पाने के कारण तथा मन न मिलने के कारण वह अपने रसग्राही मन की भूख इधर-उधर मिटाने को बाध्य थी। बाद मे, पति के देहान्त के बाद, तो वह स्वतन्त्र हो गई और इस बड़े होटल की स्वामिनी हुई। उन दोनो व्यक्तियो ने यद्यपि शुरू से ही उसकी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया किन्तु वह उनको जाल मे फँसाने की चेष्टा मे सदैव लगी रहती। इसी से उनकी बात काटने का साहस उसमें न था। वे दोनो भी काम निकालने भर ही को उससे सम्पर्क रखते थे।

केसर लाचार थी। कनक के साथ वह थी और उसके साथ रहना ही था। चारों साथ-साथ होटल की ओर चले। रास्ते भर वे दोनों व्यक्ति केसर की ओर ही मुखातिब रहे। कनक जली जा रही थी पर उसके शरीर के साथ ही उसकी भावनाओं का भी कोई मोल उन दोनों के लिए नहीं था। वे यही सोच रहे थे कि रामप्यारी (केसर) कितनी सुन्दरी है और कनक को यह कहाँ और कैसे मिल गई। यदि कनक बोलती भी तो या तो वे सुनते ही नहीं या जवाब ही न देते। अभी वे चल ही रहे थे जब कि एक तेज़ मोटर ठीक उनके पीछे आकर खड़ी हो गई। एक हृष्ट पुष्ट, स्वरूपवान् युवक नीचे उतरा और कनक की ओर देखकर बोला—ओहो, कनक देवी! नमस्कार। हाँ, आप कौन हैं?

कनक—मेरी सखी श्रीमती रामप्यारी। और बहन, यह हैं यहाँ के मशहूर अभिनेता मिस्टर सुरेशचन्द्र। अभिनय करना इनका पेशा नहीं है, शौकिया करते हैं, पर दूर-दूर तक इनका नाम है।

केसर ने देखा—यह एक पुरुष है, युवक, सुन्दर और साधारण।

सुरेश—आप लोग मेरी गाड़ी में आ जायँ। काफी जगह है। अभी मैं ज़रा होटल गया था। कनक जी, आज मैंने एक आयोजन किया है। पाजामा-परेड! अरे, नहीं समझीं! लड़कियाँ पाजामा पहनकर नाचेंगी। पहला इनाम मैं स्वयं दे रहा हूँ।

सब लोग जब गाड़ी में बैठ गये तब उसने फिर कहा—और श्रीमती रामप्यारी, आप भी ज़रूर आयें, कनक भी नाचेंगी। क्यों न? मैं समझता हूँ, पहला इनाम आपको ही मिलेगा।

केसर—मैं देखने ज़रूर आऊँगी। नई चीज़ होगी, पर पाजामा पहनकर नाचना मुझसे न होगा।

कनक—आप बहुत शौकीन हैं मिस्टर सुरेश। अच्छा, अब तो [illegible] है। कृपा कर हमें हमारे होटल में [illegible]।

होटल के पास रुककर उस युवक ने फिर कहा—मैं जा रहा हूँ, एक जगह खाने जाना है। मै फिर मिलूँगा और आपको नृत्य में भाग लेने को जोर दूँगा।

केसर—वह व्यर्थ होगा। हाँ, आप मिलने जरूर आ सकते हैं।

उसके जाने के बाद केसर ने सोचा—यह है औरो से भिन्न पुरुष! अभिनेता कितना भलामानस है!

खाने के वक्त कनक ने कहा—पुरुष मेरे ज्यादा काम के नहीं। पति से घृणा होने के कारण मैं पुरुष-जाति से ही घृणा करती हूँ। फिर भी, मै मानवी हूँ। यह नहीं बर्दाश्त कर सकती कि कोई मेरी उपेक्षा करे। अगर एक बात न होती तो मैं तुमसे, सुरेश के कारण, डाह करती।

शर्माकर केसर ने पूछा—क्या बात?

कनक—अगर मैं खुद ही तुमसे प्यार करती न होती! तुम्हें मैं साथ क्यों लाई? तुम प्यार करने के ही लिए बनी हो, बस! यह भूलकर कि तुम भी औरत हो, मैं तुम्हे प्यार करती हूँ।

केसर—तुम्हारा मतलब क्या है, मै नहीं समझ पाई।

पर कनक ने खोलकर समझाया नहीं। समझा नहीं सकी।

—

केसर के लिए दिन और रात बराबर थे। यों कहा जाय कि वह रातों को भी दिन बनाने में अभ्यस्त थी तो अत्युक्ति न होगी। ऐसा न होता तो वह यहाँ रहकर पागल हो जाती। यहाँ शान्ति और सन्नाटे का कोई समय यदि था तो दिन का था। रात को तो इस होटल में निरन्तर दरवाजे बन्द होने और खुलने के शब्द आते रहते, बारजे में पदध्वनियाँ होती रहतीं। लड़कियों के कृत्रिम, निष्क्रिय विरोध की आवाजें आती रहतीं, पुरुष गाते और हँसते रहते, अपनी मालकिनों की अनुपस्थिति से डरे हुए पालतू कुत्ते भूँकते रहते, गरज कि एक अच्छा खासा कोलाहल यहाँ मचा रहता था।

पाजामा-परेड में शामिल होनेवाली सभी लड़कियाँ इस वक्त होटल में आ रही थीं। केसर किशोर सेठ और उस दूसरे व्यक्ति के साथ आई थी। इन दोनों ने उसे अपने साथ होटल में आने की दावत दी थी और जब केसर ने कहा कि बिना कनक के वह नहीं आ सकेगी तब कनक को भी उन्होंने निमन्त्रित किया था। इस समय वह एक काला कपड़ा ऊपर से नीचे तक डाले, बैठी हुई थी—जो कपड़ा इस वक्त वह पहने थी और जिसे पहनकर वह परेड में शामिल होनेवाली थी, उसे ही निश्चित समय तक छिपाये रखने के लिए यह किया था। केसर इस बात पर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थी [illegible] इस काट के बने हुए थे कि उसकी पीठ और बाहों का आधा हिस्सा साफ दिखाई पड़ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यह समझता था कि ये दोनों अब उसके

सुन्दर और सुडौल है। वह यह समझ रही थी कि जम्पर की इस नई काट ने और उससे दीख पडनेवाले इन दो अङ्गो ने लोगो की उत्सुक और भूखी निगाह उसकी ओर आकृष्ट कर दी है। मस्तक इधर-उधर हिलाने पर उसके कंधो पर छोटे-छोटे गढ़े बन जाते थे। गले के नीचे भी हँसलियाँ, जो यौवनागम और जवानी की निशानी हैं, उसकी ओर पुरुषो की निगाह जमाये हुए थी।

परेड मे भाग लेनेवाली सभी स्त्रियाँ, कनक की ही तरह, काले कपडो से ढँकी, भोजन कर रही थीं और बीच-बीच मे उनकी हँसी और बातचीत से उस होटल का हॉल गूँज उठता। इसी समय अपने दो-तीन साथियो के साथ सुरेश भीतर आया। इधर-उधर देखकर, वह एकदम केसर की मेज के पास आ गया। उसने कहा—देखिए, ये मेरे मित्र मिस्टर आनन्द हैं। बम्बई से इसी जलसे के लिए आये है। ये लेखक हैं और कवि भी। आपसे मिलाने का लोभ मैं नहीं रोक सका।

केसर पल भर के लिए अभिभूत हो गई। उसने कुछ सुना नहीं। चुपचाप वह उनकी दृष्टि को देख रही थी जिसे अब तक वह नहीं भूल पाई है और जिसे, चाहा था कि, फिर न देखना हो। उसे ऐसा लगा, जैसे चारो ओर अँधेरा हो गया हो। वह होटल और समस्त आमोद-प्रमोद जैसे लुप्त हो गया और एक दूसरा ही दृश्य उसके मानस-नेत्रो के सम्मुख आ गया। वह पुनः राजरानी के विलासभवन के शीशोवाले कमरे मे जा पहुँची—उन्हीं नगी लड़कियो के बीच! एक आदमी ने उसे जबर्दस्ती बाहुओ मे भर लिया है, एक दूसरा युवक आगे आकर उसे छुड़ाता है। वही युवक यहाँ फिर है। उसकी और केसर की आँखे मिलीं। केसर ने तुरन्त ही सोचा, मुझे अपने को सँभालना होगा। अगर मै ऐसा करने मे सफल हुई और इस समय मैंने घबराहट नहीं दिखाई तो आनन्द मुझे नहीं पहचान सकेगा। मैं

इस समय बिलकुल बदली हुई हूँ, केसर नहीं, रामप्यारी बनी हुई हूँ और आनन्द ने तो मुझे कुछ ही क्षण देखा था। केसर यह निश्चय कर लेना चाहती थी कि आनन्द मुझे कुछ-कुछ पहचान तो नहीं रहा है। वह जानती थी कि यदि आनन्द मुझे पहचान भी लेगा तब भी कुछ न करेगा। वह दूसरी तरह का व्यक्ति है। अपने कलुषित और नारकीय अतीत को भूलकर जिस लड़की ने नया रूप धारण किया है, उसे उसी गन्दे अतीत के लिए चिढ़ाने और अपमान करने में आनन्द को प्रसन्नता नहीं होगी। फिर, वह एक लेखक और कवि है। इन साधारण और छोटी-छोटी बातों को वह दूसरी तरह से देखता है, पतन और दुश्चरित्रता का दृष्टिकोण उसका दूसरों से भिन्न है। पहचान लेने पर भी केसर के लिए आनन्द को दुःख ही होगा। पर, उसने सोचा, मैं आनन्द से दया नहीं पाना चाहती। इस विचार से ही उसे घृणा होती थी कि आनन्द उसे, राजरानी के विलासभवन की लड़कियों के साथ नाचनेवाली जानकर, पहचान ले। अब केसर को भान हुआ कि वह क्यों नहीं इस युवक से मिलना पसन्द करती थी। इसलिए कि विलासभवन की उस रात के बाद से ही उसने इस युवक को प्यार किया था। उसे सदैव एक आदर्श पुरुष के रूप में हृदय में रखना चाहती थी। और तभी, उसी दिन से, अपने को उसने एक नये जीवन के लिए तैयार करना आरम्भ कर दिया था।

अपने को भरसक सँभालकर, परिचय होने के बाद, वह हँसी और कहा—आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

आनन्द ने भी उसी वाक्य को दुहरा दिया। यह परिचय का [illegible] था। तब किशोर सेठ की ओर घूम गई, इस आशा से कि अब [illegible] टैक में बैठा जाय और पार्टी को [illegible] [illegible] ने [illegible] बताते हुए कहा कि मैं अभी अपने [illegible] के [illegible] पानी पीकर, यहीं पर आ बैठे

और तब, गहरी प्रशसासूचक दृष्टि से केसर को छेकता हुआ वह चला गया।

केसर आनन्द की ओर से घूम गई थी। उसने फिर उधर नहीं देखा। वह बरबस दूसरी ओर ध्यान लगाये हुए थी, पर साथ ही उसे बराबर इस बात का खयाल था कि वह पास ही बैठा है। थोड़ी देर तक वह चुप रहा, फिर उसने कहा—आप इस परेड मे भाग नही ले रही हैं ?

केसर—नहीं, मुझे यह अच्छा नही लगा। मै तो देखने आई हूँ।

आनन्द—ताज्जुब है।

केसर—क्यो ?

आनन्द—कला की दृष्टि से, आपका भाग लेना ही ज्यादा अच्छा होता।

केसर चुप रही—क्या वह पहचान गया। क्या मुझ पर वह यह साबित करना चाहता है कि मेरा नाच भी वह देख चुका है!

उसने सोचा, यदि इस काले कपड़े को पहनकर न आती तो ठीक रहता। ऐसे ही कपडे को वह उस शीशोवाले कमरे में भी पहने हुए थी जब कि और सब स्त्रियॉ नङ्गी थीं। आज यद्यपि वह विधवा का रूप धरे हुए है, फिर भी यदि सफेद कपड़ा होता तो यह रूप अधिक सही उतरता। लेकिन उसे पता कब था कि यह घटना होगी। अगर जानता कि यहाँ आनन्द से भेट होगी तो वह आती ही नहीं। वह बार-बार अपने मन को यहीं भुलावा देने लगी कि वह मुझे पहचान नहीं सका है, नहीं पहचान सकेगा।

परेड शुरू हो गई थी। वाद्य-यन्त्रो की मधुर ध्वनियॉ सुन पड़ने लगी थीं। परेड मे भाग लेनेवाली सभी स्त्रियाँ थीं, पर सभी लड़कियॉ थीं, यह नहीं कहा जा सकता। अगर सब लड़कियॉ होतीं तो नाच देखने मे अधिक आकर्षक और हृदयग्राही

लहरें उसके कोमल, नंगे शरीर का आलिङ्गन करतीं और वह आगे ही बढ़ती चली गई। तालाब अधिक गहरा नहीं था, कृत्रिम था, और इस समय होटल के अधिकांश अधिवासी, रात को देर तक जागते रहने के कारण, पडे सो रहे थे, अतः इधर किसी के आने की अभी आशका नहीं थी। तैरना जानती होती तो तैरती, पर न जानने के कारण वह योंही ठंढे जल का शीतल स्पर्श अनुभव करके आनन्द ले रही थी। मन ही मन उसे तैरना जाननेवालो से डाह हो रही थी, काश, वह जानती होती! वह चाहती थी कि इसी तरह चित, जल पर पड़ रहे और आँखो से आकाश की ओर ताकती रहे।

पीछे से आवाज आई—क्या आप तैरना जानती है ?

चौंककर केसर ने पीछे देखा। आनन्द का निरावरण, दुबला-पतला शरीर जल के ऊपर से उसे दीख पड़ा।

केसर—आप हैं। मैं तो समझती थी कि आप चले गये। आप यहाँ तो ठहरे नहीं हैं।

आनन्द ने वहीं से उत्तर दिया—मैं दूसरे होटल मे ठहरा हुआ था। सवेरे उठकर तड़के ही यहाँ आया, यहीं नहाया भी। आपको मैंने इधर आते देखा था, तभी आया।

केसर को डर लग रहा था, कहीं वह विलासभवन और बम्बई की बात न छेड़ दे, पर आनन्द इस विषय में उदासीन जान पड़ता था। यह भी उसके चेहरे से नही जान पड़ता था कि वह केसर को पहले से पहचानता है। उसने फिर पूछा—क्या आप तैरना जानती हैं ?

केसर—नहीं, मैं नहीं जानती। योंही दिल बहलाने चली आई, पर इतने से ही सन्तोष नहीं होता। सोचती हूँ, काश मैं भी तैर सकती।

केसर वहाँ से कहीं नहीं जा सकी—फिलहाल किसी भी दशा में, कहीं जाने का विचार उसने त्याग दिया था। कनक ने भी अपना कहा पूरा किया था, किसी भी बात से केसर का जी दुखाना उसने नहीं चाहा। और फिर, एक बात और थी। केसर को—जो स्वयं ही पतन और घृणा के जीवन से अभी-अभी निकल कर आई है—इस बात का क्या अधिकार था कि किसी व्यक्ति की आलोचना करे! कनक का अपराध भी क्या था? यही न कि उसने भी नाच में और-और स्त्रियों के साथ अपने नग्न शरीर का प्रदर्शन किया था। तो यह तो कोई ऐसी बात नहीं थी। क्या यह दृश्य उसके लिए नया है? फिर, कनक उदार और सहानुभूति दिखलानेवाली है। इतने दिनों के अन्दर दोनों में एक स्नेह और सौहार्द हो गया है। इस दशा में, इस ज़रा सी बात पर, यहाँ से चले जाने का निश्चय कर लेना केसर के लिए उपहासजनक होगा। इसे लोगों को समझाना होगा। अपने को समझने का मौका देना होगा।

आनन्द चला गया होगा, यह निश्चित रूप से वह जानती थी। सुरेश के साथ वह आया था, साथ ही गया होगा। शायद फिर कभी आवे, पर आज केसर को भय का कोई कारण नहीं है।

आज सवेरे वह न जाने क्यों अत्यधिक प्रसन्न थी। होटल के [illegible] हुआ ही एक तालाब था, जिसमें शायद ही कोई कभी नहाने [illegible]। केसर वहीं गई और किनारे पर अपने वस्त्र [illegible] केवल एक [illegible] और [illegible] पहने हुए, निर्मल जल में उतर [illegible]

लहरे उसके कोमल, नगे शरीर का आलिङ्गन करतीं और वह आगे ही बढ़ती चली गई। तालाव अधिक गहरा नहीं था, कृत्रिम था, और इस समय होटल के अधिकांश अधिवासी, रात को देर तक जागते रहने के कारण, पड़े सो रहे थे, अतः इधर किसी के आने की अभी आशका नहीं थी। तैरना जानती होती तो तैरती, पर न जानने के कारण वह योही ठंढे जल का शीतल स्पर्श अनुभव करके आनन्द ले रही थी। मन ही मन उसे तैरना जाननेवालो से डाह हो रही थी, काश, वह जानती होती! वह चाहती थी कि इसी तरह चित, जल पर पड़ रहे और आँखो से आकाश की ओर ताकती रहे।

पीछे से आवाज आई—क्या आप तैरना जानती हैं ?

चौंककर केसर ने पीछे देखा। आनन्द का निरावरण, दुवला-पतला शरीर जल के ऊपर से उसे दीख पड़ा।

केसर—आप हैं! मैं तो समझती थी कि आप चले गये। आप यहाँ तो ठहरे नहीं हैं।

आनन्द ने वहीं से उत्तर दिया—मैं दूसरे होटल मे ठहरा हुआ था। सवेरे उठकर तड़के ही यहाँ आया, यहीं नहाया भी। आपको मैंने इधर आते देखा था, तभी आया।

केसर को डर लग रहा था, कहीं वह विलासभवन और वम्बई की वात न छेड़ दे, पर आनन्द इस विषय मे उदासीन जान पडता था। यह भी उसके चेहरे से नही जान पड़ता था कि वह केसर को पहले से पहचानता है। उसने फिर पूछा—क्या आप तैरना जानती है ?

केसर—नहीं, मैं नहीं जानती। योही दिल वहलाने चली आई, पर इतने से ही सन्तोष नहीं होता। सोचती हूँ, काश मै भी तैर सकती।

आनन्द—मैं सिखा दूँ? मेरा विश्वास है आप जल्दी ही सीख लेंगी।

केसर—अगर आपको तकलीफ न हो तो मैं तैयार हूँ।

कहने को तो कह गई, पर अब संकोच ने उसे आ घेरा। तैरना सीखने मे पर-पुरुष का पूरा स्पर्श होगा, 'नाहीं' वह नहीं कर सकेगी। तभी आनन्द ने कहा—अच्छी बात है। डरिए नहीं। पहले मैं बताऊँगा कि आपको क्या करना होगा।

जैसे-जैसे आनन्द ने कहा, केसर ने वैसे ही किया। उस निर्मल, ठंढे जल मे आनन्द का स्पर्श पाकर वह सिहर उठी। असावधानी और अनजान मे कई बार आनन्द के हाथ केसर के वक्ष से आ लगे, और समूचा शरीर तो उसके अधिकार मे था ही। केसर विवश थी, सिहर-सिहरकर रह जाती थी। वह इस समय एक अलक्षित स्वर्ग मे थी। थोड़ी देर बाद आनन्द ने कहा—अब रहने दीजिए। बाहर निकलना चाहिए।

बाहर आकर जब केसर अपने वस्त्र गीले, चमकते शरीर प[र] लपेटने लगी, आनन्द मुसकिरा दिया, पर उसने कहा कुछ नहीं। वस्त्र ठीक हो जाने पर, किनारे की सीढ़ियो पर बैठते हुए, आन[न्द] ने कहा—मैं तुमको, अरे, आपको ज्यादा अपने मे उलझाये न रख सकूँगा। शायद और लोग आकर मेरी जगह पर अधिका[र] कर लें।

केसर में साहस आ गया था। उसने कहा—नहीं, जब त[क] आप स्वयं न चाहेंगे तब तक और कोई आपको न हटा सकेगा। मैं यहाँ ज्यादा आदमियों को जानती भी तो नहीं।

आनन्द ने हँसकर कहा—आप यहाँ शायद अधिक दिनों [से] नहीं हैं?

[illegible] के आरम्भ में जिस युवक के प्रति केसर ने अपने हृ[दय] का [illegible] दिया था उसके बाद यही आनन्द, [illegible]

दिनों तक उसके पास अप्रत्यक्ष रूप से रहा आया है। यदि वह जान पाता कि उसकी पल भर की एक दृष्टि ने किस तरह इस नारी के समूचे जीवन मे परिवर्तन कर डाला तो बिना आश्चर्यान्वित हुए न रहता। केसर ने कहा—हॉ, ज्यादा दिनो से नहीं हूॅ फिर मैं यहॉ पुरुषो से मिलने का इरादा करके आई भी नहीं—मै तो यहॉ भले आदमियो को तलाश में आई थी।

आनन्द इस बार जोर से हॅसा—क्या पुरुप भले आदमी नहीं होते?

केसर—शायद मै पूरी तरह अपना आशय आपको समझा न सकूॅगी।

आनन्द—कुछ-कुछ तो मै स्वयं समझ रहा हूॅ।

वह चुप ही रही। थोड़ी देर बाद आनन्द ने फिर पूछा—अभी आपका यहॉ कितने दिनो रहने का इरादा है?

केसर—मैंने यह निश्चय नहीं किया है। कल रात को मुझे ऐसा लगा कि यहॉ की प्रत्येक वस्तु से मैं घृणा करती हूॅ और यह बड़ी भयङ्कर जगह है। मैं तो चली जानेवाली थी।

आनन्द—आप कहॉ जानेवाली थीं?

केसर—यही तो कठिनाई है कि मैं यह भी नहीं जानती। किन्तु अब मै नहीं जा रही हूॅ, अभी यहॉ रुकूॅगी। यह जगह मुझे पसन्द है, और यदि सब बातें ठीक रहीं तो यहीं रहूॅगी।

आनन्द—सब बातें क्या?

केसर—शायद यह बताना मेरे लिए कठिन होगा। मैं लोगो से बहुत आशा रखती थी। पर ऐसा हुआ नहीं। मुझे भ्रम था।

आनन्द ने हॅसकर कहा—लोगो से बहुत बड़ी आशा रखना ही बहुत बड़ा भ्रम है।

उसी दिन दोपहर को कनक ने केसर से कहा—देखो, तुम यहाँ बहुत बढ़ती जा रही हो। लोग तुम्हारी बड़ी इज्जत करते हैं। लेकिन यह सब मेरे कारण है। मुझे डाह करने का अव-सर न दो।

केसर—क्या कहती हो कनक, मैं कैसे इस बात का मौका दे रही हूँ?

बात करते-करते कनक केसर के कमरे मे चली आई थी। गुस्से से, आधी जली सिगरेट जमीन पर फेंकते हुए उसने कहा—"अच्छा, किसी दिन जान लोगी।" यह कहकर वह चली गई। केसर बात पूरी तरह समझ नहीं सकी।

१२

धूप से भरे हुए दिन और चाँद-सितारों से भरी हुई रात बीतने लगीं।

लोगो की दिन-चर्या उसी भाँति चली जा रही थी। उसी तरह उठना, सोना, भोजन, हँसना, आमोद-प्रमोद, कहीं भी कोई व्यतिक्रम किसी के कार्यक्रम मे न पडता।

केसर एक दिन तड़के उठकर ही होटल से चल दी। वह चाहती थी कि अपनी विशाल जमा की हुई जवाहरात की सम्पत्ति में से कुछ बेच डाले। उसे रुपयो की जरूरत थी। जिस समय वह राजरानी के यहाँ रहती थी, उस समय अमीर-उमरावो ने उसे बेशकीमत उपहार दिये थे—कोई चीज घटिया नहीं थी। वह जानती थी कि वे जवाहरात, उसके लिए मूल्यवान् न होने पर भी, किसी जौहरी के लिए भारी कीमत रखते थे। वह दूकानो पर गई, मोल-भाव किया और मोल भाव करते वक्त यह भूल गई कि वह वही स्वप्नराज्य-निवासिनी, अल्हड़ और भोली केसर है। आगे के स्वप्नों को पूरा करने के लिए उसे इस समय अपने स्वप्नो को भूल जाना आवश्यक भी था।

सहसा उसे रुपयो की इतनी जरूरत क्यों पड़ गई, यह भी जान लेना होगा। वह आनन्द को सदैव ख़ुश देखना चाहती थी। अपने प्रति उसका आकर्षण उत्तरोत्तर अधिकाधिक बनाये रखने के लिए वह रोज नये-नये कीमती वस्त्र पहनती और अन्य कृत्रिम प्रसाधनो द्वारा अपना सौन्दर्य जागृत और सजग रखने की चेष्टा करती। इन कामो में स्वभावतः अधिक व्यय होता और उसी

के लिए उसने नक़द रुपया पास में न रह जाने पर गहने बेच डालने का निश्चय किया। इस समय वह इस परिस्थिति में थी कि आनन्द के लिए सब कुछ कर सकती थी।

जो रुपये वह बचा पाई थी वे तो कुछ ही सप्ताहों में ख़र्च हो गये किन्तु अपने जवाहरात जो उसने बेचे, उनसे उसे बाक़ी रुपये मिले। जवाहरात अभी भी उसके पास बचे हुए थे, उनको उसने होटल के मैनेजर के सेफ़ में बन्द करवा दिया। जवाहरात भी आधे से अधिक तो बिक ही चुके और तभी उसे लगा कि उसकी सुख की दुनिया थोड़े ही दिनों में उजड़नेवाली है।

आनन्द को उसकी परवा थी या नहीं, यह वह नहीं जानती थी। मनोरंजन और कुतूहल के अतिरिक्त उसके परिचय में और भी कुछ था या नहीं, यह वह जानना चाहती थी, पर कोई साधन उसके पास नहीं था। वह केसर में दिलचस्पी रखता था, यह सही था। ऐसा न होता तो वह इतने दिनों यहाँ ठहरता नहीं, केसर से परिचय घनिष्ठ न करता। पर वह परिचय किस तरह का था, यह वह नहीं कह सकती। आनन्द जैसे किसी युवक से अब तक उसका परिचय कभी नहीं हुआ था। उसके विषय में जो अपनी कल्पनाएँ उसने शुरू में बना रक्खी थीं, वे केसर को सत्य ही लग रही थीं। उसने मन ही मन यह धारणा कर ली थी कि पुरुष - [illegible] वे कोई भी हों—हमेशा घृणा के योग्य हैं, स्त्रियों को केवल अपने हित के लिए उनकी सेवा और उनका मनोरंजन करना होता है [illegible] और से प्रकाश देख रही थी और आनन्द ही [illegible] था।

केसर सचमुच आनन्द को प्यार करने लगी थी—इस बात का उसे कुछ दिन हुए, पता लगा था। उसका प्यार अधूरा है और [illegible] भी [illegible] व्यथा और दुःख का सागर उसके [illegible] फिर भी [illegible] के लिए भी आनन्द की याद में

बेसुध होती, उसे अनोखा सुख मिलता। निराशा मे भी उसे आशा की रेखा दिखाई देती। लगातार तीन नरको मे, एक के बाद एक, रहने पर भी केसर अभी मन से निष्कलंक और मानवतापूर्ण ही थी। आनन्द के सामीप्य और स्पर्श ने उसकी सोई हुई आत्मा को पुन: जगा दिया। उसने जैसे नवीन रूप धारण किया।

× × × ×

किशोर सेठ और उसके मित्र की केसर को पाने की सारी चेष्टाएँ विफल गई, किन्तु चूँकि उनके लिए प्रेम का शारीरिक सम्मिलन के अतिरिक्त और कोई अर्थ नहीं था, अत: उन्होने हिम्मत न हारी। वे केवल मनोविनोद करते थे और युवको की तरह गहरे जाने की चेष्टा उनकी नही होती थी, अत: इस तरह के मामलो मे वे एक दूसरे से ईर्ष्या नही करते थे।

एक दिन मित्र महोदय सध्या समय किशोर के पास पहुँचे और हँसते हुए पूछा—क्यो, तुम अपना कमरा बदल दो तो कैसा रहे?

किशोर ने समझा नही, कहा—क्यो, इसकी क्या जरूरत है? मुझे यहाँ काफी आराम है।

मित्र—बहरहाल, मै तो भई, अपना कमरा बदल रहा हूँ। आज शाम को ही मेरा कमरा मिस केसर के बगल मे हो जायगा। सौभाग्य की ही बात है कि उसके कमरे के दूसरी ओर वाला कमरा भी खाली है। तभी तुमसे बदलने को कह रहा था।

किशोर—ओह, यह बात है। पर गधे, यह क्यों नहीं सोचता कि इससे फायदा क्या होगा। वह अपने कमरे के भीतर दोनो ओर के दरवाजे ताला लगाकर बन्द जरूर रखती होगी।

मित्र—सब सोचा है। उसका ध्यान ही इन दरवाजो पर नहीं गया है। उन्हे सदा बन्द देखकर ही वह समझ गई है कि उनमे उस ओर से ताला अवश्य बन्द होगा।

का दरवाजा खुला और एक आदमी बाहर आया। उसने केसर को सँभाल लिया। कनक ने और उस व्यक्ति ने किशोर और उसके मित्र को केसर के कमरे मे देखा। वे लज्जित पलभर को ही हुए, फिर सँभल गये। मित्र ने कहा--कैसा खिलवाड रहा।

कनक ने पूछा--क्या हुआ ?

वह व्यक्ति अब तक केसर को, बहन की तरह, गोद में सम्हाले रहा।

केसर ने इतना ही कहा--मैं भगवान् से प्रार्थना कर रही थी कि वह आनन्द को मेरे पास क्यो नहीं भेजते। शायद मेरे भीतरी दरवाजे किसी ने खोले थे और यह... ..और यह.. ..

किशोर ने बात काटकर कहा--मैं कह जो रहा हूँ कि यह केवल एक मजाक था।

केसर को सँभाले ही सँभाले उस व्यक्ति ने कहा--यह मजाक कुछ बहुत अच्छा नहीं रहा महाशय! श्रीमती रामप्यारी, क्या आप पुलिस मे रिपोर्ट करना चाहती हैं ?

केसर--नहीं, नहीं, पुलिस से मुझे घृणा है।

कनक--चलो, मेरे कमरे मे सो रहो। मालूम होता है, इन्होंने यह शरारत किसी नौकरानी की मदद से की है।

किशोर--बिलकुल नहीं। मेरा खयाल है कि श्रीमती रामप्यारी ने कभी उन दरवाजो की अच्छी तरह जाँच नहीं की, वे पहले से खुले थे। हमने केवल मजाक के इरादे से अन्दर झाँककर देखा था।

कनक--आशा है, आप लोगो को अपने कृत्य के लिए शर्म आ रही होगी। आओ बहन, चलें।

पर केसर ने धीरे से उस व्यक्ति के पाश से निकलकर कहा--नहीं, मैं अपने दरवाजो मे ताला डाल लूँगी, बस।

उस व्यक्ति ने कहा--आपकी कृपा के लिए धन्यवाद।

बहुत चेष्टा करने पर भी केसर उस रात सो नहीं सकी। रात्रि के शेष भाग में वह यही तय करती रही कि कल सुबह इस होटल को छोड़कर और कहीं जा रहूँगी। निश्चय के अनुसार उसने अपना सामान बाँधना भी आरम्भ कर दिया। दूसरे दिन तड़के ही उसने अपने निश्चय की सूचना होटल के अधिकारियों को दे दी और स्वयं पास ही के एक छोटे और कमखर्च होटल में एक कमरा किराये पर लिया। कनक के लिए उसने एक पुर्जा लिखकर छोड़ दिया, जिसमें इतना ही लिखा था—आप स्वयं कभी सब समझ लेंगी। आनन्द के लिए उसने यह भी नहीं किया। यदि उसे केसर की फिक्र होगी तो स्वयं ढूँढ़ लेगा।

नये होटल का नाम था—काश्मीर होटल। यद्यपि यह भी सुन्दर और सजा हुआ था, इसमें काफी चहल-पहल थी, फिर भी यहाँ और होटलों की अपेक्षा शान्त और संस्कृत व्यक्ति रहते थे। शायद इसका कारण धन की कमी हो। कुछ कमरों की खिड़कियाँ नदी की ओर खुलती थीं और सौभाग्य से केसर को एक वैसा ही कमरा मिल गया। अभी-अभी एक नवदम्पती अपनी सुहागरात मनाकर इस कमरे को छोड़कर गये थे।

अपनी छोटी-मोटी चीजें सजाकर रखने में उसे काफी अच्छा लगा पर एक अन्य कारण उसे निरन्तर बल-प्रदान कर रहा था। वह इसके परिचित व अपने को जाना नहीं चाहती थी, फिर भी उसके [illegible] भी उसका [illegible] छिपा नहीं था। उन दो भयानक नागिनों [illegible] किया [illegible] इस होटल में नहीं [illegible]

जिन्होंने कल रात को उसके कमरे में घुस आने का साहस किया था। एक बात और थी। वह आनन्द को भी यह अनुभव करा देना चाहती थी कि मै तुम्हारे पीछे पागल नहीं हो रही हूँ, मेरी भी स्वतत्र सत्ता है।

वह नित्य की तरह नदी किनारे गई और तैरने लगी। आनन्द की शिक्षा और निजी प्रेरणा से वह अब इस योग्य हो गई थी कि अकेली पानी में उतर सके और थोड़ा-बहुत तैर ले। जब वह पानी से निकलकर कपड़े बदलने लगी, उसी समय पहले-वाले होटल के कई अधिवासी निकट आ गये और पूछने लगे कि क्या तुमने होटल छोड़ दिया ? केसर ने उनसे कहा कि हाँ, केवल रात्रि के शोर-ग़ुल से ऊबकर ही ऐसा किया है, कोई और बात नहीं है। शायद ही किसी ने उसकी बात पर विश्वास किया हो, पर उसने बडी गम्भीरता से उत्तर दे दिया। लोगो के चले जाने पर वह थोडी देर तक वहीं सन्नाटे में किनारे पर बैठी रही। सहसा पीछे से एक परिचित शब्द सुनकर वह चौंकी। यह आवाज़ आनन्द की थी। उसने चाहा कि घूमकर उधर देखे, पर रुक गई। उसने बरबस अविचलित और दृढ़ बने रहने का नाट्य किया। आनन्द तुरन्त पास आकर बैठ गया।

आनन्द—क्या आप मेरे साथ तैरेंगी ?

केसर—आप चाहे तो तैर सकती हूँ।

"मै चाहता हूँ।" कहकर आनन्द ने एक हाथ का सहारा दे, केसर को उठाया और वह पर जैसी हलकी बनी उठी चली आई। अन्तःकरण उसका कह रहा था—ईश्वर ज़रूर कोई है, उसकी शक्ति अपरम्पार है।

किनारे की ओर बढ़ते हुए आनन्द ने कहा—सुनता हूँ, आपने वह होटल छोड़ दिया।

"जी हाँ।"

"मुझे ख़ुशी है।"

केसर चुप रही। आनन्द ने कहा—जानती हो, मुझे क्यों इस खबर से ख़ुशी हुई?

केसर—मैं नहीं कह सकती। कई कारण हो सकते हैं। यह भी हो सकता है कि आप यह न चाहते हों कि जहाँ आप रहें वहाँ मैं भी रहूँ।

आनन्द ने हँसकर कहा—क्या यह सच कह रही हो? तुम खुद जानती हो कि मेरी ख़ुशी का कारण यह नहीं है।

केसर—तब मैं नहीं जानती। शायद आप मुझ पर अप्रसन्न हैं।

आनन्द—क्या इसी लिए तुमने छोड़ दिया?

केसर—हो सकता है।

इसके बाद थोड़ी देर तक शान्ति रही। फिर आनन्द ने सहसा कहा—तुम बड़ी विचित्र हो। मैं आज तक तुमको नहीं पहचान पाया।

केसर—अच्छा! तब इससे क्या होता जाता है?

आनन्द—होना जाना क्यों नहीं? इससे बहुत कुछ बनता बिगड़ता है। अगर मेरे व्यवहारों से तुम्हें कोई कष्ट होता हो तो मुझे दुख है।

केसर—जब तक मुझे यह लग रहा था कि तुम मुझ पर नाराज़ हो, तब तक तो तुमने मुझे दुःख पहुँचाया ही था, इसे अस्वीकार न करूँगी।

बातचीत में केसर 'आप' से 'तुम' पर उतर आई थी।

आनन्द—अब तो सही-सही जान गई? अब तो ख़ुश हो?

केसर—हाँ।

आनन्द—अच्छा हुआ कि तुम उस होटल से ज्यादा दूर नही चली गई। जब मैने पहले सुना कि तुमने उस जगह को छोड़ दिया है, तब धक् रह गया।

केसर ने व्यग्य किया—तभी तो अब से पहले पता लगाने की कोशिश नहीं की।

आनन्द—यह बात नहीं है। मैं कल रात सो नहीं सका और प्रातःकाल मुझे गहरी नींद आ गई। देर मे आँख खुली। इसी लिए पहले नही आ सका।

दुनिया मे इतनी मिठास, इतनी मोहकता कभी न थी जितनी उस समय केसर को जान पड़ी। उसकी आँखो में आँसू छलछला आये—पता नही आनन्द से या दुःख से। उसने आनन्द की ओर से आँखें फेर लीं, ताकि वह न देख सके। वह इन आँसुओ का न जाने क्या अर्थ लगाये। कहा—क्या तैरोगे नहीं? उधर, खाने का समय भी तो हो रहा है।

आनन्द—होने दो। क्या तुम्हे खाने की विशेष चिन्ता है?

केसर—कुछ ज्यादा तो नहीं।

वे दोनो बहुत देर तक, साथ-साथ, लगभग सटे-सटे उस गर्म, सिल्क की तरह चिकने पानी में तैरते रहे। ऊपर का आकाश एक बड़े नीले रग के घटे जैसा उन पर उलटा पडा था जिससे छूती हुई किनारे की पर्वतमाला की आलोक-चिह्नित रेखा, नीलिमा पर सफेद धारी की तरह, दिख रही थी। तैरने के बाद बाहर आकर आनन्द ने कहा—मै अब दिन भर तुमसे नही मिल सकूँगा। क्या मेरा एक काम कर दोगी?

केसर—हाँ, बतलाओ।

आनन्द—आज अकेली ही खाना। मुझे याद रखना और यदि कोई गलत बात हो गई हो तो उसके लिए क्षमा करना। मैं

बाद में आऊँगा और तुम्हें नदी की सैर को लिवा चलूँगा। खुद नाव खेऊँगा। तुम चुपचाप बैठी-बैठी मेरी बातें सुनती रहना। मुझे एक बहुत जरूरी बात कहनी है।

कैसर समझ नहीं सकी कि इस बात से उसे खुश होना चाहिए या भयभीत, पर उसने प्रसन्नता प्रकट करना ही उचित समझा। परमेश्वर के अस्तित्व पर उसे पूरा-पूरा विश्वास हो रहा था। आज प्रार्थना करने पर वह प्रसन्न भी कम नहीं थी। उसने तय किया कि अब हर रात प्रार्थना करके सोऊँगी। हो सकेगा तो मन्दिर वन्दिर भी जाऊँगी। लेकिन नहीं, राजरानी के विलास-भवन की भी कुछ लड़कियाँ प्रति रविवार को मन्दिर जाती थीं; इस प्रकार वे भगवान् को भी धोखा देना चाहती थीं। हफ्ते भर शरीर का सौदा करके सातवें दिन भगवान् के सामने अपने लिए दया की अर्जी पेश करना और बाद में फिर छः दिन वही नारकीय जीवन व्यतीत करना भगवान् को धोखा देना नहीं तो और क्या है? मैं सुधर गई हूँ जरूर पर पहले तो नरक में रह चुकी हूँ। मैं ऐसा नहीं करूँगी। हाँ, यह जरूर है कि तन-मन से पवित्र जीवन व्यतीत करने की चेष्टा करूँगी और यदि आनन्द ने चाहा, उसका साथ रहा, तो मैं ब्याह कर भी लूँगी। इतने से ही मेरा काम बन जायगा।

केसर ने अपने कमरे में ही खाना खाया; क्योंकि आनन्द के कहे अनुसार उसकी याद करने और अकेले रहने का यही उपाय था। यहाँ किशोर सेठ और उसके मित्र जैसे नराधम भी उसका पीछा करने के लिए नहीं थे। उसने थोड़ा ही खाना खाया। उसका हृदय तेजी से धड़क रहा था। वह प्रत्येक मिनट टेलीफोन की प्रतीक्षा कर रही थी। उसे विश्वास था कि आनन्द टेलीफोन अवश्य करेगा। अन्त में, जब उसकी प्रतीक्षा और कुतूहल चरम सीमा पर पहुँच चुके तब बेयरा ने आकर खबर दी कि आपका टेलीफोन आया है।

रिसीवर में कान लगाने पर उसे आनन्द के शब्द सुनाई दिये—तुम्हे याद है न, मेरे साथ नाव की सैर को चलना है? उस नाव के तले मे छेद भी होगा।

केसर—हाँ, हाँ। मैं भूली नहीं हूँ।

केसर जानती थी कि नाव चूती हुई न होगी। यह केवल आनन्द का मजाक है, पर हो भी तो क्या। आनन्द और वह जीवन मे कभी एक हो नहीं सकते, फिर उसके साथ एक ही बार डूब मरने मे क्या हानि? मृत्यु ही शायद उसे पवित्र बना दे। और यदि इस जीवन के बाद भी कोई वास्तविक जीवन है तो सम्भवतः उसके प्रेम जैसा महत् और गम्भीर प्रेम उसे सदा के लिए आनन्द के साथ बाँध दे। यह विचार यद्यपि बिलकुल मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ था, फिर भी इसने केसर को बहुत आनन्द प्रदान किया!

आनन्द—तो छोटे बाँध पर दस बजे आ जाना। मैं वहाँ तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।

प्रतीक्षा! क्या यह भी सम्भव है? क्या उसकी दृष्टि में केसर इतनी ऊँची हो गई कि वह प्रतीक्षा करता रहे? आह, यदि उसे मेरी वास्तविक स्थिति का पता चल जाय तो वह कितना निराश होगा! पर, वह जानता नहीं और फ़िलहाल जानने की ज़रूरत भी नहीं। वे दोनों उन दो जहाज़ों की तरह हैं जो रात भर, अँधेरे में, समुद्र में एक दूसरे को प्रकाश देते रहते हैं और सुबह, सदा के लिए, अलग अलग चले जाते हैं। अपने भयानक अतीत जीवन को आनन्द से छिपाकर वह कोई अनुचित बात नहीं कर रही है।

केसर ने इस समय सफ़ेद कपड़े पहने। वह चाँदनी रात में, नाव पर, आनन्द के सामने बैठी हुई चाँदनी सी ही लगना चाहती थी। दस बजने में अब पाँच मिनट रह गये तब वह बाँध के लिए रवाना हुई। वह दस बजने के दो-एक मिनट बाद ही वहाँ पहुँचना चाहती थी। पर भाग्य में तो कुछ और ही था। रास्ते में उस उस व्यक्ति ने रोका जिसने उस रात, किशोर सेठ और उसके मित्र को नाचना में रुककर भागने पर, बाँह में [illegible] [illegible] दिया था। सुविधा के लिए हम उसे [illegible] [illegible] कहेंगे।

[illegible]—क्या मैं आपको गन्तव्य स्थान तक पहुँचा दूँ?

केसर—धन्यवाद। मैं चली जाऊँगी।

[illegible] ने [illegible] [illegible] कहा—मुझे खेद है, मेरा [illegible] [illegible] निकली है। मैं तो आपके लिए [illegible] [illegible] इस [illegible] में [illegible] मालूम हुआ कि [illegible] [illegible] बुरा बर्ताव [illegible] आपके साथ नहीं [illegible] [illegible] है।

केसर---आपने कुछ नहीं किया, विश्वास कीजिए। अच्छा, अब मुझे आज्ञा दीजिए, अन्यथा जहाँ जाना है वहाँ के लिए मुझे देर हो जायगी।

दिनेश---इस चाँदनी रात मे आप देवी सी लगती हैं। आपके सुनहले तार से बाल, आपका मोती जैसा चमकदार मुखड़ा, आपके बरफ जैसे सफेद वस्त्र इस समय अनोखी छटा दिखला रहे हैं। क्या आप मुझे अपने साथ चलने की आज्ञा देंगी?

केसर, अब, बात समझ रही थी। उसने धीरे किन्तु दृढ़ शब्दों में कहा---जी नहीं, मैं अकेली ही जाऊँगी।

दिनेश ने, साँस खींचकर, कहा---जैसा आप चाहेंगी, वैसा ही होगा। किन्तु मुझे आपकी याद हमेशा आती रहती है, जाने के पहले मैं यह बतला देना चाहता हूँ। कभी आपको किसी सच्चे मित्र की ज़रूरत पड़े या किसी तरह की सहायता की आवश्यकता हो तो मैं उसके लिए तैयार हूँ। आप इशारा भर कर दें। मैं आपके लिए सब कुछ कर सकता हूँ।

केसर परेशान हो गई और उसकी परेशानी दिनेश पर जाहिर भी हो गई। उस रात की घटना जब केसर ने आनन्द से कही थी और उसी सिलसिले में दिनेश का नाम भी लिया था तब आनन्द ने उसे सावधान कर दिया था कि दिनेश भला आदमी नहीं है, उससे बचकर रहना ही ठीक होगा। इस समय उस बात की सत्यता केसर ने समझी। उसने उत्तर दिया---धन्यवाद। मै इसे याद रक्खूँगी। अच्छा, नमस्कार।

दिनेश ने उसके पीछे चलने को कोई चेष्टा नहीं की, यद्यपि जल्दी-जल्दी बढ़ते हुए केसर को यही लग रहा था कि वह चुपचाप खड़ा देख रहा है कि वह किधर जाती है। वह, चुपचाप बाँध पर पहुँची जहाँ आनन्द, नाव पर बैठा हुआ, उसकी प्रतीक्षा कर रहा

था। उसे नाव पर, सहारा देकर, चढ़ाते हुए आनन्द ने कहा--प्यारी तुम तो आज स्वयं चाँदनी सी लग रही हो।

नाव मे छोटे छोटे लाल गद्दे लगे थे। उनमें से एक पर केसर बैठ गई। आनन्द ने जल्दी ही नाव आगे बढ़ा दी। वह चलती जा रही थी। केसर ने एक हाथ जल मे लटका दिया और वह मन ही मन आनन्द के सामीप्य का अकल्पित सुख उठाने लगी। थोड़ी देर बाद आनन्द ने कहा--तुम औरों की तरह नहीं हो सामप्यारी। तुम व्यर्थ की बकवाद नहीं करती, यह मुझे बड़ा अच्छा लगता है। मुझे बकवादी औरतों से नफरत है। वे समझती हैं कि उन्हें कुछ कहना ही चाहिए, चाहे कहने की कोई बात हो या नहीं। अगर कुछ कहना नहीं होगा तो व्यर्थ ही ही ही ही हँसती ही रहेंगी। तुम तो शायद ही कभी हँसती हो। हँसने की कौन कहे, मुसकराती भी नहीं।

इस बार केसर मुसकराई। कहा—देखती हूँ, तुमने थोड़े ही समय में मेरा अच्छा खासा अध्ययन कर डाला है!

आनन्द ने स्वीकार किया—हाँ, तुमसे मिलने के बाद, तुम्हारे अतिरिक्त और कुछ शायद मैंने सोचा ही नहीं।

केसर को भीतर ही भीतर, एक धक्का लगा। क्या आनन्द [illegible] जानता है कि मैं तुम्हारी असलियत जानता हूँ! [illegible] [illegible] छिप गई। फिर भी साहस बटोरकर [illegible] [illegible] तुमसे मेरा प्रथम परिचय हुआ था तब [illegible] [illegible] तुम [illegible] भूल जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ [illegible]

[illegible] आनन्द [illegible], फिर कहा—परिचय [illegible] [illegible] नहीं [illegible] था। अगर [illegible] [illegible] कि मैंने तुम्हारा अध्ययन किया है [illegible] [illegible] नहीं [illegible]।

केसर ने घबराई हुई आवाज़ मे पूछा—तो क्या पहले भी तुमने मुझे देखा था ? कहाँ ?

आनन्द—क्या तुम्हे याद नहीं ?

केसर ने काँपती हुई आवाज़ में कहा—मै नहीं जानती। मै .

आनन्द—तब शायद तुमने मुझे नहीं देखा था। मेरा ख़याल यही था कि हमारी आँखें आधे सेकेंड तक एक दूसरे से मिली थीं। और, आधा सेकेंड काफी वक्त होता है।

केसर मन ही मन डर रही थी, उसका भयंकर अतीत आवरण-रहित हो रहा था, फिर भी उसने पूछा—कहाँ देखा था ? कहीं यहीं ?

आनन्द—नहीं, बम्बई मे। अब तो कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रह गई न ? या और बतलाऊँ ?

केसर को जान पड़ा, मानो वह बेहोश हो जायगी। जीवन का अन्त सम्भवतः आ गया। सब वस्तुओ से अधिक इसी से तो वह डर रही थी। पर आत्म-दृढ़ता का पाठ उसने पढ़ा था। झूठ बोलना भी उसे सीखना पड़ा था। उसने कहा—आपको, . तुमको भ्रम हो रहा है।

आनन्द ने ज़ोर देकर कहा—नहीं, मैं भ्रम मे नहीं हूँ। तुम स्वयं जानती हो कि मुझे भ्रम नहीं हो रहा है। बम्बई की वह रात तुम्हे याद है। तुम्हे मै फिर से याद दिलाना नहीं चाहता। केवल तुम्हे यही बतलाना था कि मुझे याद है। तुम वहाँ ऐसी चीज ही थीं जिसे भूला नहीं जा सकता।

केसर, चोट खाई सी, चुप रही। आनन्द कहता गया—भले ही तुमने अपने मे बड़े-बड़े परिवर्तन कर डाले हैं, पर मैं यहाँ तुम्हें पहचान गया। विधवा का रूप, अकेले रहना ! अच्छा तो तुम्हारा असली नाम केसर है न ?

'हाँ'—जैसे जादू किया गया हो, केसर ने जवाब दिया।

आनन्द—ठीक है। मैं यह पता लगा चुका था। वहाँ तुम केसर के नाम से मशहूर थीं। तुम वहाँ दलदल में कुमुदिनी की तरह रहती थीं, लेकिन अभी तुम्हारा आकर्षण गया नहीं है। और तुम ज्यादा सुन्दर हो। तुम यहाँ—बिलकुल अकेले में—क्यों चली आई?

केसर ने अपनी नकली कहानी पर दृढ़ रहते हुए कहा—तुम जो समझ रहे हो मैं वह नहीं हूँ।

आनन्द—देखो रामप्यारी, केसर! मुझसे झूठ बोलने में कोई लाभ नहीं। धोखा देने की कोशिश मत करो। मैं गम्भीर होकर बात कर रहा हूँ। मेरा एक प्रस्ताव है। उसी के लिए आज तुम्हें इतनी रात को, अकेले, नाव पर ले आया हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम और केसर एक ही हो। यह बात क्या कनक जानती है? खैर, छोड़ो इस बात को। मेरे सवाल का जवाब दो। तुम यहाँ क्या करने आई हो?

केसर ने जवाब दिया—जैसे और लोग यहाँ हैं वैसे ही मैं भी हूँ। वे भी प्राकृतिक सौन्दर्य देखने यहाँ आये हैं। मैं भी [illegible] कर रही हूँ।

आनन्द—तुम तो सुन्दरता की मूर्ति हो। साथ ही, [illegible] [illegible] नहीं रह सकता कि तुम्हें अभिनय करना खूब [illegible] है। [illegible] ढोंग में सबका [illegible] बना रहता है।

केसर ने [illegible] और [illegible] कहा—मैं ढोंग नहीं कर रही हूँ।

आनन्द ने पूछा—तब क्या कर रही हो? तुम्हें क्या [illegible] [illegible] [illegible] है कि [illegible] मैं तुम्हें यहाँ ले आया हूँ।

[illegible] आनन्द ने आगे कहा—केसर [illegible] [illegible] [illegible] और मुझे [illegible] भी विश्वास है कि तुम [illegible] [illegible]

मधुवेला मे हम तुम मिलकर, एक साथ, एक काम क्यो न करे ? अपने को मुझे सौप दो—यहाँ, इसी सौन्दर्य-स्वप्न से रञ्जित स्थान पर, जिसकी अवहेलना कोई स्त्री या पुरुष नही कर सकते। मैं तुम्हे चाहता हूँ।

केसर को छाती मे एक हूक सी उठी। उसने दोनो हाथो से मुँह छिपा लिया, फिर वह सिसकने लगी। आनन्द ने कहा—तुम यह क्या कर रही हो ? क्या यह कहने मे तुम्हारा अपमान हुआ कि मै तुम्हे चाहता हूँ ? मैं तुम्हारी भावनाओं को चोट नहीं पहुँचाना चाहता। अब तक मैं यहाँ तुम्हारे ही लिए ठहरा रहा। तुम्हारा सैकड़ो पुरुषो से सम्बन्ध रहा तब एक मुझसे ही क्यो न रहे ? तुम्हारे अतीत जीवन से यह अच्छा ही होगा।

अब केसर ने सिसकियो के साथ जवाब दिया—मिस्टर आनन्द, अच्छा होता यदि यह बात कहने के बदले तुम मुझे नाव से ढकेल-कर डुबा देते। यह बात मेरी हत्या से भी भयङ्कर है।

आनन्द ने कहा—पगली ! अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम ढोगी हो। यह मुझे पसन्द नहीं।

केसर ने मुँह पर से हाथ हटाकर, गम्भीर होकर, कहा—मुझे किनारे ले चलो। मैं तुमसे दूर, बहुत दूर, जल्दी चली जाना चाहती हूँ। एक सुन्दर वस्तु टूट गई।

आनन्द ने घबराकर पूछा—ईश्वर के लिए कुछ बताओ तो कि क्या हुआ ! तुम्हे मुझसे क्या आशा थी ?

केसर—कुछ नहीं, कुछ नहीं। वह 'तुम' नहीं थे, कुछ और थे। आज के 'तुम' जो हो, उसको मैं, और पुरुषों की ही तरह घृणा करती हूँ। अगर तुम जानना ही चाहते हो कि मै यहाँ क्यो आई हूँ तो जान लो, केवल पुरुषो से दूर भागने के लिए। लेकिन तुम—तुम्हे मैं बहुत मानती थी। बम्बई की उस रात से ही मैंने

केसर—मै यह बतला सकती हूँ कि अब तुम्हारे प्रति मेरे क्या भाव हैं। मैं कोशिश कर रही हूँ कि तुमसे ज्यादा घृणा न करूँ। तुम भी आदमी हो और, अपनी शिक्षा के अनुसार, तुमने मुझसे व्यवहार भी किया। लेकिन जहाँ तुम पहले थे वहाँ से गिर गये हो। मेरे विषय मे जानकर क्या करोगे? तुम्हारा कुतूहल मेरे लिए नहीं है, बल्कि राजरानी के विलास-भवन से निकली हुई एक ऐसी अभागी लड़की के लिए है जो यहाँ चुपचाप, नकली वेश मे, सीधे-सादे रहने के लिए आई थी, जिसने शराब पीना छोड़ दिया था, शौक़-शृङ्गार छोड़ दिया था और मर्दों से भयङ्कर, प्यार की बाते करना छोड़ दिया था। यही बात है न?

आनन्द—कुतूहल तो मुझे है, पर उससे ज्यादा भी कुछ है। मैंने तुमसे कहा न कि मैं तुम्हे चाहता था।

केसर ने लगभग साथ ही कहा—चाहता था! सभी मर्द मेरी जैसी लडकियो से यही कहते हैं। और मै तुम्हारी पूजा करती थी। मैंने सोचा था कि कम से कम एक पुरुष तो औरो से भिन्न है। अगर तुमने मुझे पहचाना न होता और मुझे प्यार करते होते, विवाह के लिए मुझसे कहते जैसा कि मै सोचती थी कि आज रात तुम कहोगे, तब भी मैंने अस्वीकार कर दिया होता; क्योकि मैं उस योग्य नही थी। तुम्हे धोखा न देती। तुम्हे महत् और पवित्र बनाये रखने के लिए मैं अपने दिल पर चोट सह लेती और शेष जीवन तुम्हारी याद कर काट देती। लेकिन अब तो जितनी जल्दी भूल सकूँ उतना ही अच्छा। अगर तुम सही तरीके से मुझे प्यार करते होते तो मैं, कहीं जाकर, भली लड़की की तरह जीवन बिताती। अब क्या होगा, मै नहीं जानती। अगर कही भगवान् होता, जैसा कि मै समझने लगी थी, तो यह विपत्ति मुझ पर न आती। जब मैं छोटी थी तब जिन्दगी मेरे लिए बड़ी कठोर थी। मै नहीं जानती कि मेरे पिता कौन थे।

वे मेरी माँ से प्यार तो करते थे, पर व्याह उनसे नहीं किया वे मर गये या कहीं गायब हो गये—पता नहीं। मेरी माँ बहुत सुन्दर थी और, मैं समझती हूँ, उसका स्वभाव भी अच्छा था। वह केवल उसी को प्यार करती थी। उसके पास रुपया नहीं था और हम माँ-बेटियों को अक्सर निराहार रह जाना पड़ता। फिर मैं एक स्त्री के हाथ पड़ी जिसे मुझे चाची कहना पड़ता था, पर वह बड़ी कठोर थी। वहाँ और भी कितनी ही लड़कियाँ थीं और हमें अपना खर्च खुद उठाना पड़ता था। दूकान दूकान डोलकर मजदूरी करनी होती थी, यहाँ तक कि रात को घर लौटने पर पाँवों में छाले पड़ जाते थे। जब मैं कुछ बड़ी और समझदार हुई, मैंने वह स्थान छोड़ दिया और एक दूसरे स्थान पर रहने लगी, पर वहाँ भी जीवन की गति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं था। पुरुष मुझे राह चलते धक्के देते, गन्दी बातें कहते। मुझे रुपयों का प्रलोभन दिखाते। एक दिन एक युवक से मेरा परिचय हुआ। उस समय तो गरीबी के कारण वह विवाह नहीं कर सकता था पर उसने मुझसे कहा कि अच्छा समय आने पर वह मुझे अपनी पत्नी बना लेगा। मैं उसके साथ रहने लगी। वहाँ भी मेरी स्थिति पत्नी या प्रेमिका की बनिस्बत दासी की ही अधिक थी। [illegible] तक वह मुझे अकेली छोड़कर चला जाता, फिर भी [illegible] थी। कम से कम यह सन्तोष तो मुझे था कि मैं [illegible]। उस समय मैं केवल पन्द्रह साल की थी। [illegible] साथ रही। और भी रहती पर [illegible] बदल गया। अब वह मुझसे [illegible] कि मैं [illegible] भी रुपये कमाऊँ। [illegible] और [illegible] [illegible] जान पड़ा। मैं [illegible]
[illegible]

मेरे प्रति उदार थी और वहाँ की कुछ लड़कियों को भी मै चाहने लगी, पर धीरे-धीरे मुझे उस नारकीय जीवन से घृणा होने लगी। मै उसके लिए नहीं बनी थी। मैं एक से निकलकर दूसरे नरक मे जा पड़ी थी। अगर उस दिन तुम्हे न देखा होता या तुमने मुझे अपने चाचा के पाश से अलग न किया होता तो, बहुत मुमकिन है, मै अब तक वहीं पड़ी रहती। उसके बाद, मैने वहाँ से चले जाने का निश्चय किया—वहाँ, जहाँ भले आदमियो की बस्ती हो, जहाँ तुम्हारे जैसे लोग रहते हों। मैने भागने के लिए राजरानी को धोखा दिया। मैं राजरानी के नरक मे दो बरस रही, तब मैने एक बार स्वर्ग की झलक देखने की इच्छा की। और, इसी लिए यहाँ आई हूँ। लेकिन अब मुझे निश्चय हो गया कि दुनिया में भले पुरुष कहीं नहीं हैं।

अब तुमने मेरी कहानी सुन ली, तुम्हारी साध पूरी हो गई। और मेरी साध यह है कि तुम्हे अब कभी न देख पाऊँ।

आनन्द ने वेश्यावृत्ति करनेवाली कितनी ही लड़कियों की कहानी सुनी थी। किन्तु यह सबसे भिन्न थी। उसे विश्वास हो गया कि इस कहानी का एक-एक अक्षर सही है। उसने बदली हुई आवाज मे कहा—मुझे हार्दिक खेद है केसर! मैं सच कहता हूँ कि तुम्हे चोट पहुँचाने का मेरा जरा भी इरादा नहीं था। लेकिन तुम......

केसर ने बात पकड़ते हुए कहा—लेकिन मैं! मैं जानती हूँ कि मैं क्या हूँ! जीवन से मुझे घृणा है। यही मुझमें और अन्य लोगों मे अन्तर है। या, हो सकता है, कोई अन्तर न हो। हममें से अधिकाश जिन्दगी से घृणा करती हैं। कीचड़ से बचने के लिए हममे से अधिकांश अपनी पिछली जिन्दगी की ओर लौट जाना चाहती हैं। कीचड़ लगती ही है, पर एक बात कहूँ, मर्दों को क्यों कीचड़ नहीं लगती? वे भी यही काम करते हैं, वही

हम स्त्रियों को इस गन्दे और वीभत्स काम में प्रवृत्त करते हैं। फिर भी उनकी कोई हानि नहीं होती। उनके लिए यह सब स्वाभाविक है। वे साफ़ हो रहते हैं। ओह, कैसी गन्दी दुनिया है, कैसी नारकीय! राजरानी के यहाँ से भागते वक्त, मैंने मन ही मन कहा था—विदा मेरे नरक, चिर विदा! पर उस समय मैं नहीं जानती थी कि क्या कह रही हूँ। पर अब समझ गई हूँ। राजरानी के यहाँ, कम से कम, यह तो है कि गन्दे काम भी अच्छे ढंग से होते हैं। यहाँ केवल धोखा है, दिखावा है, दम्भ है। अच्छा, मैं फिर वहीं लौट जाऊँ।

आनन्द—नहीं, नहीं, यह न होगा। यह तो हमारी बात होगी। मैं भ्रम में था। तुम मुझसे रुपये लो और

केसर—बात को ज्यादा बिगाड़ने से कोई लाभ नहीं। तुम्हारा धन छू भी नहीं सकती, लेने को कौन कहे। मेरे पास अभी अपने काम भर को बहुत है। मैं यह स्थान छोड़ दूँगी, [illegible] फिर राजरानी के यहाँ लौट जाऊँगी या किसी छोटे गाँव में [illegible] रहूँगी, पर इससे तुमसे कोई मतलब नहीं। जान पड़ता है, [illegible] बुद्धि ठीक हो गई है। पर अभी मैं केवल अट्ठारह वर्ष की [illegible], किसी जगह नौकरी कर लूँगी जहाँ पुरुष न [illegible]

[illegible] किनारे आ लगी थी। केसर जल्दी से किनारे [illegible] [illegible] लेकर जैसे लगभग दौड़ती हुई [illegible] [illegible] सा देखता रह गया।

———

आँखें बन्द किये, जल्दी मे, बहुत सभव था, केसर होटल के बरामदे को पार कर जाती पर इसी समय दिनेश ने उठकर उसका स्वागत किया। बगल मे उसकी टेबुल पर चाय का सामान और राख से भरी सिगरेट की तश्तरी रक्खी हुई थी जो साबित करती थी कि वह देर से प्रतीक्षा कर रहा है।

उसने उठते हुए कहा—श्रीमती, श्रीमती रामप्यारी, जान पड़ता है आप बीमार हैं।

केसर ने अधीरता से उत्तर दिया—नहीं, नहीं, मुझे ठण्ड लग गई है। मैं सर्दी से काँप रही हूँ, बस। मैं अपने कमरे में जल्दी जाना चाहती हूँ।

दिनेश—सर्दी! ठण्ढ! इस गर्मी की रात में? इसके तो यही मतलब हैं कि आपकी तबीयत ठीक नहीं है या फिर, किसी चीज ने आपको चोट पहुँचाई है।

केसर ने मशीन की तरह जवाब दिया—हाँ, मुझे किसी बात ने चोट पहुँचाई है, तभी मैं अपने कमरे मे पहुँचना चाहती हूँ, जल्दी ही।

दिनेश ने प्रार्थना की—कृपया आप एक प्याला चाय पी लें, ताकि आपको स्फूर्ति मिले, आपके मुख पर रंग चढ़े। जैसी आप दिख रही हैं वह मुझे सहन नहीं होगा।

केसर—यह कुछ नहीं है। लेकिन आप इस समय यहाँ कैसे? यह तो आपका होटल नहीं।

दिनेश ने सहज ही जवाब दिया—मैं आपके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। मैं समझता था कि आप जल्दी ही आवेंगी। मैंने आनन्द के साथ आपको नाव पर जाते देखा था, तभी मेरे मन में उठा कि आपको दुःख होगा और आप उदास, थकी हुई सी लौटेंगी। यही सोचकर मैं यहाँ बैठा रहा कि शायद आपको थोड़ा सन्तोष दे सकूँ।

केसर ने कहा—आप मुझे सन्तोष नहीं दे सकते, धन्यवाद। कोई भी नहीं दे सकता।

एक बार केसर के जी में आया कि दिनेश को छोड़कर चली जाय, क्योंकि आनन्द ने उससे दूर रहने को कहा था। उसने वचन दिया था कि वह ऐसा ही करेगी। लेकिन तुरन्त ही उसमें प्रतिक्रिया जागी। अगर कोई बात आनन्द को नीचा दिखाने की हो तो इस समय वह उसी को करेगी। शायद आनन्द इस बात को जाने भी नहीं या जान भी ले तो विशेष चिन्ता न करे, पर इस समय उसे आनन्द की नापसन्दगी का कोई भी काम करने में बड़ा सुख मिल रहा था। फिर, दिनेश का इस समय का व्यवहार इतना उदार, इतना आकर्षक था कि तुरन्त ही चोट खाये हुए केसर के दिल पर, तमाम क्रोध और घृणा के बावजूद भी, वह विजय पा रहा था। यह सच है कि यदि उसने ज़रा भी [illegible] कोई न बनाया किया तो दिनेश को भी अपना [illegible] [illegible] करने में देर न लगेगी। सभी पुरुष इन मामलों में [illegible] [illegible] पर यदि वह भीतर से बेचैन रहती तो फिर [illegible] न कर सकता। उसने जल्दी से कहा—[illegible] [illegible] [illegible] हुआ है—मुझे [illegible] [illegible] है, यह कोई बात नहीं। [illegible]
[illegible]

बरबस ही केसर, दिनेश द्वारा बढ़ाई हुई, कुर्सी पर बैठ गई।
उसे चाय से घृणा थी। पर इस समय उसने सोचा, शायद इससे
रगों में खून नये सिरे से दौड़ने लगे। दिनेश कहता गया—मैं
अभी थोड़े ही दिनों से आपको जानता हूँ पर यह कह सकता
हूँ कि औरों की बनिस्बत आपकी कीमत मैं ज्यादा आँक सकता
हूँ। आपके गुण और आपका सौन्दर्य्य, सबकी मैं कद्र करता
हूँ। आनन्द के बारे में आपसे मैं कुछ नहीं कह सका। उसके
लिए आपको सावधान करना मेरा काम नहीं था। लेकिन, मेरे
मन ने कहा, आप उसकी जितनी चिन्ता करती हैं उतनी वह नहीं
करता। वह एक न एक दिन आपको चोट पहुँचावेगा। वह
विवाह नहीं करेगा।

केसर ने गर्व से कहा—आप भ्रम में हैं मिस्टर दिनेश!
आनन्द से विवाह करने का मेरा इरादा नहीं है।

दिनेश ने स्वीकार किया—बिलकुल ठीक है। होना भी
न चाहिए। जब आप अभी युवती हैं, सुन्दरी हैं, तब आप उस
जैसे कठोर व्यक्ति से क्यों विवाह की इच्छा करें, जो साधन होते
हुए भी आपके लिए कुछ नहीं कर सकता? लेकिन सभी लड़कियों
की यह इच्छा होती है कि पुरुष उनसे विवाह करना चाहे। यह
स्वाभाविक है, यही सबसे बड़ा उपहार है जो पुरुष दे सकता है।
क्षमा कीजिए। लेकिन मैं देख रहा हूँ कि मिस्टर आनन्द ऐसी
पत्नी चाहते हैं जिसे, ऊब जाने पर, इच्छा करते ही त्याग
सके। श्रीमतीजी, अपने नगर में मैं भी एक हैसियतदार
व्यक्ति हूँ। मैं लाखों का स्वामी हूँ। मैं आपसे विवाह की
प्रार्थना करता हूँ—अनुरोध करता हूँ, इससे मुझे गर्व का
अनुभव होगा।

केसर ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। चुटीले हृदय से,
अपने प्रियतम द्वारा अपमानित वह उसी व्यक्ति के मुँह से विवाह

'नहीं' कहने का केसर का निश्चय डिग रहा था। उसने सोचा, इस उदार और भलेमानस से विवाह करना अच्छा ही होगा। यह मुझे, बम्बई के नारकीय जीवन के बजाय, एक नई दुनिया में ले जायगा। इसके अतिरिक्त, आनन्द के सामने ही, इस युवक से ब्याह कर लेना उस पर कितनी बड़ी विजय होगी! केसर ने पूछा—क्या आप सचमुच .....भाई की तरह रहने को तैयार हैं ?

दिनेश—मैं वादा करता हूँ कि तब तक भाई की तरह व्यवहार करूँगा जब तक आप स्वयं मुझसे कोई और दूसरा व्यवहार न चाहेंगी।

केसर ने जल्दी से जवाब दिया—तब, मैं आपसे ब्याह करने को प्रस्तुत हूँ। जल्दी से जल्दी यह विवाह हो जाना चाहिए। मैं इस जगह से ऊब गई हूँ और इसे छोड़ना चाहती हूँ।

दिनेश—आप देवी हैं। काश, आप जान सकतीं कि आपके इस उत्तर ने मुझे कितना आनन्द, दिया है। कानूनी कार्यवाहियों में थोड़ा समय लगेगा, पर कल ही मैं सब समाप्त करने की चेष्टा करूँगा। उसके बाद हम अविलम्ब यहाँ से चल देंगे। मुझे इस बात की बिलकुल आशा नहीं थी। हाँ, ज़रा आप अपना हाथ इधर करें।

केसर की उँगली में उसने एक कीमती अँगूठी पहना दी। कहा—मैं इसे योंही लेता आया था।

केसर ने अभी थोड़ी देर पहले आनन्द से कहा था कि मैं तुम्हें फिर नहीं देखना चाहती, पर अब उसका निश्चय बदल गया। अब वह चाहती थी कि एक बार आनन्द मेरे सामने आवे और मेरी उँगली में यह बहुमूल्य अँगूठी देखे। यह भी चाह रही थी कि दिनेश के साथ मुझे देखे और तब मैं कहूँ—यह व्यक्ति

तुमसे हजार गुना अच्छा है। मैंने इससे कहा कि मैं भली औरत नहीं हूँ पर इसने मुझे रोक दिया। मैं जो कुछ भी हूँ, यह मुझे प्यार करता है। मेरे अतीत से इसे कोई मतलब नहीं। मैं जल्दी ही इससे विवाह करूँगी, सुखी होऊँगी और तुम्हें बिलकुल भूल जाऊँगी। मैं, इस तरह, बिलकुल बदल जाऊँगी। और तब, हो सकता है, तुमसे इतनी घृणा भी न करूँ।

दिनेश ने केसर को उसके कमरे तक पहुँचाया और तब, दूसरी बार, उसके हाथ चूमे। हाथ अब उतना ठंढा नहीं रह गया था जितना पहले था। सुबह दस बजे फिर मिलने का दोनो ने निश्चय किया और केसर ने उसे अपने साथ नाश्ता करने का निमन्त्रण दिया। उसके जाने पर जब अपना कमरा बन्द करके केसर बैठी तब एक बार फिर उसकी स्थिति की भयङ्करता उसके सामने आ पड़ी। उसका विवाह होगा, दिनेश के साथ उसके घर रहने पर उसकी इज़्जत की जायगी। अगर आनन्द चला भी गया होगा तब भी ब्याह का समाचार तो वह सुनेगा ही। किन्तु एक करोड़पति की पत्नी हो जाने पर भी उसका टूटा हुआ स्वप्न, जो आनन्द को लेकर उसने देखा था, फिर पूरा न होगा। यही सोचती-सोचती वह रात भर जागती रह गई।

× × × ×

अगर केसर जान सकती तो देखती कि आनन्द भी, लज्जा से, मरा जा रहा था। उसका ख़याल था कि केसर अभिनय कर रही है, किन्तु हृदय से वह मानता था कि यह अभिनय झूठ नहीं है। उसकी कहानी सही है। उसने आनन्द को प्यार किया पर उसने केसर को बहुत बड़ी चोट पहुँचाई। यद्यपि परिस्थितियाँ ही ऐसी थीं कि उसने जो व्यवहार किया था उसके अतिरिक्त कुछ और हो ही नहीं सकता था, किन्तु अब उसे पश्चात्ताप हो रहा था। वह तो यही चाहता था कि जिस गन्दे स्थान में केसर लौट जाना चाहती है वहाँ न जाय। साथ ही उसकी यह इच्छा भी कदापि नहीं

थी कि विलास-भवन में दो साल व्यतीत कर चुकनेवाली लड़की के साथ वह ब्याह करे। वह असाधारण थी, यह सही है। प्रकृति ने उसे भली लड़की ही बनाया था, हृदय से वह साफ़ और निष्कलंक थी, यह भी सही है। वह यहाँ रहने में ढोंग नहीं कर रही थी। वास्तव में वह भली बनना चाहती थी। पर यह भी मानना होगा कि यद्यपि वह अपने को परिपाटी-मुक्त व्यक्ति समझता था फिर भी, अपनी तमाम आधुनिकता और उदारता के बावजूद भी, वह अन्ध-परिपाटी-मग्न व्यक्ति था। यह ख़याल ही उसके लिए घिनौना था कि केसर ने सदाचार से रहित हो, [illegible] साल राजरानी के विलास-भवन में व्यतीत किये हैं। उससे [illegible] घृणा होती। कई कई रात केसर के भविष्य की चिन्ता में उसे नींद नहीं आई। पर केसर ने तो आनन्द को कुछ [illegible] नहीं दिया। जब उसने कहा कि मैं आनन्द से [illegible] करना नहीं चाहती तब वह झूठ नहीं बोल रही थी। उसने कहा था कि यदि आनन्द मुझसे विवाह का प्रस्ताव करता भी तो मैं अस्वीकार कर देती क्योंकि अपने अतीत के विषय में वह किसी को धोखे में नहीं रखना चाहती थी।

निःसन्देह उसके अतीत की सारी बातें जानकर, विवाह की [illegible] दूर हो गई थी, फिर भी आश्चर्य है कि आनन्द उसे [illegible] था।

अगर उसने केसर को राजरानी के यहाँ न देखा होता तो [illegible] उससे विवाह का प्रस्ताव कर बैठता—[illegible] न कर सकता। [illegible] लेती जिस पर आनन्द [illegible] में यह [illegible]। दुनिया के [illegible]

। निरुद्ध हो गया। आनन्द
।
कि वह केसर की असली हालत
ोवत से बच गया। उसने मन
किया, बार-बार दुहराया कि
ा अपमानपूर्ण नहीं था। अगर
घृणा थी तो उसे बचने का
वह मन में ही कहने लगा—
था...पर उसकी विचार-धारा
ोक दिया हो। उसका प्रेम!
: होता!
गई। वह सपना देखने लगा।
है जिसके ऊपर एक परकटी,
ाडी देर बाद वह उस तालाब में
ाना में जो हलका कम्पन हुआ,
हो रहा था। उसने आँखें
।
ने पर भारी, किन्तु अकारण,
। आनन्द भी बहुत उदास था।
। वह इस कारण उदास था
उसे अपने जीवन से निर्वासित
ाई चेष्टा नहीं करना चाहता था;
सफल हो जाय, तो भी उसका
ानो के लिए दुःखद ही होगा।
ा दुबारा नहीं देखना चाहती,

आनन्द—मुझे खुशी है।

केसर—और मुझे भी आपसे मिलकर खुशी है। मैं आपको यह बतलाना चाहती हूँ कि कल रात से पुरुषों के प्रति मेरे दृष्टिकोण में परिवर्तन हो गया है। अभी भी एक वीर और साहसी भला आदमी मौजूद है। मैंने उसे धोखा नहीं दिया, मैंने उससे अपनी सच्ची कहानी कहनी चाही पर उसने मुझे रोक दिया। वह मेरे अतीत को नहीं जानना चाहता। उसने मुझसे कहा कि तुम जैसी भी हो, मैं पत्नी बनाने को प्रस्तुत हूँ। वह वास्तविक पुरुष है, औरों से और तुमसे कितना भिन्न।

आनन्द चुपचाप उसकी ओर देख रहा था। वह कहती गई—कल रात को ही वह घटना घटी है। उसने हम दोनों को साथ साथ नाव पर जाते देखा और मेरी प्रतीक्षा में वह होटल में बैठा रहा।

आनन्द—ईश्वर करे, इस प्रणय-व्यापार का अन्त भी सुखद हो।

केसर—निःसन्देह यह सफल होगा। जल्द से जल्द हमारा ब्याह होने जा रहा है, यह अँगूठी देखो।

आनन्द ने आज जैसा कभी अनुभव नहीं किया था। वह चुपचाप यही सोच रहा था कि यह अँगूठी देनेवाला और ब्याह करनेवाला व्यक्ति कौन हो सकता है। यदि केसर ने ही अवसर न दिया होता तो शायद यह बात पूछने का उसको साहस ही न होता। उसने व्यग्य से पूछा—क्या अब तुम्हें मुझमें इतनी कम दिलचस्पी रह गई कि यह भी नहीं जानना चाहते कि वह कौन व्यक्ति है जो मुझे नया जीवन प्रदान कर रहा है?

आनन्द ने कहा—यदि आप बतलाना चाहें तो मैं उस व्यक्ति का नाम अवश्य जानना चाहता हूँ।

केसर—उसके बारे में तुम्हारा खयाल भी न जायगा; क्योंकि तुम उसे पसन्द नहीं करते। तुम्हारा खयाल था कि वह बुरा है

केसर—लेकिन वे वहाँ रहते हैं, उनकी वहाँ इज्जत है, वे लखपती हैं। अगर उन्हे ब्याह न करना होता तो यह अँगूठी ..

आनन्द ने बात काटी—अँगूठी उसके पास मौजूद थी न?

केसर—हाँ।

आनन्द—उसने न जाने कितनी लड़कियो को इसी तरह अँगूठी देकर फँसाया है। फिर उनसे लेकर दूसरो को देता है।

केसर चुपचाप देखती रही। आनन्द कहता गया—अच्छा फन्दा उसने तैयार किया है, पर दोष मेरा है। यदि मैंने तुम्हे चोट न पहुँचाई होती तो तुम कभी उसे न स्वीकार करतीं। शायद तुमने मुझसे बदला लेने की नीयत से ही यह सब किया। लेकिन अब किसी तरह तुम्हे इस शैतान से मुक्त करना ही है। मै उसे, क्षमा करना, आदमी नहीं कह सकता। इसमे शक नही कि उसका मकान है, उसके दोस्त हैं, वह धनी है। किन्तु वह तुम्हे लेकर यात्रा न करेगा। वह केवल भोली और निर्दोष लडकियों को फँसाने के लिए ही यात्रा करता है और मतलब निकल जाने के बाद उन्हे दूर फेंक देता है।

केसर ने अब भी कहा—पर इस बात पर कैसे विश्वास करूँ? तुम्हारे पास इस बात का क्या सबूत है?

आनन्द—कुछ नहीं। कोई लिखा हुआ सबूत मेरे पास नही है, लेकिन मैंने यह सब उन लोगो से सुना है जो उसे जानते हैं।

केसर—अगर वे इतने बुरे हैं तो गिरफ्तार कर लिये गये होते। होटलवाले ही क्यों उन्हे रहने देते?

आनन्द—यदि कोई ऐसा मर्द होता है तो पुलिस के पास जब तक कोई निश्चित सबूत नहीं होता तब तक गिरफ्तारी नहीं की जा सकती। होटल में रहने से तो यों भी कोई रोक नहीं

आनन्द ने हताश होकर कहा—जैसी तुम्हारी इच्छा। अगर वह समझे कि मैंने गलत कहा है तो मेरे ऊपर मुकद्मा चलावे। तुम उससे मिलो, देखो कि यह सब सुनकर वह क्या कहता है! मुझे फिर बताना, वादा करो।

"मैं कुछ वादा नहीं करती।" यह कहकर केसर जल्दी से होटल की ओर चली गई।

केसर—तुमने स्वयं इलज़ाम लगा लिया है। अभी अपनी अँगूठी वापस लो और यहाँ तमाशा मत करो। लोग आ-जा रहे हैं। मैंने निश्चय कर लिया है। मुझे अपने इरादे से कोई नहीं डिगा सकता। तुम तो सबसे बुरे निकले। फिर भी मै तुम्हे वचन देती हूँ, तुम्हारी बात किसी से कहूँगी नहीं।

भोजन का दाम टेबुल पर रख वह दिनेश के उठने के पहले ही उठकर अपने कमरे मे चली गई। सामान उसने पहले से ही बँधवा रक्खा था। कहीं चली जाना चाहती थी, पर कहाँ?

ब्याहे ज्यादा दिनों तक न रख सके। केसर उसे छोड़कर चली जायगी, जब उसे यह विश्वास है कि इच्छा मात्र से वह काफी धन कमा सकती है। धोखा देने के विषय में उसने इतना ही सोचा कि सभी लड़कियाँ प्रलोभन पाकर ऐसा ही करती हैं। ऐसी ही दशा में जब एक दिन एक लम्बा तार राजरानी को मिला तब वह कह उठी—ठीक है, यह तो होना ही था।

तार मे लिखा था—श्रीमतीजी, आप मुझे बहुत बुरी समझती होंगी। इसके लिए मै स्वयं अपने को क्षमा नही कर सकती। मैं जिन्दगी का एक अनुभव करना चाहती थी, वह किया। मुझे जानना चाहिए था कि परिणाम बुरा होगा और हुआ भी। क्या आप मुझे फिर भर्ती कर लेने की कृपा करेंगी? मै अकेलापन महसूस कर रही हूँ और आपसे मिलना चाहती हूँ।—केसर।

राजरानी ने तुरन्त तार से जवाब दिया—चली आओ। तुमने धोखा देकर बुरा किया, पर मैं क्षमा कर दूँगी।

× × × ×

आनन्द ने कठिनाई से अपने को समझाया कि केसर को खुद ही पता लगने देना चाहिए कि दिनेश के विषय मे मेरी बात ठीक है। हाँ, अगर वह न जानना चाहे और समझाने पर भी पागल-पन करे, तो जरूर उसे बचाना होगा।

आनन्द जासूस नहीं था, फिर भी वह उस दिन दो-तीन बार दस बजे के करीब होटल गया, और अन्त मे जब उसने दिनेश को जल्दी से निकलते देख लिया तब समझ गया कि शायद अपने प्रेम में उसे सफलता नहीं मिली। उसकी किसी न किसी बात अथवा हरकत से यह बात शायद केसर को मालूम हो गई कि वह सच्चा नहीं है। उसे दण्ड देने का विचार आनन्द के मन में दृढ़ हो गया।

ब्याहे ज्यादा दिनो तक न रख सके। केसर उसे छोडकर चली जायगी, जब उसे यह विश्वास है कि इच्छा मात्र से वह काफी धन कमा सकती है। धोखा देने के विषय में उसने इतना ही सोचा कि सभी लड़कियाँ प्रलोभन पाकर ऐसा ही करती हैं। ऐसी ही दशा मे जब एक दिन एक लम्बा तार राजरानी को मिला तब वह कह उठी—ठीक है, यह तो होना ही था।

तार मे लिखा था—श्रीमतीजी, आप मुझे बहुत बुरी समझती होगी। इसके लिए मैं स्वयं अपने को क्षमा नही कर सकती। मैं जिन्दगी का एक अनुभव करना चाहती थी, वह किया। मुझे जानना चाहिए था कि परिणाम बुरा होगा और हुआ भी। क्या आप मुझे फिर भर्ती कर लेने की कृपा करेंगी? मैं अकेलापन महसूस कर रही हूँ और आपसे मिलना चाहती हूँ।—केसर।

राजरानी ने तुरन्त तार से जवाब दिया—चली आओ। तुमने धोखा देकर बुरा किया, पर मैं क्षमा कर दूँगी।

× × × ×

आनन्द ने कठिनाई से अपने को समझाया कि केसर को खुद ही पता लगने देना चाहिए कि दिनेश के विषय मे मेरी बात ठीक है। हाँ, अगर वह न जानना चाहे और समझाने पर भी पागलपन करे, तो जरूर उसे बचाना होगा।

आनन्द जासूस नहीं था, फिर भी वह उस दिन दो-तीन बार [illegible]स बजे के करीब होटल गया, और अन्त मे जब उसने दिनेश को [illegible]ल्दी से निकलते देख लिया तब समझ गया कि शायद अपने प्रेम [illegible]ं उसे सफलता नहीं मिली। उसकी किसी न किसी बात अथवा [illegible]रकत से यह बात शायद केसर को मालूम हो गई कि वह [illegible]धा नहीं है। उसे दण्ड देने का विचार आनन्द के मन में [illegible]ढ़ हो गया।

दूसरे दिन आनन्द ने केसर का पता लगाया। होटलवालों से यही पता लगा कि वह बम्बई गई है। कहाँ? यह कोई नहीं जानता। वह तुरन्त समझ गया कि वह कहाँ जा सकती है। राजरानी का विलास-भवन उसके नेत्रों के सामने स्पष्ट हो गया। एक दिन या एक रात भी वह केसर को वहाँ नहीं बिताने दे सकता। वह तुरन्त बम्बई के लिए रवाना हो गया।

× × × ×

लौट आने के लिए राजरानी का तार पाने से केसर को प्रसन्नता होनी चाहिए थी, किन्तु आश्चर्य है कि उसे तनिक भी प्रसन्नता नहीं हुई। अब उसकी अन्तरात्मा चिल्ला रही थी—आनन्द! ओह, आनन्द! मैंने तुम्हें विदा कर दिया? क्यों नहीं तुम्हें जीवन के साथ ही रख रखा, चाहे फिर उसके लिए मुझे कुछ भी मोल क्यों न चुकाना पड़ता? जब तुमने मुझे राजरानी के यहाँ दूर ही किया था तब तुमसे यह आशा रखना कि तुम मुझे ऊँची नजर से देखोगे, मेरी बेवकूफी थी।

लेकिन अब क्या हो सकता है। अपने फन्दे में वह स्वयं

राजरानी—ओह, जान पड़ता है आपने उसे अभी तक याद
ग है!

आनन्द—जी हाँ, मैं उसे जानता हूँ। मेरा ख़याल है,
के यहाँ के जीवन के लिए वह काफी कमउम्र थी।

राजरानी—जी हाँ, वह अभी कमसिन और भोली ही है,
ल से सोलह वरस की दिखती है। पर है अट्ठारह
की।

आनन्द—होगी, पर आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।
वह इस समय यहाँ पर है?

राजरानी थोड़ी देर तक कागज देखती रही, फिर कहा—
ड़े दिनो के लिए वाहर गई थी। आज शाम तक वापस
कती है। आपके साथ मैं कल उसे मिला सकती हूँ। आज
की हुई होगी, क्यो न? तो कल का ठीक रहा!

ानन्द ने कहा—धन्यवाद। मैं कल आपको सूचित
।

जरानी ने उठते हुए कहा—महाशय, वहुत सम्भव है, केसर
ी व्यस्त हो जाय। फिर भी मैं आपके लिए समय
ने की पूरी चेष्टा करूँगी। यह रहा मेरा कार्ड। इस पर
ीफोन नम्बर भी दिया हुआ है।

ानन्द चला गया। राजरानी ने मन ही मन कहा—सुन्दर
ायद अव मुझे इसका नाम भी याद आ रहा है! शायद
वक है, दो-एक किताबें लिखी हैं, मशहूर लेखक है।
ी इसके पास होगा। पर उम्र अभी ज्यादा नहीं है।
खा जायगा।

के वाद से आनन्द वरावर स्टेशन पर ही जमा रहा। हर
ने देखी। निराश होकर जा ही रहा था कि केसर प्लैट-
एक ट्रेन से निकलती दिखाई दी। वह फाटक से वाहर

निकल ही रही थी कि आनन्द ने आगे आकर रोका—क
रही हो ? फिर राजरानी के विलास-भवन के उसी ना
जीवन में ?

काँपते हुए, सहमते हुए, केसर ने उत्तर दिया—
कैसे जाना ?

आनन्द—मैंने राजरानी से तुम्हारे बारे में पूछा। उसने
कि तुम शाम को आ जाओगी। तब से यहीं तुम्हारी प्र
रहा हूँ। केसर, तुम फिर कैसे वहाँ जा रही हो ? तो
तुमसे कैसे बना ?

केसर पीली पड़ गई। स्टेशन की रोशनी में उसका
शरीर नरक से चमक उठा। उसने हकलाते हुए कहा—

आनन्द—नहीं, मै तुम्हे नरक से दूर करूँगा। केसर, तुमने सोचा था कि स्त्री तुम्हारी सहायता कर सकती है और मैं तुम्हें नरक की ओर ढकेल रहा हूँ। तुमको मेरी परख करनी चाहिए थी। तुमने कहा था कि मुझे प्यार करती हो, फिर भी मैंने तुम्हे क्यो चली जाने दिया? मै शैतान था, पर अब समझ गया हूँ। मुझे क्षमा करो। मैं भी तुम्हे प्यार करता हूँ। मुझसे विवाह कर लो केसर!

केसर—ओह, यह नहीं, यह नही। केवल उन्माद में तुम ऐसा कह रहे हो। पर ईश्वर को धन्यवाद है कि तुम्हारा आदर्श फिर मेरे मन मे वापस आ गया है। इतने से ही मुझे सन्तोप हो जायगा।

आनन्द—पर मुझे तो इतने से ही सन्तोष न होगा। मैं तुम्हे पत्नी के रूप मे सदैव अपने साथ देखना चाहता हूँ। मैं तुम्हारी रक्षा करना चाहता हूँ। भाग्य-दोप से चाहे जो हुआ हो, पर मन से तुम्हारा चरित्र निष्कलंक और स्वच्छ है। अगर तुम्हे मुझसे प्रेम है तो मुझे अवसर दो केसर।

केसर थोडी देर आनन्द की ओर देखती रही और कुछ सोचती रही। फिर कहा—आनन्द, तुम्हे प्यार करती हूँ, यह मेरे कहने की बात नही है। अगर तुम अब भी चाहते हो तो मैं व्याह के लिए तैयार हूँ।

आनन्द—चाहता हूँ, चाहता हूँ रानी, पर पहले की तरह नहीं। तुम्हारा वह नन्हा सा अतीत जीवन अब मै भूल चुका हूँ केसर। तुम मुझसे भी सौगुनी अच्छी हो। तुम ऐसी हो जिस पर धूल पड़ ही नहीं सकती। मैं तुम्हे ले चलकर अभी एक ऐसी स्त्री के पास रक्खूँगा जिसके मृत पति मेरे बड़े मित्र थे। जब तक विवाह की कार्यवाहियाँ नहीं पूरी हो जाती तब तक वहां रहो। यही मै चाहता हूँ।

केसर—लेकिन, मेरे वे दो भयंकर वर्ष जो उस नरक में हैं। हम लोगों के जीवन के बीच में वह खाई सदैव रहेगी।

आनन्द—नहीं। अब तुम उस आग से बाहर निकल हो। उन्हें मैं भूल गया हूँ, तुम भी भूल जाओ। अगर चाहती हो तो भूलना असंभव नहीं है।

केसर—मैं तुम्हारी पूजा करती हूँ। ओह, दुनिया कि आकर्षक है, कितनी सुन्दर! स्वर्ग है यह संसार।

और मन में कहा—और, इस बार, नरक से यह नि हे भगवन्!

चकले की रानी

१

'मुझे अपने इस जीवन पर लज्जा नहीं है। आज तक मैंने कभी अपने से घृणा न तो की और न आगे करूँगी।'—सरयू ने मुझसे एक बार कहा था।

उसके पिता, उसने मुझे बताया था, एक व्यापारी थे और उनके पास काफी रुपया था। उसकी माता अत्यन्त सुन्दर थी। बम्बई में वह पैदा हुई, और बारह बरस की अवस्था में एक धार्मिक स्कूल मे पढ़ने के लिए भेजी गई, किन्तु वहाँ साल भर से ज्यादा न रह सकी। स्कूल-अधिकारियों ने जिस समय उसे निकाला, कहा कि इस लड़की मे दुनिया भर की बुराइयाँ हैं और यहाँ इसके रहने से अन्य बालिकाओं की पवित्रता पर धब्बा लगने का अन्देशा है।

'क्या मै बारह बरस की उम्र मे ही इतनी पतित हो गई थी? मुझे आश्चर्य है।'—उसने कहा था।

स्कूल मे उसने सुना—भगवान् भी कोई चीज़ हैं, स्वर्ग-नरक भी कहीं है। पर उसका विश्वास इन पर न जमा। उसने इन्हें समझने की चेष्टा भी नही की। उसने स्वीकार किया था कि 'अन्तरात्मा' नाम की वस्तु उसके पास नहीं थी।

लकिन क्या केवल इसी लिए उसे जीवन भर दोषी ही ठहराया जा सकता है? वह असाधारण सुन्दरी नहीं थी, किन्तु उसकी आँखे बहुत आकर्षक थीं। उनमें मोहनी थी। जान पड़ता था, वे अन्तर्भेदिनी थीं। उसकी माँ की आँखें भी उसी जैसी थीं, लकिन उसने अपनी माँ को कभी प्यार नहीं किया।

की कि उन्नीस वर्ष की आयु में वह पक्की दुश्चरित्रा और चरम सीमा की कामोन्मादिनी बन बैठी। साथ ही एक बात और हुई। इसी समय उसके मन मे यह लालसा बलवती हुई कि वह असाधारण धनी हो, ससार के धनियों को सिरमौर! यही उसके जीवन का लक्ष्य हो!

लेकिन कैसे? उपाय उसके सामने था। इसी उपाय से अन्य बहुत से व्यक्ति आनन्-फानन् धनी बन गये हैं। वह उपाय उसे पसन्द भी आया; क्योंकि यह टेढा था और नीचता का था। उसकी विकृत भावना के अनुकूल था।

एक युवती धनी विधवा ने, नगर के सबसे शानदार होटल के दो-तीन कमरे लेकर, उन्ही दिनों, रहना शुरू किया। छोटे नगरो में ये बाते बहुत जल्द फैलती हैं। एक स्त्री, जो अभी सुन्दरी युवती है और धनी है वो अकेली आकर कहीं ठहरे! लोग भला आश्चर्य क्यों न करें! उसका नाम था श्रीमती सौदामिनी। जब वे होटल मे आतीं, लोग काना-फूसी करने लगते। और कुछ रहस्यमय ढंग से सिर हिलाते। लेकिन निश्चित बात कोई कुछ न कह पाता। वास्तव मे कोई उनके विषय में कुछ जानता भी न था। थोडे से व्यक्ति ऐसे थे जो सौदामिनी के व्यक्तिगत जीवन से ठीक-ठीक परिचित थे। सरयू भी उन थोड़े से व्यक्तियो मे थी। उसने किसी तरह यह जान लिया था कि सौदामिनी क्या करती है, उसके पास इतना धन कैसे आया, वह अपना समय कैसे व्यतीत करती है। तभी वह उससे मिलना भी चाहती थी। उस दिन से वह प्रतिदिन होटल जाती और सौदामिनी से मिलने की प्रतीक्षा मे बैठी रहती। तीन दिन इस तरह करने के बाद उसकी इच्छा पूरी हुई। भोजन के कमरे मे, उसकी मेज के पास आकर, सौदामिनी ने स्वयं कहा—माफ़ कीजिए, और कहीं स्थान नहीं है। यहीं बैठ जाऊँ तो कोई हर्ज है?

वह यह भी सोच चुकी थी कि किसी दिन वह गाँव का घर, जिसे महल कहना उपयुक्त होगा, मेरा ही हो जायगा। उसने अपनी यह कामना पूरी भी कर ली। पर वह दूसरी ही कथा है, जाने दें।

सड़क के किनारे स्थित उस छोटे स्टेशन पर जब सौदामिनी और सरयू उतरीं तब सरयू ने आश्चर्य से देखा कि जगह बहुत साधारण है। और कोई यात्री उस स्टेशन पर उतरा भी नहीं, मानो आसपास आदमियों की बस्ती ही न हो। स्टेशन से लगभग पन्द्रह मील की दूरी समाप्त कर जब अँधेरा होते-होते गाँव के घर पर पहुँची तब एकाएक जैसे घनघोर भय ने सरयू को घेर लिया। एक अपरिचित नारी के हाथों मे अपने को बिलकुल छोड़कर क्या उसने ठीक किया है? और अब यदि वह जाना भी चाहे, तो बहुत प्राचीन इन ईंटों की बनी हुई ऊँची धुँधली दीवालों को लाँघकर, बिना गृह-स्वामिनी की आज्ञा अथवा जानकारी के, जा ही कैसे सकेगी?

अँधेरा घना हो रहा था पर प्रकाश का कहीं नाम नहीं। सहसा सौदामिनी ने कहा—बहन, तुम्हे यहाँ पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता है। यहाँ मै तुम्हे हमेशा ख़ुश रखने की चेष्टा करूँगी।

वह यहाँ कितनी ख़ुश रह सकेगी, यह तो वही जानती है। सौदामिनी का मतलब क्या है? क्या सरयू को हमेशा यहीं रहना होगा। एक विचित्र सी औरत ने दरवाज़ा खोला। वह एक बार, सरयू की ओर देखकर, रहस्य-भरी मुसकराई। सरयू ने मुझसे कहा था कि उस मुसकराहट पर उसे घृणा हुई। ऐसी मुसकराहटों का अर्थ वह जानती थी। सौदामिनी उसके कमरे तक उसे पहुँचा आई। दुतल्ले पर यह कमरा था। इसमें एक पलँग, जिस पर दो व्यक्ति आसानी से सो सकें, बिछा हुआ था। कुछ चित्र टँगे हुए थे। कमरे का वातावरण दम घुटाने के लिए पर्याप्त था।

पहनने का एक वस्त्र बिस्तर पर पड़ा हुआ था। उसका बाकी सामान आलमारी में और टेबुल पर रख दिया गया था।

सौदामिनी ने कहा—कल तुम्हें एक नौकरानी भी मिल जा[illegible] इस वक्त कोई खाली नहीं है।

रात का खाना भी दोनों ने अकेले ही खाया। केवल [illegible] ही सामने आईं। किन्तु उनकी विचित्र मुखाकृतियाँ [illegible] उसे भी अच्छी न लगीं। यद्यपि थीं सभी सुन्दर किन्तु न जाने [illegible] की सब बहुत उदास, बहुत थकी हुई, जान पड़ती थीं। [illegible] कोई किसी से बोलती थी, और न किसी के चेहरे पर [illegible] हँसी मुसकराहट आई। ऐसा जान पड़ता था, किसी [illegible] अज्ञात वस्तु से वे बुरी तरह भयभीत हों। ज्योंही खाना [illegible] समाप्त हुआ और सब दासियाँ हट गईं तब सौदामिनी ने [illegible] से कहा—प्यारी बहन! मैं समझती हूँ, तुम यहाँ सुखी होगी। [illegible] विश्राम [illegible]।

वैठ गई और गहरी साँसे लेते हुए, कान लगाकर सुनने लगी। आवाज बन्द हो गई थी। किन्तु कुतूहल ने सरयू को उठने के लिए बाध्य किया। वह झपटकर पलँग से उतरी और द्वार के पास जाकर उसे धीरे से खोला। सुनने की फिर चेष्टा की, किन्तु अब सर्वत्र मृत्यु की सी नीरवता व्याप्त हो गई थी। उसे यह दृढ़ निश्चय था कि उसने एक चीत्कार सुना है। लाचार, धीरे-धीरे उसने द्वार बन्द कर दिये और पलँग पर आकर पड़ रही।

सौदामिनी बीच-बीच मे ऊटपटाँग बातें बतलाती जाती थी जिनकी ओर सरयू का जरा भी ध्यान नहीं था। सौदामिनी ने कहा--उत्तर और पश्चिम के कमरे मै सदा बन्द रखती हूँ। यहाँ बैठना-उठना होता नही। वास्तव मे ये एक भार हैं।

मौक़ा देखकर सरयू ने पूछा—सबसे नजदीक यहाँ कौन सा कस्बा है?

'यहाँ पास कोई कस्बा नहीं है, और सबसे नजदीक का गाँव यहाँ से सात मील दूर है।'—सौदामिनी ने तुरन्त उत्तर दिया।

तो वह उत्तर और पश्चिम का हिस्सा भार है! सरयू मन ही मन हँसी। वह जानती थी। वास्तव मे वह बहुत अधिक जानती थी, जिसे सुनकर शायद सौदामिनी को आश्चर्य होता। अच्छा, तो उस 'भार' बने भाग का रहस्य भी वह जल्द ही जान लेगी। उसे आजीवन इस बात का गर्व रहा कि जिस वस्तु को जानने की उसने ठान ली उसे जानकर ही छोड़ा।

इसके बाद तीन दिन और बीते। कोई नई बात नहीं हुई। इन दिनो सरयू लगभग अकेली ही रही। यद्यपि सौदामिनी कभी कभी दिखाई पड़ जाती थी, किन्तु अधिक देर तक वह रहती नहीं थी। दिन को वह कहाँ रहती है, यह सरयू नहीं जान सकी। घर पर ही रहती है, या दीवालो से घिरे उस बाड़े में रहती है, या बाहर मैदान मे जाती है या उस रहस्यमय उत्तर पश्चिम के 'भार' वन भाग मे उसका दिन बीतता है, सरयू यही आश्चर्य करती रही।

और यद्यपि सरयू लगभग बिलकुल अकेली ही छोड़ दी गई थी, फिर भी वह जानती थी कि उस पर नजर रक्खी जा रही है, उसकी प्रत्येक गति-विधि पर लक्ष्य किया जा रहा है। उस बाड़े का प्रवेश-द्वार पाने की उसने तीन बार चेष्टा की, किन्तु तीनो ही बार किसी न किसी नौकर के सामने पड जाने से उसकी आशा पूरी नहीं हुई। नौकर उससे बहाना करता कि उधर न जाय,

का कुतूहल उसे बहुत हुआ, किन्तु दबा गई। कभी वह यह जान लेगी, पर आज यह बिलकुल असम्भव है। लौटने के लिए घूमने पर उसने देखा, ठीक सामने सौदामिनी खड़ी है।

वह इस समय असीम सौन्दर्यमयी लग रही थी। आँखो मे अजीब चमक भरकर उसने कहा—तो तुम रास्ता भूल गई या नींद मे ही चल रही हो?

उसने मुसकराकर सरयू के गले में हाथ डाल दिये। सरयू को लगा कि उसके हाथ काँप रहे हैं। उसने यह भी समझ लिया कि यह सौदामिनी का वास्तविक प्रेम नहीं, प्रेम का अभिनय है। सौदामिनी ने फिर कहा—मुझे आश्चर्य है, तुम जाग कैसे पड़ीं, और इधर कैसे आ गई?

सरयू जान गई कि बहाना कुछ न चलेगा। सौदामिनी की आँखो मे सीधे देखते, उसने कहा—मैं सच कह रही हूँ। मैं जाग पडी और गाड़ियो के चलने की आवाज़ सुनी। मै बचपन से ही जिज्ञासु हूँ। मेरे इसी स्वभाव ने मुझे इस समय अत्यन्त कुतूहली बना दिया। मैं देखना चाहती थी कि बात क्या है। मैं अपने कमरे के बाहर निकल आई और इन बरामदो मे से होते हुए—जिन्हे मैंने समझा कि उसी तरफ गये हैं जहाँ आपके मिहमान हैं—मै समझती हूँ वे आपके मिहमान ही हैं—इस द्वार के पास आ गई जो मुझसे खुल नहीं रहा है।

इस पर सौदामिनी बुरी तरह हँसी, जिसने सरयू को चौंका दिया। फिर, क्षण भर रुककर, बोली—लेकिन मैं तुम्हे अपने मिहमानो से मिलाऊँगी। उन्ही से मिलाने के लिए तो मैंने तुम्हे यहाँ लाकर रक्खा है। मैं थोड़ा सा समय और चाहती थी। फिर भी, मै जानती हूँ, जो कुछ तुम देखोगी उससे तुम्हारा कुतूहल शान्त हो जायगा। विकट हँसी वह फिर हँसी और बोली—एक मिनट के लिए पीछे घूमो।

घटनाओं को सोचकर देखना चाहा, सौदामिनी का उसके साथ उस रास्ते जाना, वह अठपहला कमरा, उसका पर्दे के दूसरी ओर जाना, इतना तो वह याद कर सकी, किन्तु इसके बाद सब कुछ अस्पष्ट था और मस्तिष्क बिलकुल शून्यवत्। किन्तु बिलकुल शून्य नहीं, उसकी क्षीण स्मृति में एक पुरुष मूर्ति मँडरा रही थी। उसकी आकृति तो उसे याद नहीं, किन्तु लम्बा वह था, और हाँ, कुछ-कुछ पहचाना हुआ-सा। उससे सरयू को डर भी लगा था। उसने जबर्दस्ती सरयू को पकड़ लिया था और अनुचित व्यवहार किया था और सौदामिनी वहाँ उपस्थित थी और उस व्यक्ति को सहायता दी थी। उसने यह भी सोचकर देखा कि उसे कुछ पीने को दिया गया था जिसे वह पीना नहीं चाहती थी और उसे गले से नीचे उतारने के लिए उसको यातनाएँ दी गई थीं... .. वह कोई दवा ही थी, उसने सोचा। वह काँप उठी। यह सब एक भयकर स्वप्न सा था। तब यहाँ आकर रहने के लिए, सौदामिनी से जान-बूझकर परिचित होने के लिए, उसने अपने को धिक्कारा।

सहसा वह चौंक उठी। यह तो वह दूसरे ही कमरे में है, पलँग भी दूसरा है। सब कुछ उसके कमरे से भिन्न है। बिछौने पर वह घूमी, ताकि चारों ओर देख ले।

जो कुछ उसने देखा, उससे वह हाँफने लगी। पलँग के पास, मुसकराता हुआ, एक ऐसा व्यक्ति बैठा हुआ था जिसे कभी वह अच्छी तरह जानती थी।

'तुम भूल रही हो। मैने ही तुम्हे सौदामिनी के बारे मे पहले बताया था। तुमने भी ऐसी ही बनना चाहा था। अब भी चाहती हो धनी बनना, धनी ! तुमने यही कहा था।'

वह विचलित हो उठी। पूछा—मै यहाँ से कैसे भाग सकती हूँ ?

'असम्भव है।'—उसने हँसकर कहा।

'लेकिन मुझे जाना ही होगा, जाना ही होगा।'

सुन्दर ने आगे झुककर उसे चूम लिया, फिर कहा—तुम्हारे ओठ पहले जैसे ही मधुर है। हाँ, शायद तुम भाग सको, लेकिन अगर यह हुआ तो मेरे द्वारा ही होगा, यह याद रखना। सौदामिनी तुम्हे हमेशा यहीं रखना चाहती है, जैसे वह औरो को रखती है। मकान के ये दोनो हिस्से हैं, इन्हे वह जेलखाना कहती है।

'हाँ, यही मैने भी सोचा था कि वह मुझे यहीं रखना चाहती है, लेकिन मैने इसे देर मे अनुभव किया। लेकिन तुम यहाँ क्यो आये सुन्दर ?'

'क्यो आया ? क्योकि मै इस काम मे उसका साझीदार हूँ।'

'तुम ? लेकिन कैसे ? उसके साझीदार ?'

'क्या तुम समझ नही सकतीं ?'

'मुझे सब बताओ सुन्दर। मै जानना चाहती हूँ कि कल रात-वाले वह व्यक्ति कौन थे, कहाँ से आये थे ?'

'सौदामिनी के मिहमान, सब पुरुष थे। वे कौन थे ? एक से एक, नगर के अमीर-उमरा, सभ्य कहानेवाले और पतित। और जो लड़कियाँ थीं वे यही, उसी जेलखाने मे, बन्द रहती है। वे यहाँ से तब तक नहीं निकल सकेंगी जब तक सौदामिनी या मैं न चाहूं।'

'तो तुम लोग ऐसे व्यापार मे साझीदार हो ?'

'हाँ, यही व्यापार है और काफी आमदनी का है।'

'मुझे उन लडकियो के बारे मे और कुछ बताओ। यहाँ कौन लोग आते है ? क्या सौदामिनी घर में ही है ?'

'जहाँ उनकी जरूरत हो। कुछ गुप्त व्यक्तियो के हाथ बिक जाती हैं, कुछ ससार के भिन्न भिन्न देशो मे भेज दी जाती हैं। बडी आमदनी का व्यापार है, किन्तु इसमे धूर्तता, चालाकी और विचारशीलता की आवश्यकता है। खर्च भी बहुत पडता है। कुछ व्यक्तियो का मुँह बन्द रखने के लिए घूस देनी पडती है, फिर भी यह काम आजमाने लायक है। तुमने एक बार कहा था कि तुम व्यापार कर सकोगी। तुमने यह काम उठाना भी चाहा था। चालाक भी तुम काफी हो। यदि हम रुपये से तुम्हारी सहायता करे तो क्या हमारे साझे मे यह काम कर सकोगी?'

सरयू ने जवाब नही दिया। वह तकिये के बल पड़ी विचार कर रही थी।

'मुझे विश्वास है, तुम्हे इस काम मे सफलता मिलेगी। हमारी साझीदार क्यों नही हो जाती? हमे एक तीसरे साथी की जरूरत है, किन्तु इस गुप्त काम के लिए विश्वसनीय साझीदार मिलना कठिन है। सौदामिनी तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानती— तुम्हे विधवा और भली लड़की समझती है शायद।'—सुन्दर कहता गया।

'विधवा? हाँ, वह यही जानती है।'

'तब मै उससे यह कह सकता हूँ। मैं समझता हूँ, वह इस बात को जानकर खुश होगी और तब तुम्हे यहाँ से भागने की भी जरूरत न रह जायगी। तुम्हे स्थान-स्थान पर दौरा करना होगा, बढ़िया से बढ़िया होटलो मे तुम ठहरोगी, अच्छे लोगो से मिलोगी और तुम्हारी मादक आँखो के बल पर यह सब हो जायगा। मै यह भी जानता हूँ कि तुम समझदार हो। यहाँ कुछ दिन रहकर हमारे काम करने का ढँग सीखो। ससार मे कहाँ कहाँ हमारे कौन-कौन एजेंट हैं? वे किस नाम से इस काम को करते हैं? उनके तौर-तरीक़े, किन लोगो से बचना चाहिए—

मैंने उससे बहुत बातें भी की हैं। वह अभी बहुत भोली जान पडती है, किन्तु मै समझती हूँ कि बात ऐसी है नहीं। कम से कम, उसकी असाधारण बुद्धिमत्ता और काम-चेतना, चातुरी और उसकी वे जादूभरी आँखें कहती हैं कि वह भोली नही, और चाहे जो हो। इतनी कम आयु में दुनिया का उसे जितना ज्ञान है और जीवन के प्रति उसका जो दृष्टिकोण है वह आश्चर्यजनक है। मै ख़ुद समझती हूँ, वह एक सफल साझीदार होगी। मैं उससे आज बातें करूँगी। यदि वह तैयार हो जाय तो पहले उसे उन तीन लडकियो का भार दिया जाय। वह कामभर की अँगरेजी भी जानती है, इसलिए पुलिस का भी कोई डर नहीं। वह उन लड़कियो की गृह-शिक्षक बनकर साथ लगी रहेगी। हाँ, कल रात की बात बताओ। कल की बात के बारे में वह क्या सोचती है ? तुमसे उसने क्या कहा ?'

'बहुत-सी बातें वह भूल गई है, वह दवा शायद बहुत कड़ी थी। हाँ, तुम्हारा विचार ठीक है......।'

अब, सरयू की गिनती सौदामिनी के अन्त:पुर की लडकियो मे की जाने लगी। वहाँ लगभग पन्द्रह बीस लड़कियाँ थीं, और सब काम सुचारु रूप से होता था। अगर कोई नया आदमी वहाँ आता, जिसे घर के उत्तरी पश्चिमी भाग का रहस्य नहीं मालूम था और जो यह नहीं जानता था कि वहाँ क्या होता है, तो वह इस बात मे सन्देह नही कर सकता था कि यह मकान किसी धनी स्त्री का है जो आराम के साथ इस गाँव के घर में निरुद्देश्य जीवन बिता रही है।

सौदामिनी यो अनुदार नहीं थी। हाँ, हृदय नाम की वस्तु का उसमें सर्वथा अभाव था और उसके पेशे के लिए यह स्वाभाविक था। वहाँ जितनी लड़कियाँ एकत्र थीं, सब अलग-अलग स्वभाव और जाति की थीं। अत. नियंत्रण जरूरी था और यह काम दो

रहने को निमन्त्रित किया। वे आई और.. .. . कुछ को उन्ही युवको ने धोखा दिया। विवाह का वचन देकर उनके शरीर से मनमाना लाभ उठाया, और जब शीघ्र ही वे जान गई कि क्या होनेवाला है और फिर घर लौट जाने की सोचने लगी, तभी सहसा उनसे एक स्त्री की भेंट हुई जिसने उनसे सहानुभूति दिखाई। उसने कहा कि युवावस्था मे उसने भी ऐसे ही धोखा खाया था, लेकिन घबराने की जरूरत नही। क्यो न वे चलकर उस स्त्री के गॉव पर तब तक रहे जब तक यह सब झगडा समाप्त न हो जाय, तब सोचकर कोई रास्ता निकाला जायगा। बेचारी युवतियॉ, भुलावे मे आकर, चली आती। कहना न होगा कि वे युवक भी सौदामिनी के एजेंट होते थे और वह स्त्री होती थी स्वयं सौदामिनी।

इसी तरह की और कितनी कहानियॉ थीं। कितना सहल यह सब था—लड़कियो के भाग्य के साथ यह खिलवाड़ कितना आसान था। प्रत्येक कहानी उसके मन पर जमती गई। दिन-दिन उसकी तृष्णा बढ़ती गई और इस घर मे आकर बसने के लिए उसने अपने भाग्य को सराहा।
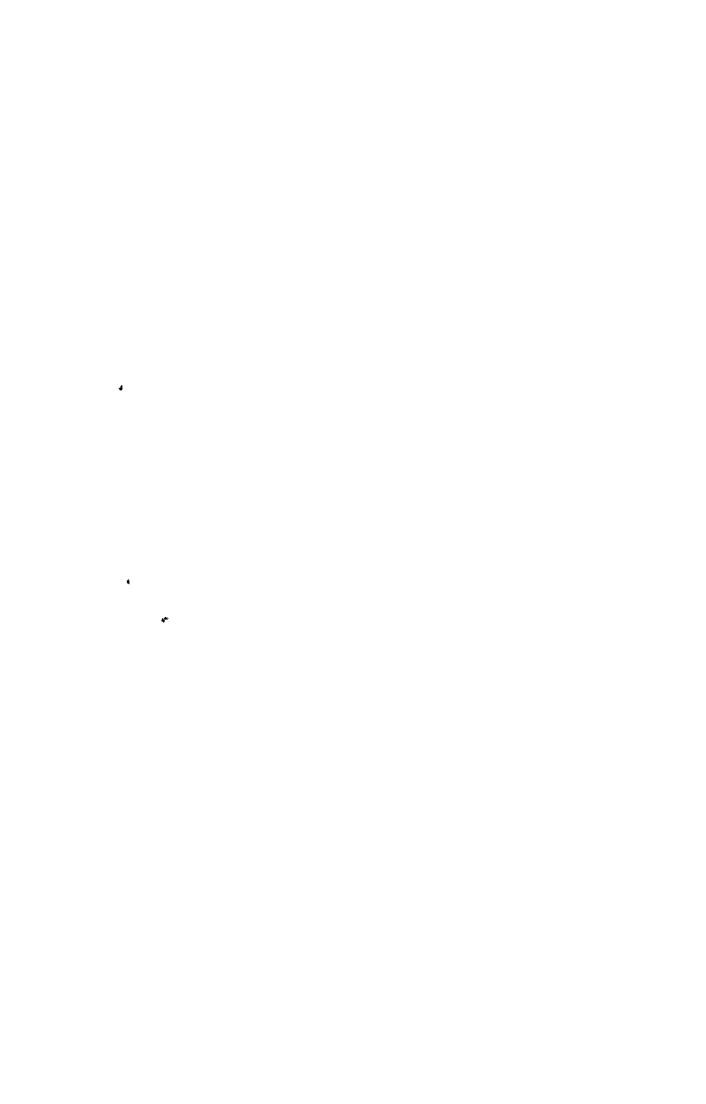
बाद सरयू ने कहा—सुन्दर ! इसका मतलब यह है कि अब हम तुम, दो ही साझीदार रह गये। सौदामिनी के अन्य सम्बन्धी भी तो होंगे। वे कहाँ हैं ?

'सम्बन्धी सब दूर के हैं। उनसे वह कोई सरोकार भी नहीं रखती थी। वे भी इसका नाम नहीं लेते थे। उसकी तमाम सम्पत्ति तमस्सुक के रूप मे है और वह आलमारियों मे बन्द है। ताली मेरे पास है। उसको सबसे अधिक मुझ पर विश्वास था।'

'वह तमस्सुक अब कौन रक्खेगा ?'

'मैं।'

'सब के सब ?'

'तुमसे बतलाने मे कोई हानि नहीं है सरयू। उसके पास बहुत सम्पत्ति थी। बैंक में तो थोड़ी ही है। बैंकों पर उसको विश्वास नहीं था।'

'किन्तु कोई तो उस सम्पत्ति का हकदार होगा ? कोई वसीयत उसने नहीं की ?'

'नहीं, कोई वसीयत नहीं है। उसकी और सब सम्पत्ति कहाँ है, यह भी कोई नहीं जानता। रहा यह मकान, सो हम दोनों का सम्मिलित था। अब मेरा हो गया।' यह कहकर वह रुका। फिर ठंडी साँस लेकर कहा—ओह, पर कितनी भयङ्कर उसकी मृत्यु हुई है। ईश्वर की इच्छा !

सरयू गरज पड़ी—सुन्दर ! बच्चे न बनो। ईश्वर की इच्छा ! ईश्वर। इन पर कौन विश्वास करता है ?

इस घटना के आठ महीने बाद सरयू मुझसे मिली थी—तब जब वह पक्की व्यवसायी हो गई थी।

—

रकमें देकर इन्हे खरीदते थे। कुछ व्यक्ति सप्ताह या महीने के लिए इन अभागी युवतियो के कौमार्य और सतीत्व को खरीदते थे। दाम नकद लिया जाता था। सरयू को खरीदारो का भरोसा नहीं था।

किन्तु यह सब था वडा कठोर, अमानुषिक और निर्दय व्यापार। अपने सैकड़ो शिकारो, भोली-भाली लड़कियो के वारे मे वह ऐसे वात करती जैसे कोई व्यापारी अपने माल की वात करता है। लेकिन वह विलकुल हृदयहीन भी नहीं थी। कई अवसरो पर उसने दान के रूप मे काफी चन्दा दिया था। उसने मुझे अपने व्यापार के संरक्षको के नाम भी वताये थे। कुछ उसमें सम्भ्रान्त व्यक्ति थे, कुछ शोहदे। समाज मे भले आदमियों के वीच वे देखे जाते थे। मुझे आश्चर्य होता था कि यदि लोगो को यह मालूम हो जाय कि जिन वड़े और चरित्रवान् व्यक्तियों की वे इतनी श्रद्धा कर रहे हैं, जो ऊपर से नैतिकता और आदर्शवादिता का इतना वखान करते हैं, जो पराई स्त्रियों को माँ-वहन समझने का दम भरते हैं, वे भीतर से इतने पतित, दुश्चरित्र और ढोगी हैं तो वे क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे। इन पतितों और ढोगियों की सख्या कितनी अधिक है, कितनी विस्तृत है, फिर भी भारतवर्ष को अपनी सभ्यता और संस्कृति पर नाज है, गर्व है! दुनिया मे ऐसे ो लोग हैं जो नारी-शरीर के इस व्यापार की वात सुनकर भी ृणा से काँप उठेंगे, यह व्यापार करनेवालो को वे 'राक्षस' कहेंगे ो ठीक भी है। किन्तु यदि नारी-शरीर के प्रति लोगो को इतनी प्रधिक भूख न हो तो क्या ये राक्षस वचे रहेंगे? क्या स्वयं ही ाष्ट न हो जायँगे? इन्हे दोष देना व्यर्थ है। इसके रोकने का ्कमात्र उपाय यही है कि स्वभाव से कुटिल मनोवृत्तिवाले स्त्री-ुरुषों का, कामोन्मादी व्यक्तियों का और अन्य पतित व्यक्तियों ा अपार धन उनसे छीन लिया जाय। सरयू जैसे नारी-शरीर

कमे देकर इन्हे खरीदते थे। कुछ व्यक्ति सप्ताह या महीने के लिए इन अभागी युवतियो के कौमार्य और सतीत्व को खरीदते थे। दाम नकद लिया जाता था। सरयू को खरीदारो का भरोसा नही था।

किन्तु यह सब था बड़ा कठोर, अमानुषिक और निर्दय व्यापार। अपने सैकड़ो शिकारो, भोली-भाली लड़कियो के बारे मे वह ऐसे बात करती जैसे कोई व्यापारी अपने माल की बात करता है। लेकिन वह बिलकुल हृदयहीन भी नहीं थी। कई अवसरों पर उसने दान के रूप में काफी चन्दा दिया था। उसने मुझे अपने व्यापार के संरक्षको के नाम भी बताये थे। कुछ उसमे सम्भ्रान्त व्यक्ति थे, कुछ शोहदे। समाज में भले आदमियो के बीच वे देखे जाते थे। मुझे आश्चर्य होता था कि यदि लोगो को यह मालूम हो जाय कि जिन बड़े और चरित्रवान् व्यक्तियों की वे इतनी श्रद्धा कर रहे हैं, जो ऊपर से नैतिकता और आदर्शवादिता का इतना बखान करते हैं, जो पराई स्त्रियों को माँ-बहन समझने का दम भरते हैं, वे भीतर से इतने पतित, दुश्चरित्र और ढोंगी हैं तो वे क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे। इन पतितो और ढोंगियो की सख्या कितनी अधिक है, कितनी विस्तृत है, फिर भी भारतवर्ष को अपनी सभ्यता और सस्कृति पर नाज है, गर्व है! दुनिया में ऐसे भी लोग है जो नारी-शरीर के इस व्यापार की बात सुनकर भी घृणा से काँप उठेंगे, यह व्यापार करनेवालो को वे 'राक्षस' कहेंगे जो ठीक भी है। किन्तु यदि नारी-शरीर के प्रति लोगो को इतनी अधिक भूख न हो तो क्या ये राक्षस बचे रहेंगे? क्या स्वयं ही नष्ट न हो जायँगे? इन्हें दोष देना व्यर्थ है। इसके रोकने का एकमात्र उपाय यही है कि स्वभाव से कुटिल मनोवृत्तिवाले स्त्री-पुरुषों का, कामोन्मादी व्यक्तियों का और अन्य पतित व्यक्तियो का अपार धन उनसे छीन लिया जाय। सरयू जैसे नारी-शरीर

बुद्धिमत्तापूर्ण है। किन्तु कितनी बीवियाँ यह सोचती हैं? अगर उन स्त्रियो से, उन पत्नियो से, यह बात कही जाय तो वे इस पर विश्वास नहीं करेंगी, किन्तु बाद में जब देखेगी कि उनका पति उन्हे नही प्यार करता . ...पति के लिए कोई रास्ता नही, उस पर सब लोग व्यभिचार का दोष लगायेगे।

जीवन के प्रति दूषित दृष्टिकोण रखते हुए भी सरयू मानव-चरित्र की तीक्ष्ण पारखी थी। कितना अचम्भा है कि वह मुखाकृति, आँख और शब्दों से मनुष्य-चरित्र को पढ़ लेती थी। न जाने कितनी लड़कियों को—जिन्हे उसने खरीदा और बेचा—उसने देखा तक नही था। कुछ विशेष लड़कियों को ही वह देखती सुनती थी और मालूम होता था कि उन पर वह कुछ जादू सा कर देती थीं। जैसा चाहती वे वैसा ही करतीं। वह एक चौकी पर बैठ जाती, लड़कियाँ एक के बाद एक उसके सामने लाई जातीं, उसके पाँव पड़तीं, हाथ जोड़तीं। और सरयू उनसे वचन लेती कि वे सदा उसकी इज्जत करेंगी, आज्ञा-पालन करेंगी और कभी किसी पुरुष या स्त्री से इस मकान में होनेवाली बातो या घटनाओ के बारे में कुछ न कहेंगी। उसने मुझे यह भी बताया था कि आज तक कभी किसी लड़की ने इस वचन को नहीं तोडा। धीरे-धीरे मैंने यह भी जान लिया कि उसकी खरीदी हुई लड़कियो मे सभी जातियो की थीं। बङ्गाली, बिहारी, युक्तप्रातीय, मारवाड़ी, गुजराती, मराठी, पहाड़ी और मुसलमान युवतियाँ उसके द्वारा सैकड़ो की सख्या मे खरीदी और बेची जा चुकी थीं। मैंने उनमे से कुछ लड़कियो को देखा था—वे बड़ी सुन्दरी थीं! वे सब तरह की थीं, सौंदर्य के जितने भी रूप हो सकते हैं, सब मौजूद थे। लम्बी, नाटी, छरहरी, मोटी. सुन्दर घुंघराले बालोंवाली, गोरी, काली, सौम्य और चंचल, सभी तो थीं। सरयू अपने व्यापार को अच्छी तरह जानती थी। सरयू ने ही एक बार कहा

'हम किसी न किसी तरह उनसे पीछा छुड़ाती हैं।'—उसने हँसकर, व्यापारिक ढंग से उत्तर दिया।

'तब वे कहाँ जाती हैं?'—मेरा प्रश्न था।

कौन जाने कहाँ जाती हैं। यह देखना मेरा काम नहीं। नदी मे डूब मरती होगी। कम से कम, आये दिन नदियों मे से जो स्त्रियो की लाशें निकाली जाती है वे यही साबित करती हैं।

यह सब कहते हुए वह मेरी आँखों मे सीधे देखती जाती थी। अगर मैंने उसे इस तरह शान्त बैठकर यह सब कहते न सुना होता तो मुझे यह कभी विश्वास न होता कि एक मनुष्य इतना बड़ा राक्षस भी हो सकता है। उसके लिए स्त्रियाँ, लड़कियाँ, आठ या दस-बारह साल के लिए रुपया पैदा करने की निर्जीव मैशीनें थीं। उसके बाद मन और तन से पूरी तरह बेकार हो जाने पर, बीमारी हो जाने पर, वे भारी दुःख के भार से दबी, या तो सड़को पर मारी मारी फिरने के लिए छोड़ दी जाती थीं या वे नदी मे डूबकर अपना जीवन समाप्त कर देती थीं। यही उनका मूल्य था।

मे लड़कियो से जान-पहचान की जाती है, किस तरह नौकरी का झूठा लोभ देकर उन्हे साथ लाया जाता है। उसी ने मुझे बताया कि अभी जर्मनी और आस्ट्रिया मे एक और नया उपाय काम मे लाया जाने लगा था, जिसे थोड़े दिन बाद पुलिस ने ताड़ लिया और सब देशो की पुलिस को इसकी सूचना दे दी गई। इसमे होता यह था कि इस व्यापार के व्यापारी अपने शिकार को पहचान लेते थे। पता लगा लेते थे कि किस किस दिन वह मकान के बाहर अकेली निकलती है। जो लोग इनके पीछे लगाये जाते थे वे या तो दो औरतें होती थीं या कभी-कभी जनाने लिबास मे मर्द होते थे। वह लड़की कभी जब अकेली कहीं जाती तो ये उसके पीछे लग जाते। पता चलने पर वह लड़की कदम बढाती तो ये भी बढ़ाते। अगर वह धीरे चलती तो ये भी धीरे चलने लगते, पर रहते पास ही। वह बेचारी जहाँ कहीं जाती, ये साथ लगे रहते। वह किसी दूकान मे जाय, ये भी जायँगे; रेस्तराँ मे घुसे, ये भी जाकर पास ही की टेबुल पर चाय पियेंगे। वह बाहर चलेगी, ये भी चलेंगे। इस पर घबराकर यदि वह लडकी शोर मचाती या विरोध करती तो पूछनेवालो से ये कह देते कि इस लडकी का दिमाग खराब है और हम इसकी देख-रेख क लिए साथ जा रहे हैं। इस पर वह लडकी जितना ही विरोध करेगी, जितना ही शोर-ग़ुल करेगी, देखनेवाले यही समझेंगे कि वह पागल जरूर है। पुलिस अधिकारियों को भी यही शक होगा। बेचारी लड़की बिलकुल घबराकर, पास ही जाती ख़ाली गाड़ी बुला-कर, उस पर भागेगी। पीछा करनेवाले दूसरी पर सवार होंगे। कहना न होगा कि वह ख़ाली गाडी भी इन्हीं पीछा करनेवालो के दल की ही किसी आदमी की होती थी। इसके बाद फिर उस अभागी बालिका का पता लगना कठिन था। दूसरे उपाय मे स्त्री दलालो या छद्मवेशीय पुरुष दलालो से काम लिया जाता था। ये

है, उनके घरवालो या सगे सम्बन्धियों को इस सत्य का आभास तक नहीं था।

जिन मकानो मे यह व्यापार वेधडक चला करता है उनकी पहचान भी सरयू ने मुझे बताई थी। वाहर से देखने में वे शरीफ आदमियों के घर जान पड़ते है, गलियों में होते हैं, उनके भीतर दुनिया भर की गन्दी और वीभत्स तसवीरे होती है। ज्यादा आमदनीवाले घरों मे सुगन्ध और कम आमदनीवाले मकानों में दुर्गन्ध और गन्दगी भरी होती है। वाहर से देखकर कोई उसके भीतर की नग्नता और वीभत्सता की कल्पना तक नहीं कर सकता। भले आदमी वास्तव मे पता तक नहीं जानते, किन्तु गन्दी मनोवृत्ति के लोग, जिनका यही नीच मनोरञ्जन है, इन घरो को देखते ही दूर से पहचान लेते हैं।

करना चाहती। पत्नी का स्वय आग्रह है कि एक स्त्री नौकर रख ली जाय जो पत्नी का काम भी दे सके। मकान मे बच्चे नहीं है।

स्त्रियो के विषय मे कितनी विस्तृत जानकारी सरयू को थी। उनकी विशेपताएँ, उनके खब्त और उनकी मौजें, उनके वहम, उनकी पसन्द और नापसन्दगी, उनकी कमजोरियाँ, उनके दोप और अवगुण, उनके चरित्र, उनके अन्तरङ्ग विचार, गरज़ यह कि स्त्रियो की जितनी भी बाते हो सकती थीं, सबकी पडिता सरयू थी। और इसी तरह, पुरुषो के विषय की भी कुल जानकारी उसे थी। वह कहा करती थी कि शान्त, गम्भीर, विनम्र और ऊपर से खूब लज्जाशील औरतें ही सबसे ज्यादा खतरनाक होती हैं। इनसे हमेशा बचना चाहिए। ये सबसे अधिक चरित्रभ्रष्ट और नीतिभ्रष्ट होती हैं। अविनयी, मुखरा लड़कियाँ, बड़ी चचल और अल्हड लड़कियाँ और साहसी लड़कियाँ साधारणतया दोपरहित होती है। वे थोड़ी-बहुत हावभाव-प्रदर्शन-प्रिय तो होती हैं, किन्तु इससे आगे नहीं बढ़ना चाहतीं। सरयू ने इन धीर, गम्भीर, विनम्र और लजवन्ती स्त्रियो की कई कहानियाँ मुझे सुनाइ, जिन्हे वह अच्छी तरह जानती थी और जो छिपे-छिपे उसके यहाँ आती-जाती थीं। कुछ तो दिन को बाज़ार जाने या सखियो से मिलने जाने के बहाने उसके यहाँ आती थीं। इन मकानो मे एक गुप्त द्वार होता था। उसी से यह आमद-रफ़्त होती थी। कुछ सवेरे गगा या जमुना नहाने के बहाने, कुछ शाम को मन्दिर में दर्शन के बहाने, और कुछ घूमने जाने के बहाने इन घरो (प्राइवेट हाउसों) मे पधारती थीं। ऐसी ही एक स्त्री का सरयू ने वर्णन किया, जिसका नाम था मालती।

मालती लम्बी, सुन्दर स्त्री थी। उसके अङ्ग-अङ्ग साँचे मे ढले थे। वह बहुत गम्भीर रहती थी। कोई उसे उत्तेजित नहीं कर सकता था। कपड़े अच्छे जरूर पहनती थी, किन्तु भड़कीले नही।

एक बार सरयू से मैंने पूछा कि क्या कभी तुम्हारे यहाँ धर्मात्मा—पण्डे पुजारी—भी आते हैं। वह गम्भीर हो गई, हिचकिचाई और बोली—ऐसे ही कभी आते हैं। एक तो वे मेरी पूरी फीस नहीं दे सकते, दूसरे उन्हे समाज मे बदनाम हो जाने का डर रहता है। हाँ, कभी कभी कच्ची उमर के नये साधु संन्यासी आ जाते हैं। उसने बताया कि मेरे सबसे अच्छे गाहक वृद्ध पुरुष ही हैं. वे जो पचास से ज्यादा उम्र के हैं। कारण शायद यही था कि वे जानते थे कि उनकी मृत्यु बहुत नजदीक है, इसी लिए वे जीवन में जितना सुख उठा सकते थे, उठा लेना चाहते थे। इन बूढ़ो के पास जरूरत से ज्यादा रुपया भी होता था और उसके खर्च करने का शायद यही एक अच्छा उपाय उनके सामने था।

इस व्यापार का एक पहलू और भी होता था। नग्न तसवीरें लेना और बेचना। इस काम के लिए कुछ खास चित्रकार नौकर रक्खे जाते थे, जो ऐसी तसवीरे बनाते थे। नारी-शरीर के जितने भी नग्न चित्रण हो सकते थे, सब बनाये जाते थे और गुप्त एजेंटो द्वारा उन्हे बेचा जाता था। सभी स्त्री-पुरुष शौक़ से इन्हें खरीदते थे। खुले आम इस तरह की तसवीरे बेचना जुर्म है, इसलिए बहुत छिपाकर यह काम किया जाता था। और ये चित्रकार कौन होते थे, जो अपनी कला की इस तरह हत्या करते थे? ये बहुत गरीब होते थे और रुपयों का लोभ उन्हें यह काम करने को प्रेरित करता था।

पहले-पहल सरयू जब सौदामिनी के गाँववाले घर गई थी तब उसके मन मे यह इच्छा हुई थी कि एक दिन वह उस घर की मालकिन हो जाय। कुछ बरसो बाद, धीरे-धीरे, ऐसा हो भी गया। उसने उस मकान मे कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया। वह दीवालों से घिरा 'जेलखाना' ज्यो का त्यों रहा।

मन समर्थक न हो। उनके आसपास के रहनेवालो और सगे-सबधियो को इस बात का भ्रम तक नहीं हो सकता कि वे बड़े कट्टर चरित्रवान् और सदाचारी नहीं हैं। ऐसे पुरुप लगभग सप्ताह के एक ही दिन, एक ही नियत समय पर इन 'प्राइवेट हाउसो' मे जाते हैं, कुछ पन्द्रह दिन पर एक वार, कुछ तीन-चार सप्ताह पर एक वार। उनका नियत समय रहता है जब पहले से कोई खास लड़की उनके लिए तैयार रक्खी जाती है। और वे उसके साथ मन वहलाते हैं। कम से कम, उनकी बीवियो को इस बात की कल्पना तक नही होती। कुछ ऐसे भी होते है जो सप्ताह मे कई वार आते हैं, हमेशा शोर-गुल, लड़ाई-झगड़ा करते है और कभी सन्तुष्ट नहीं होते। फीस के लिए लड़ते-झगड़ते हैं, नशा पीकर आते हैं और पागलपन करने लगते है। वे बेकावू हो जाते हैं। ऐसो को लडकियाँ भी पसन्द नहीं करतीं और यही चाहती हैं कि उनसे साबका न पड़े। जिन व्यक्तियो को सरयू की पालिता लड़कियाँ पसन्द करती थीं वे युवक थे, नई उम्र के। वे जल्दी सन्तुष्ट हो जाते थे और परेशान नहीं करते थे। वे नम्र भी अधिक होते थे। फिर, युवावस्था तो प्रेम करने के लिए है ही। कभी-कभी स्कूल के विद्यार्थी भी आते थे। अँधेरा हो जाने के वाद, शर्माते हुए, वे आते थे और उनके पास पैसे भी अधिक न होते थे। उन्हे सरयू 'ओब्लाइज' कर भी देती थी, उनके लिए प्रबन्ध कर देती थी।

सरयू की स्मरण-शक्ति वहुत तेज थी। एक वार भी जो पुरुप उसके यहाँ होकर गया, उसे वरसों वाद भीड़ में देखकर भी वह पहचान लेती थी। कभी-कभी इन घरो मे हत्या, रक्तपात और आत्महत्याएँ भी हो जाती थीं। एक ऐसी ही आत्महत्या का जिक्र उसने किया था। एक लड़की वहुत ऊँचे खानदान की थी। वह छिपकर उसके यहाँ आती-जाती थी। इस तरह कई ई पुरुषों से उसका संबध था। यहाँ आकर वह शराब भी पीने

गोली मारकर आत्महत्या कर लेगा। एक दिन जब वह एक बढ़िया होटल मे रात को खाना खा रहा था, उसने देखा कि अच्छे कपड़े पहने एक स्त्री बड़े ध्यान से उसकी ओर देख रही है। खाना समाप्त होते न होते वह पास आ गई और साथ बैठकर उसने कॉफी पीने की इच्छा की। बात ही बात में उसने उस नवयुवक से अपने घर चलने को कहा। युवक ने रुखाई से उत्तर दिया—देखो, मैं तुमसे सब बातें साफ-साफ कह देना चाहता हूँ। शायद तुम मुझे बहुत धनी समझ रही हो। मैं धनी मालूम जरूर देता हूँ; क्योंकि कभी मेरे पास बहुत रुपया था। लेकिन इस समय मेरे पास कुछ नहीं है। मेरे पास इस वक्त पचास पौंड से भी कम बचे हैं और वे भी जब समाप्त हो जायँगे तब भगवान् जानें, क्या होगा। मैं समझता हूँ, मुझे भी औरों की तरह नाली मे लोटना पडेगा। मैं यह तुमसे इसलिए कह रहा हूँ जिसमें तुम अपना समय नष्ट न करो। अब तुम कृपा करके जाओ।

वह स्त्री थोड़ी देर तक चुप रही, बराबर युवक पर अपनी दृष्टि जमाये रही। फिर सहानुभूति के स्वर मे बोली—मैंने सचमुच तुम्हें इतना गरीब नहीं समझा था। लेकिन तुम यह क्यो समझते हो कि मै तुमसे रुपये चाहती हूँ? तुम मुझे क्या समझते हो? तुम मेरा अपमान कर रहे हो। मै तो केवल तुम्हे अपने घर चलने के लिए कह रही हूँ। मैं रुपये नहीं माँगती। मैं तुम्हारा धन नहीं चाहती। अगर तुम्हारे पास हजारों पौंड होते तो भी मैं न माँगती। क्या तुम्हारे ऊपर बहुत कर्ज है?

युवक ने संकोच के साथ कहा—एक हजार पौंड से भी ज्यादा।

'वेटर' के आने पर खाने का दाम भी उस स्त्री ने ही चुकाया। उसने उठते हुए कहा—मेरे साथ आइए।

चकराया सा वह पीछे-पीछे बाहर निकला। बाहर दो नौकर गाडी के साथ खड़े थे। दोनो सवार हुए। आध घंटे से अधिक

९

इन बदनाम घरों में बसने या आने-जानेवाली बहुत कम लड़कियाँ पागल होते देखी गई है। इसका कारण, सरयू के कथनानुसार, उनकी अच्छी देख-रेख है। जब वे सस्ते घरों में भेज दी जाती हैं और वहाँ, गलत प्रयोग से, उनमे जल्दी ही शारीरिक दुर्बलता आ जाती है तब भी उनका मस्तिष्क ठीक काम करता रहता है—तब तक, जब तक उनमे कोई रोग न उत्पन्न हो जाय। पेशा तो गन्दा है ही, इसके अतिरिक्त उनके रहन-सहन का ढङ्ग और दैनिक जीवन बहुत अस्वास्थ्यकर और दूषित है। सूरज की खुली धूप मे निकलने का अवसर उन्हें बहुत कम मिलता है, परिश्रम किसी तरह का हो नहीं पाता, मिठाई आदि का अत्यधिक सेवन और सोने का अवसर केवल दिन को ही उन्हे मिलता है। रात भर के जागरण मे जो स्फूर्ति और शक्ति बर्बाद होती है वह दिन भर के भी सोने से संचित नहीं होती।

नि.सन्देह कुछ स्त्रियाँ इस घृणोत्पादक अस्तित्व से छुटकारा [illegible]ा जाती हैं, किन्तु इतने वर्षों तक जिस तरह का जीवन विताने [illegible]ा उन्हे अभ्यास हो जाता है वह उन्हें दुनिया के और किसी [illegible]ाम लायक नहीं रहने देता। वे भी वहाँ से छुटकारा पाकर [illegible]वय यही व्यवसाय आरम्भ करती हैं—कहीं ऐसे ही अड्डे [illegible]ोलकर स्वयं उसकी मालकिन बन बैठती हैं। और, तब स्वयं [illegible]तने वर्षों तक उस अन्धकूप में रहकर कौमार्य और सतीत्व के [illegible]यापार का जो अगाध अनुभव उन्होंने प्राप्त किया है उसके

लडकी थी। सरस्वती उसका नाम था। वह बङ्गालिन थी। उसे रात को वहाँ देखकर आश्चर्य हुआ। पूछने पर जो कुछ उसने बताया वह रोंगटे खड़े करनेवाला है। उसने कहा कि उसे यह कुटेव उसके सगे भाई से लगी है। बचपन से भाई और वह साथ खेले थे। बड़े होने पर, दोनो के शरीरो में यौवन के चिह्न जागृत होने पर, बचपन का वह खेल युवावस्था के 'खेल' मे बदल गया। भाई और बहन के जाहिरा सम्बन्ध के साथ, भीतर ही भीतर, दोनो मे प्रेमी-प्रेमिका का सम्बन्ध रहा। काम-चेतना इतने विकृत रूप मे उभरी कि दोनो के सम्हाले न सम्हली। एक दिन घरवालो पर यह भेद खुला। पुरुष होने के नाते भाई सस्ते छूट गया। बहन सरस्वती बुरी तरह पीटी गई। किन्तु इस मार-पीट से काम का वह स्वाद, वासना का वह आनन्द, दबाये नहीं दबा और आज वह जो कुछ है, जाहिर है। दिन को वह ....कालेज की . . क्लास की छात्रा है, रात को यहाँ आती है। पैसा की उसे जरूरत नहीं, वह इस लोभ से यहाँ नहीं आती। घर की धनी है, आती है केवल सन्तोष-प्राप्ति के लिए, 'मन बहलाने'। ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं। इन घरो मे रहने-वाली औरते भी कण्ठी-माला फेरती हैं, सुबह-शाम पूजा करती हैं। ऐसा करके वे अपनी आत्मा को यो सन्तोष दे लेती हैं कि दुर्भाग्य से हमें ऐसा नारकीय जीवन बिताना पड़ रहा है। भगवान् के सामने इस तरह पश्चात्ताप करनेवाली वही स्त्रियाँ होती है जो वास्तव में अपनी इच्छा के विरुद्ध यहाँ धोखा देकर लाई गई हैं।

यूरोप मे एक तान्त्रिक सम्प्रदाय है जिसके गुप्त सकेत-चिह्न हैं। उस सम्प्रदाय के स्त्री-पुरुष एक दूसरे को बिना किसी प्रकट चिह्न के भी तुरन्त पहचान लेते है। नारी-शरीर के इन व्यवसायियों में भी यही गुण देखने मे आते हैं। इनका

मुमकिन है, वह आस-पास कही छिपा बैठा हो। लेकिन यह उस आदमी के सम्पर्क से बुरा नही जिसने हजारो स्त्रियो को सर्वनाश के मुँह मे ढकेल दिया है, जो इस गन्दे, नारकीय व्यापार के अन-गिनत शिकारो की हत्या का एकमात्र जिम्मेदार है। सरयू को मैं जितना जान सका था उससे मैं कह सकता हूँ कि कभी-कभी उसके पास बैठे बैठे मुझे ऐसा लगता था कि अब एक मिनट भी इस नारी के पास ठहरना मेरे लिए असम्भव है। घृणा और क्रोध से मेरा रोम-रोम काँप उठता था। वह स्वयं कई बार जेल की हवा खा चुकी थी, किन्तु इस विषय मे कुछ कहती न थी। कई बार उसके इन घरो पर पुलिस धावा कर चुकी थी, किन्तु सौभाग्य से वह एक बार भी पकड़ मे नहीं आई—तलाशी के समय वहाँ उप-स्थित न थी। हर बार उस मकान की मालकिन ही, जिसे सरयू ने उस घर का चार्ज दिया था, पकड़ी गई और उसने दण्ड भुगता। किन्तु उन्हे विश्वास रहता था कि जेल से छूटते ही सरयू उन्हे फिर वहाल कर देगी, अतः इस जेल-प्रवास को वे मामूली ही घटना समझतीं।

मै समझता था कि दुनिया में जानने योग्य जितनी बातें हो सकती हैं उन सबको मै जानता हूँ, किन्तु सरयू की कितनी ही बातें मुझे आश्चर्य मे डाल देती थीं।

सरयू का ऐसे कितने ही व्यक्तियो से घना सम्बन्ध था जो एक या अधिक स्त्रियाँ खरीदने उसके पास आते थे—उसी तरह लडकियाँ खरीदते थे जैसे कोई साबुन की चट्टियाँ खरीदे। इन खरीदनेवालो में एक बहुत धनी व्यक्ति था जिसकी स्त्रियो की भूख कभी बुझती नहीं थी। वह एक बार मे दस से कम लडकियाँ नहीं खरीदता था। उसके यहाँ से जब 'आर्डर' आता, सरयू का कहना था कि, वह दिन ऐतिहासिक होता था। उस दिन सब स्त्रियो में होड लग जाती थी।

अपने गाहकों मे सरयू यदि किसी श्रेणी से डरती थी तो वह अपराधी श्रेणी थी; जैसे चोर, डाकू आदि। वे इस घर के निवासियो को भी अपने जैसा ही अपराधी समझते थे जो एक हद तक सही भी था और इसी लिए वे यहाँ आकर खुल खेलते थे। मार-पीट तक कर बैठते थे। यदि इस मार-पीट ने गम्भीर रूप धारण कर लिया तो बात अधिकारियो के कान तक पहुँचती थी। जाँच-पडताल की नौबत आती थी। और नारी-व्यवसायियो के लिए इससे भयकर बात कोई नही हो सकती कि इस तरह वे पकड़े जायँ, उनका भेद खुले।

कभी आँखो के भाव भी रोग को जाहिर कर देते हैं। रोग अधिक बढ जाने पर हाथों के रूप से भी पता लग जाता है। ऐसी दशा मे अँगुलियो की संधियो का रंग बहुत अप्राकृतिक हो जाता है। मैंने ऐसे व्यक्तियो को भी देखा है जो ऊपर से बहुत तन्दुरुस्त जान पडते हैं। मैंने उन्हे नग्न देखा है। उनकी पसलियो पर खुले मुँह के भयङ्कर घाव मैंने देखे हैं। आश्चर्य है कि ऐसे व्यक्ति भी इन घरो मे आकर स्त्री संसर्ग करना चाहते हैं। मैंने यह जानने का भी तरीका निकाल लिया है कि मेरे यहाँ आने-जानेवाले रोगी तो नहीं हैं। मैं नहीं चाहती कि ये रोग मेरी स्त्रियो मे फैलें। यदि कभी ऐसे पुरुष मेरे यहाँ आ जाते हैं तो मैं उन्हे तुरन्त निकलवा देती हूँ।

आप न जानते होगे, आत्महत्या की आधी या इससे अधिक वारदाते इन रोगो के ही परिणाम हैं। रोग और बदनामी। अखबारो मे खबरे छपती है—अमुक-अमुक युवक या युवती, जो सम्भ्रान्त और ऊँचे कुल के थे, जहर खाकर या नदी में डूबकर मर गये। पढ़कर हम कह उठते हैं—हाय-हाय, उसकी आत्महत्या का क्या कारण रहा होगा? अक्सर धन की कमी और बेकारी के कारण भी आत्महत्याएँ होती हैं किन्तु जहाँ यह नहीं है वहाँ अधिकाश आत्महत्याओं के मूल में यही रोग और 'ब्लैक मेलिंग', भय दिखलाकर रुपये ऐंठने का कारण होता है। और एक तरह से, ऐसे व्यक्तियो का यह दु खद अन्त ठीक भी है। उनके जीवित रहने की आवश्यकता ही क्या? सिफलिस जैसा भयकर रोग जब एक बार शरीर मे घर कर लेता है तब वह किसी तरह अच्छा नहीं हो सकता। शुरू-शुरू मे किसी अनुभवी और जानकार डाक्टर से सलाह लेना कभी कभी हितकर हो सकता है। सब डाक्टर भी इस रोग को अच्छी तरह नही समझते। 'सिफलिस' के रोगी की स्वाभाविक मृत्यु बडी भयङ्कर होती है। देखकर कलेजा काँप जाता है।

वे एक जानवर का गला दबाते पकड़ लिये गये। मुक़दमा चला और सजा हो गई। जेल से छूटने पर वे फिर यही करने लगे। यह विषयोन्माद था। ऐसा करने से वे अपने को रोक नहीं पाते थे। सरयू का कहना था कि ऐसे व्यक्ति वास्तव में पतित नहीं होते। यह मानसिक रोग होता है। ऐसे व्यक्तियों को जेल में बन्द करने की जरूरत नहीं। अस्पतालों और पागलखानों में रखकर इनकी चिकित्सा करनी चाहिए। इस विषयोन्माद के कितने ही उदाहरण सरयू ने दिये थे।

सरयू ने जो कुछ कहा वह यदि सत्य था—और उसे झूठा मानने की कोई वजह नहीं मालूम होती—तो कहना पड़ेगा कि मानव-मस्तिष्क एक असाधारण वस्तु है।

कामातुरता—काम-चेतना—भिन्न व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार से किस तरह जागृत होती है, इस संबंध का सरयू को अगाध ज्ञान था। ऐसे कितने ही व्यक्तियों को वह जानती थी जिन्हें, किसी स्त्री के पाँव देखकर ही, अपने को रोकना कठिन हो जाता था। स्त्री के पाँव देखकर ही वे बेकाबू हो जाते थे! किसी स्त्री के चेहरे की ओर इनकी दृष्टि पीछे जाती थी। कुछ ऐसे होते हैं जो स्त्रियों के बाल देखकर ही उत्तेजित हो जाते हैं—उन्हें काट तक डालते हैं! कपड़े देखकर, कपड़े पहनने के ढंग देखकर, उत्तेजित हो जाना तो स्वाभाविक है। सीने पर एक ओर का कपड़ा हटा देखकर खुली बाँह के जम्पर देखकर या शरीर पर खिलनेवाली रंगीन साड़ी देखकर कितने ही पागल से हो जाते हैं। स्त्रियों के शरीर की गन्ध या उनके लगाये हुए इत्र आदि भी 'काम' को भड़काते हैं।

सरयू का कहना था कि दुनिया में जितने तरह के अपराध हैं, सब पागलपन के प्रतीक हैं और ऐसे 'पागलों' को जेल का दण्ड देने की अपेक्षा उनकी दवा करना ज्यादा उचित है।

उन लडकियो की अजीव जीवन कथाएँ थीं। एक लड़की किसी वहुत धनी की पत्नी की नौकरानी थी। उन्ही दिनो उसी मकान मे एक और परिवार अतिथि के रूप मे आकर ठहरा। उस परिवार की स्वामिनी को नौकरानी 'पसन्द' आ गई। उन्होने उससे कहा कि यहाँ का काम छोड़कर हमारे साथ चलकर रह। इसके लिए उन्होने नौकरानी को वहाँ से दुगुना वेतन देने को कहा। थोड़े दिना तक नई मालकिन ने जरूरत से ज्यादा प्रेम दिखाया, किन्तु साल भर वाद उनकी तवीयत भर गई और उन्होंने उसे निकाल दिया। लाचार हो वह सड़क पर घूम रहा थी। उसने एक अजनबी से पूछा कि मै कहाँ जाकर रहूँ, मुझे कहीं नई नौकरी मिल सकती है। उस व्यक्ति ने उसे एक स्त्री का पता बताया जिसे एक नौकरानी की जरूरत है और जहाँ वह 'आराम' से रहेगा। काफी दिन वीत गये। लड़की ने घर पर कई खत भेजे पर माँ-बाप का कोई उत्तर न आया। घबराकर उसने एक तार लिखवाया जिसे उसकी नई मालकिन ने यह कहकर ले लिया कि मैं उसे अपने खर्च से भेज दूँगी किन्तु तार का कुछ जवाव न आया। तब हुआ यह कि एक रात को उसकी यह मालकिन और उसके स्वामी, या वह आदमी जिसे वह अपना पति वतलाती थी उस लड़की के कमरे मे एकाएक घुस आये और उस आदमी ने लड़की से अनुचित प्रस्ताव किया। तब वह लड़की समझी कि क्यों चिट्ठियो के जवाव नहीं मिलते थे और तार का जवाब भी

पुरुषो द्वारा मली-दली जा चुकी है, कितने लोग उसके शरीर के साथ खेल चुके हैं।

सरयू का कहना था कि किसी व्यापार मे सफल होने के लिए उसकी समूची जानकारी होनी चाहिए, उस व्यापार का पिछला इतिहास जानना आवश्यक है और उसके समस्त आगत परिणामो की कल्पना करने की शक्ति अपेक्षित है। और सरयू, इस दृष्टि से, अपने काम मे 'उस्ताद' थी। उसे वेश्या-प्रथा के इतिहास की आश्चर्यजनक जानकारी था।

सरयू का दृढ़ विश्वास था कि सदा, सब युगों में, दुनिया में सबसे भ्रष्ट और पतित व्यक्ति साधु-सन्यासी ही रहे हैं। लोगो के लिए यह आश्चर्य की बात हो सकती है पर सरयू के पास इसके प्रमाण थे। वह कहा करती थी कि मानव-स्वभाव बदला नहीं जा सकता। बहुत से साधु-संन्यासी पवित्र जीवन बिताने—काम-सम्बन्धो मे संयम से रहने—के लिए ही माया-मोह से भरी दुनिया से अलग होते हैं। कुछ महीनों तक, या बरस दो बरस तक, वे अपनी इस चेष्टा मे सफल भी होते हैं और फिर धीरे-धीरे प्रकृति उन पर विजय पाने लगती है। अन्त मे वे, भीतर ही भीतर, पक्के दुराचारी बन बैठते हैं। अगर ऐसा नहीं है तो यह क्या बात है कि फैशन की बढ़ती के ज़माने मे, स्त्रियो के शरीर पर कम कपड़े देखकर, या उनके खुले हाथ या छाती देखकर, इन धर्मात्माओ के क्रोध का ठिकाना नही रहता? कारण यही है कि स्त्रियों को उस तरह से कपड़े पहने देखकर उनकी वह कामवृत्ति जो बरसों से जबर्दस्ती, सयम के नाम पर, दबाकर रक्खी गई है उत्तेजित होती है। चूँकि उन्हें स्वयं ऐसा अनुभव होता है, इसलिए वे समझते हैं कि जो भी व्यक्ति उन स्त्रियों को ऐसे कपड़े पहने देखेगा उसकी काम-चेतना जागृत होगी।

सकता। फिर ऐसे कामुक व्यक्ति जीवन के अन्य क्षेत्रो में बिलकुल योग्य होते है, अतः राष्ट्र के अन्य कार्य सही-सही चलते रहते हैं। लोग बड़े-बड़े साम्राज्यो के विकास और पतन की बात करते हैं। उस साम्राज्य की कामलोलुपता और नीतिभ्रष्टता को पतन का कारण बताते हैं। पर यह ठीक नहीं है। जहाँ 'पतित' कहे जानेवाले साम्राज्य भूलुण्ठित हुए हैं वहाँ धर्मध्वजी शासन भी धूल में मिल गये हैं।

मेरा साहस नहीं होता। प्रस्तुत पुस्तक से कहीं अधिक बडी और काम की पुस्तक उसकी बातो पर तैयार हो सकती है। खेद की बात यह है कि हमारा कानून और कानून के बनानेवाले बहुत अधिक ढोगी हैं। आज जैसे कानून हैं उनमे इस तरह की लाभप्रद और जरूरी बातें लोगो के सामने रखना भी अपराध है। किन्तु इन विषयो की जानकारी यदि विस्तृत रूप से होने दी जाय तो बहुत से निष्कपट सीधे-सादे व्यक्ति बुराइयों से बच जायँ।

जब मैंने पूछा कि ये साधारण वेश्याएँ किस श्रेणी की स्त्रियाँ होती है तब उसने बताया कि गाँवो मे तो ये निम्न श्रेणी से आती हैं, किन्तु शहरो मे आजकल स्वच्छन्द प्रेम और रोमास इतना प्रचलित है कि ऊँची श्रेणी मे बहुतायत से ऐसी स्त्रियाँ पाई जाती हैं। शहरो की बढ़ती हुई आबादी के साथ ही वेश्याओं की भी वृद्धि स्वाभाविक है। वेश्याएँ कई तरह की होती हैं। कुछ खुले आम अपना पेशा करती हैं, कुछ छिपकर। कोई स्त्री तब तक वेश्या नहीं कही जा सकती जब तक वह रुपयो के ही लिए अपने तन का सौदा नहीं करती। यदि यह पता लग जाय कि कोई स्त्री अपना तन किसी पुरुष को प्रेम या प्यार के बदले में देती है तो वह कानून की दृष्टि से 'वेश्या' नही कही जा सकती, भले ही वह पुरुष बाद मे उसे रुपये देता रहता हो। छिपकर वेश्या का पेशा करनेवाली— या अर्द्ध वेश्याएँ—भी कई तरह की होती है। एक श्रेणी इनमे ऐसी स्त्रियो की होती है जो केवल भले और ऊँचे घरो के लोगों की ओर ही आकृष्ट होती हैं। उन लोगो का मनोविनोद करना ही उनका लक्ष्य होता है। वे इन स्त्रियो के घरो का किराया देते हैं, इनके खाने-पहनने का खर्च देते है और दूसरे खर्च भी। ये स्त्रियाँ भी सभी जगह देखी जा सकती हैं। सभाओं मे भाग लेती हैं, सिनेमा-थियेटर देखने जाती हैं, अच्छे कपडे पहनती हैं, बहुत सभ्य और सुघरी जान पड़ती हैं। जैसा कहा जाता

घृणा है, पुरुषों से नफरत है। यदि रुपये कमाने का और कोई साधन हो तो वे तुरन्त यह पेशा छोड़ दें। किन्तु समाज में उनके लिए सम्मानपूर्वक रोजी कमाने का कोई उपाय नहीं, खासकर तब जब वे वेश्या बन चुकी हो। अभी तक ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो यह समझते हैं कि एक वेश्या हर तरह से भ्रष्ट होती है—नशेबाज होती है, जबान की तेज और चोट्टी होती है। किन्तु आर्थिक कारणों से वेश्या बनी स्त्री में ये बातें नहीं होतीं। जबान की तेज तो वह कभी नहीं होती, यद्यपि पुरुषों से हमेशा उसे तेज बातें सुनने को मिलती हैं।

सरयू के निरीक्षण में चलनेवाले 'प्राइवेट हाउसों' में यदि कभी कोई ऐसी लड़की आती जिसमें कुछ विशेषताएँ होतीं तो सरयू उससे मुझे मिला देती थी। इसी सिलसिले में वहाँ मुझसे एक लड़की से भेंट हुई जो थोड़ी-बहुत लेखिका थी। उसने बताया कि इस साहित्य-सेवा ने ही उसे यहाँ ला बिठाया है। प्रेम के सम्बन्ध में दिन-रात लिखते रहने से उसकी कल्पना-शक्ति उत्तेजित हो गई। उसे प्रेम के सपने दिखाई देते थे। वह अविवाहित थी। जो कुछ वह लिखती थी उसका प्रत्यक्ष अनुभव करने की इच्छा उसको हुई। उसने ऐसा ही किया, और तब उसकी दबी हुई वासना दिन प्रति दिन बढ़ती गई। यहाँ तक कि अब उसका लिखना-पढ़ना बिलकुल छूट गया था और पूर्ण रूप से वह बुराइयों में फँस चुकी थी।

उसका मामला मुझे विशेष दिलचस्प मालूम हुआ। एक मानसिक रोगों के विशेषज्ञ से मैंने इस सम्बन्ध में पूछा। उन्होंने बताया कि यह कोई नई बात नहीं है। वे ऐसे कितने ही स्त्री-पुरुषों को जानते हैं। उन्होंने बताया कि इस तरह से एक व्यक्ति की कल्पना शक्ति ज्यादा आसानी से प्रज्वलित हो सकती है। दुनिया भर के साहित्यिक, चित्रकार, अभिनेता और अभिनेत्रियाँ

दूसरो की वदनामी करते रहने का कुछ लोगो का पेशा सा हो गया है। यह भी देखा गया है कि ऐसे लोग अक्सर एक गुट बना लेते हैं, अखबार निकालने लगते अथवा भले और सम्भ्रान्त व्यक्तियो से—वदनामी का भय दिखलाकर—रुपये वसूल करते हैं। सरयू ने मुझे वताया कि ऐसे व्यक्तियो का गुट यूरोप भर मे फैला हुआ है और हमारे यहाँ तो है ही। एक वार यदि कोई इनके चंगुल में फँस गया तो फिर उसका कल्याण नहीं। यदि केवल उस व्यक्ति को वदनाम करने की नीयत है तो ये धूर्त उसे तव तक न छोडेंगे जव तक अच्छी तरह वदनाम न कर लेगे, यदि रुपया ऐंठने की नीयत है तो अपनी माँगें प्रतिदिन तव तक वढ़ाते जायँगे जव तक अच्छी तरह उसे चूस न लेंगे।

सरयू ने कहा—इनसे वचने का उपाय यही है कि हिम्मत से इनका सामना किया जाय। उनसे ललकारकर कहा जाय—मैंने यह काम वहुत वार किया है, तुम्हे जो करना हो, करो। मैं न तो डरकर तुम्हे एक पैसा दूँगा और न मुझे इस वदनामी की परवा ही है। ऐसे व्यक्ति अगर यह देखेंगे कि उनके शिकार को, भले ही वह वास्तविक अपराधी हो, उनकी जरा भी परवा नहीं है और वह दृढ़ हैं तो वे घवराकर उसका रास्ता छोड़ देंगे। फिर भी यदि वे अपनी हरकत से वाज न आवें तो पुलिस और अधिकारियों की शरण लेनी चाहिए। अधिकारी-वर्ग भी सांसारिक जीव हैं और उनका प्रतीत वा

हँसती-खेलती और नाचती-गाती हैं। आप जाकर किसी लडकी को चुन लीजिए और उसे बगल के कमरे मे ले जाइए। लोग यहाँ आते थे, लड़कियो के शरीर से मनमाना खेल करते थे। बाद मे पैसे देने मे परेशान करते थे, और उनसे वसूल करने का कोई उपाय भी नहीं था।

यो तो मै सरयू से घृणा करता था, किन्तु कभी-कभी उसकी बातो का मुझ पर ऐसा प्रभाव पडता था कि मुझे मालूम होता था, मैं उससे घृणा नहीं कर सकता। कुछ विषयो मे उसके विचार ठोस और सत्य थे। उदाहरणार्थ, काम-संबंध मे संयम की बात जहाँ उठती, वहाँ वह जो कुछ कहती थी वह अधिकाश सत्य था। वह गम्भीर होकर कहती थी—आप लोग, जो अपने को आदर्शवादी और सभ्य कहते है, अभी तक इन 'पतित' कही जानेवाली स्त्रियो का उपहास करते हैं, नाक-भौं सिकोड़ते हैं और उनका मजाक उड़ाते हैं। यदि एक भी कुमारी लडकी प्रकृति को जीतने मे असमर्थ होकर वही काम कर बैठती है, जिसे पुरुष बीसियो बार निःसङ्कोच करते हैं, और दुर्भाग्यवश गर्भवती हो जाती है तो उसके सगे-सम्बन्धियों मे, परिवार मे और समाज मे हाय-तोबा मच जाती है, स्त्री-पुरुष मिलकर उसका बेहद अपमान करते हैं। वह बेचारी तब कुलटा समझी जाने लगती है। सब लोग उसके साथ अछूत-सा व्यवहार करते हैं। वह घर से निकाल दी जाती है। जो औरतें इस लड़की की चौथाई भी भली नहीं हैं और जिन्होंने बहुत सम्भव है, यही काम किया हो पर गर्भवती होने और पकडे जाने से अपने को किसी तरह बचा लिया हो, जब इस युवती के पास बैठती या आती हैं तो दामन सम्हालकर। ऐसा न हो कि यह छूत उन्हे लग जाय। उसे बुरा-भला कहती हैं, और हर तरह उसे नीचा दिखाती हैं। यह बडी निर्दयता का काम है. बिलकुल ढोंग है। जब ऐसे पुरुष भी

मेरा दृढ़ विश्वास है कि बहुत अधिक संयम, स्त्री से बहुत दूर भागने का और इस तरह प्रकृति से लड़ते रहने का ही यह फल है कि आज इतने तरह की स्नायविक बीमारियाँ फैली हुई हैं। रक्त की कमी या अधिकता, मानसिक दुर्बलता, उत्तेजना, निद्रा रोग आदि बहुत सी बीमारियाँ इसका परिणाम हैं।

यह उसके विचार थे, जो मै आपके सामने रख रहा हूँ।

——

नहीं कर सकते, स्त्रियाँ कभी उन पर मोहित नहीं हो सकतीं। ऐसे पुरुषों को स्त्रियाँ 'बर्दाश्त' कर सकती हैं, पति-रूप मे पाने पर उन्हे जबरदस्ती बर्दाश्त करना होता है।

वर्तमान सभ्यता के कारण काम का आवेग हर तरह से प्रभावित होता है, बढ़ता है, और जटिल हो जाता है। आप किसी बड़ी जगह चले जाइए और इस बात को अपनी आँखो देखिए। गाँवो मे भी दुराचार है, किन्तु शहरो के घनीभूत दुराचार से वह बिलकुल भिन्न है। गाँवो में युवक या वृद्ध तक—जमींदार श्रेणी के व्यक्ति—कभी-कभी किसी युवती को लेकर उत्पात मचा सकते हैं, मचाते हैं किन्तु शहरो की तरह उनके दिमाग़ दिन-रात काम-सम्बन्धी बातो मे उलझे नही रहते। नगरो में सिनेमा थियेटर हैं, प्रेम की कहानियाँ और उपन्यास हैं, तरह-तरह के मनोविनोद हैं, फैशन और विलास है। गाँवो मे ये बीमारियाँ नहीं हैं, इसलिए वहाँ के लोग कामरोगी नहीं होते। विचारो में यह शक्ति होती है कि वे बहुत जल्दी बढ़ते हैं, फैलते हैं, खासकर बुरे विचार।

हम लोग एक जगह, एक होटल मे चाय पीते वक्त, बात कर रहे थे। एकाएक सरयू ने कहा—मुझे आश्चर्य है, आप मेरे साथ यो होटल मे बैठने मे हिचकते नहीं।

मैंने पूछा—क्यों? इसमे हिचकने की क्या बात है?

सरयू ने कहा—शायद आप यह भूल रहे हैं कि हजारो व्यक्ति मुझे पहचानते हैं, मेरे बारे मे जानते हैं और मुझे देखते ही पहचान लेंगे। मैं समाज और कानून के लिए खतरनाक जो हूँ! यहाँ के पुराने पुलिस अधिकारी भी मुझे जानते है। उनके पास मेरा चित्र भी है।

मैंने हँसकर कहा—और अँगूठे का निशान? उँगलियों के निशान भी तो उनके पास होंगे।

ःहनता था, वहुत सुन्दर वाल थे। और उसकी आँखें! ओह, उनमे जादू था। घनी भौंहे और वरौनियाँ थीं, काली पुतलियाँ....'

मैंने ऊबकर कहा—अगर आप आँखो और भौंहो का वर्णन छोड ही दे तो अच्छा है। उनका मुझे लोभ नही है। उस व्यक्ति का वर्णन छोड़कर आप असली वात वतावें।

सरयू ने हँसकर कहा—मैं उसी रेस्तराँ मे उससे मिली थी। वह मेरी ही टेबुल के पास खाने वैठा था। मैं भी उस समय युवती ही थी। मेरी आयु उस समय पचीस वर्ष की थी। मैं वहाँ अपने काम के सिलसिले मे गई थी। खाना खाते-खाते उसने कई वार मेरी ओर देखा। खाना समाप्त होते न होते मैंने उसकी ओर देखकर मुसकरा दिया। वह तुरन्त उठकर मेरे पास आया और नम्र शब्दो में कहा—क्या मैं यहाँ वैठ सकता हूँ? ओह, उसकी वह आवाज......

मैंने फिर टोककर कहा--कहानी कहती चलिए, रुकिए नहीं।

सरयू आगे वढ़ो—वह मेरे सामने की कुर्सी पर वैठ गया और हम वाते करने लगे। वरावर उसकी आँखें मेरे मुँह पर जमी रहीं, और मैं वदले मे उसकी ओर देखती रही। हमने शराव भी पी, उसने शैम्पेन मँगवाई थी। एक घटे तक हम वहाँ वैठे वातें करते रहे और एक-दूसरे की ओर गहरी निगाहो से देखते रहे। मैं जानती थी कि वह क्या चाहता है। वह जानता था कि मैं क्या चाहती हूँ पर कोई पहले कहना नहीं चाहता था। हम लोग दूसरे दिन मिले, उसके वादवाले दिन भी मिले, फिर उसके वादवाले दिन भी। अगर आज तक जीवन मे मैंने किसी को प्यार किया है तो उसी युवक को—घनी भौंहों और सुन्दर वालों वाला। यही कारण था कि मैं उससे कुछ नहीं कह सकी। वह भी मुझसे कुछ नहीं कह सका। लेकिन यह कव तक चल सकता ?

यह कल्पना के बाहर की बात थी। मैंने उससे पूछा—क्या तुम उस युवक को प्यार करती हो ?

लड़की हँसी। युवक के रुपये से उसे प्यार था, युवक से नहीं ! उस युवक ने उसे काफी रुपया दिया था।

मैंने छिपाकर उसे कुछ दवाइयाँ दीं और सावधान कर दिया कि कोई जानने न पावे। वह दवा आश्चर्यजनक थी, साथ ही भयङ्कर भी। वैसी दवा दूसरी नहीं है। उसके पीने से उत्तेजना यहाँ तक बढ़ती है कि आदमी पागल हो जाता है। उस लड़की को वही दवा उस युवक को पिलानी थी—पहले दिन थोड़ी, फिर अधिक, फिर और, फिर और . ...

मैं रोज युवक को गौर से देखती रहती थी। हाँ, दवा अपना काम धीरे-धीरे कर रही थी। उसकी आँखें अधिक चमकीली हो गई थीं। वह रोज-रोज बेचैन होता जाता था। लेकिन मुझे वह भूलता जा रहा था। जब मैं उस लड़की की बात छेड़ देती तब वह बड़े ध्यान से सुनता, लेकिन साथ ही यह भी समझता था कि मुझे इससे डाह हो सकती है, अत कभी-कभी बात बदल भी देता था। और दवा काम करती जा रही थी। उस लड़की के लिए उसकी वासना और उत्तेजना बुरी तरह बढ़ रही थी। जल्द ही वह समय आनेवाला था जब वह युवक बिलकुल बेकाबू हो जाता।

एक दिन शाम को, जब मैं उसके साथ थी, वह समय आ ही गया। वह मेरे कमरे में था। मैंने उसे खाने को बुलाया था। आज उसकी आँखें असाधारण रूप से चमक रही थीं, उँगलियों को वह बुरी तरह मरोड़ रहा था, मस्तिष्क कहीं और था। मैं जो कुछ कहती थी वह शायद सुन भी नहीं पा रहा था और अण्ट-सण्ट उत्तर दे रहा था। खाना अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि वह उठकर खड़ा हो गया। कहने लगा—मैं जा रहा हूँ, अभी आ रहा हूँ।

बार, उसके प्रति मेरे मन मे दया उपजी। जीवन भर कठोर और भयंकर जीवन व्यतीत करने पर भी, अब कहीं, किसी कोने मे, उसके हृदय था! थोड़ी देर बाद उसने फिर कहना शुरू किया— क्षमा कीजिए। यह बेवकूफी है। इतने वर्षों बाद .. मै सोचती थी कि मैं भूल गई हूँ। मैंने आज तक यह कहानी किसी से नहीं कही। जब तक मै जीवित हूँ तब तक आप भो इसे किसी से न कहे, इसका वादा कीजिए।

मैंने पूछा—उसके बाद क्या हुआ?

सरयू ने कहा—अरे, क्या मैंने बताया नहीं? मुझे घूँसा मारने के बाद वह झपटकर कमरे के बाहर निकल गया। उसी समय मैंने उसे अन्तिम बार देखा था। मैं रात भर सो नहीं सकी। जिधर अँधेरे में देखती वह उस लड़की के आलिंगन मे दिखाई देता। फिर भी मुझे, आश्चर्य है, डाह नही हुई। केवल अपने कार्य पर घृणा होती रही। पछतावा होता रहा।

दूसरे दिन दोपहर को मैं बाहर निकली। मैं उस मकान की ओर जाना नहीं चाहती थी किन्तु इच्छा के विरुद्ध मेरे पाँव मुझे लड़की के मकान की ओर खींच ले गये। मकान के पास पहुँचकर मुझे ऐसा मालूम हुआ मानों मेरे हृदय की धडकन बन्द हो रही है। मकान के पास भीड़ जमा थी।

मैंने एक आदमी से पूछा—क्या बात है?

उस आदमी ने उत्तर दिया—एक युवक इस मकान में मरा पाया गया है।

'और लडकी का क्या हुआ? मैं समझती हूँ, कोई लड़की भी रही होगी।'—मैंने पूछा।

'हाँ, लड़की भी थी। वह भी मर गई है।'—उसने उत्तर दिया।

ओफ, बेचारी लड़की को भी मेरे कारण दण्ड भुगतना पड़ा।

नारियों की आकर्षण-शक्ति के विषय मे सरयू सविस्तर वर्णन करती थी। उसका कहना था कि सुन्दर से सुन्दर लड़की में भी आकर्षण नहीं हो सकता और सीधी-सादी, यहाँ तक कि बदसूरत लड़कियो मे भी पुरुषो को मोहने की असाधारण शक्ति हो सकती है।

क्या यह अप्रकट चुम्बकीय शक्ति है, व्यक्तित्व का अप्रत्यक्ष प्रभाव है, स्वाभाविक आकर्षण है? ऐसा भी हो सकता है कि ऐसे आकर्षणवाले व्यक्ति किसी ऐसे सादृश्य को रखनेवाले हो जो दूसरे व्यक्तियो मे भी हो। उसका विचार था कि जीवित मनुष्य प्रतिपल काम-चेतना को ग्रहण किया करते हैं, गुप्त काम की वैद्युतिक धारा को ग्रहण किया करते हैं, जो बहुत से व्यक्तियो मे औरो की अपेक्षा अधिक होता है। इसके प्रमाण मे उसने कितनी ही ऐसी लडकियो को दिखाया जो वास्तव में बदसूरत थीं किन्तु उनमे शारीरिक आकर्षण के बदले एक स्पष्ट मोहकता थी। उनकी आँखो का भाव आश्चर्यजनक था। जब वे मुसकराती थीं तब यह आकर्षण दस गुना बढ़ जाता था। मैं अब तक जितनी सुन्दरियो से मिल चुका था उनसे वे भिन्न थीं।

इन 'ख़ुफ़ियाख़ानो' पर कभी पुलिस का धावा होता है। जब उनका भण्डाफोड़ होता है तब जनता में एक बार हाय-तोबा मच जाती है। ये कैसे बसे? पहले ही क्यों नहीं बन्द कर दिये गये? पुलिस को पहले ही क्यो नहीं पता लगा या पुलिस ने पहले ही क्यों नहीं पता लगाया? सुनने में यह बात ठीक जान पड़ती है,

नारियो की आकर्षण-शक्ति के विषय में सरयू सविस्तर वर्णन करती थी। उसका कहना था कि सुन्दर से सुन्दर लड़की मे भी आकर्षण नही हो सकता और सीधी-सादी, यहाँ तक कि वदसूरत लड़कियो मे भी पुरुषो को मोहने की असाधारण शक्ति हो सकती है।

क्या यह अप्रकट चुम्बकीय शक्ति है, व्यक्तित्व का अप्रत्यक्ष प्रभाव है, स्वाभाविक आकर्षण है? ऐसा भी हो सकता है कि ऐसे आकर्षणवाले व्यक्ति किसी ऐसे सादृश्य को रखनेवाले हो जो दूसरे व्यक्तियो मे भी हो। उसका विचार था कि जीवित मनुष्य प्रतिपल काम-चेतना को ग्रहण किया करते हैं, गुप्त काम की वैद्युतिक धारा को ग्रहण किया करते हैं, जो बहुत से व्यक्तियों मे औरो की अपेक्षा अधिक होता है। इसके प्रमाण मे उसने कितनी ही ऐसी लड़कियो को दिखाया जो वास्तव मे वदसूरत थीं किन्तु उनमें शारीरिक आकर्षण के वदले एक स्पष्ट मोहकता थी। उनकी आँखो का भाव आश्चर्यजनक था। जब वे मुसकराती थीं तब यह आकर्षण दस गुना बढ़ जाता था। मैं अब तक जितनी सुन्दरियो से मिल चुका था उनसे वे भिन्न थीं।

इन 'ख़ुफ़ियाख़ानो' पर कभी पुलिस का धावा होता है। जब उनका भण्डाफोड होता है तव जनता मे एक वार हाय-तोबा मच जाती है। ये कैसे वसे? पहले ही क्यो नहीं वन्द कर दिये गये? पुलिस को पहले ही क्यों नहीं पता लगा या पुलिस ने पहले ही क्यों नहीं पता लगाया? सुनने मे यह वात ठीक जान पड़ती है

यह विशेषता केवल चीनियों में ही है। चीन मे वर्षों रहनेवाले कई यूरोपियनो का कहना है कि चीनी शारीरिक यातना का अनुभव कम करते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि चीनी व्यक्ति जब तक अपनी प्रेमिकाओ को शारीरिक कष्ट नही देते, तब तक उन्हें कामोत्तेजना नहीं होती।

सरयू का यह विश्वास तो था कि एक दिन सभी वेश्यालय अपने आप बन्द हो जायँगे, किन्तु वह इसे स्वीकार नहीं करती थी कि स्त्रियों का व्यापार या स्त्रियो की माँग बन्द हो जायगी। हो सकता है कि लड़कियों और स्त्रियो के व्यापार मे भारी अड़चनें हो जायँ, किन्तु इसे बिलकुल रोक देना असम्भव है। मानव-अस्तित्व का यह एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग सृष्टि के आदि से ही रहा है। प्राचीन रोम, ग्रीस और मिस्र देश के निवासी, असीरियन, एशिया माइनर के प्राचीन निवासी और भारतवर्ष, सभी ने यौन सम्बन्धो के लिए नारियों का व्यापार हमेशा किया है। फिर क्या यह सम्भव है कि आज सब बातें अकस्मात् बदल जायँ ? नहीं, हाँ, वेश्यालय जरूर बन्द हो सकते हैं।

रूस में क्रान्ति के बाद ऐसी दशा हो गई थी कि बड़े-बड़े घरों की कन्याएँ और स्त्रियाँ भूख के मारे नीच से नीच काम की खोज में कुस्तुन्तुनिया, बुखारेस्ट, सोफिया और अन्य शहरों में मारी-मारी फिर रही थीं। नारी-शरीर के व्यवसायियो को अवसर मिला और उन्होंने न जाने कितनी सुन्दरी युवतियों को खरीदा। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि स्त्रियाँ, जो भले और ऊँचे घरो की थीं, जो विलास-वैभव मे पली थीं, एक मात्र भूख की ज्वाला के कारण यह लज्जाजनक कार्य करती थीं। कुछ ने नौकरी भी करनी चाही, किन्तु बिना कभी वैसी आदत हुए वे अधिक दिनो वहाँ न टिकी रह सकीं। वहाँ से निकाली गईं और जब उन्हें इन व्यापारियों से खाने-कपड़े का प्रलोभन मिला

कुछ दिनों रही। सौदामिनी की मृत्यु के अठारह महीने बाद एक बहुत सुन्दर युवती हमारे यहाँ आई। और लड़कियाँ भी थीं। मैं सुन्दर के साथ यह देखने गई कि वह कैसी है, व्यापार के योग्य है या नहीं। सुन्दर ने पहले ही दिन जिस दृष्टि से उस युवती को देखा, उसे मैं भाँप गई। यह साधारण दृष्टि न थी। दूसरे दिन उसने मुझसे बहाना किया कि वह अकेले में उस लड़की से मिलना चाहता है। इसके बाद कई दिन तक वह रोज रात को उस लड़की से अकेले मे जा-जाकर मिलता रहा। रोज मेरे प्रति उसका स्नेह भी घटता जा रहा था, यह मैं देख रही थी। वह अधिकाधिक उस युवती के प्रति आकर्षित होता जा रहा था। मुझे डाह होनी चाहिए थी, पर आश्चर्य है कि, ऐसा नही हुआ। हाँ, उसी दिन से मै पुरुषों से घृणा करने लगी।

मैंने पूछा—और आपने फिर उसे कब देखा ?

'मैंने फिर उसे नहीं देखा, न देखना चाहती हूँ। शायद वह मर भी गया हो।'

'क्या आप लोगो की साझेदारी खतम हो गई ?'

'यह केवल एक मौखिक इक़रारनामा था। ऐसी चीजों की लिखा-पढी नहीं होती। हाँ, खतम ही हो गई। उसका एक पत्र मेरे पास आया था और मैंने उत्तर दे दिया था। वह मकान मेरे हाथ मे ही रहा। कोई खास बात उस पत्र मे नहीं थी। और मैंने उसे अधिक महत्त्व भी नहीं दिया।'

तो, सुन्दर और होटलवाला वह युवक! दो व्यक्तियों का इस नारी के जीवन मे महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिन्होने उसके हृदय पर प्रभाव डाला है। वासना की पूर्ति उसकी और जगह भी हुई है किन्तु वासना और प्रेम, दो भिन्न वस्तुएँ हैं। जितना ही मैं सरयू को जानने की चेष्टा करता था, उतना ही वह जटिल होती जाती थी। मानव शास्त्रियों के अनुसार, दुनिया में ऐसे लोग होते हैं

की तरह वह युवती सरय की सेवा करती थी। यह देखा गया है कि स्त्री-पुरुष के प्रेम की अपेक्षा ऐसा प्रेम अधिक दृढ़ तथा टिकाऊ होता है। यह ऐसा ही था। यह लड़की सोलह या सत्रह वर्ष की आयु से सरयू के साथ थी और दस-बारह बरस अब तक उसे रहते हो गये थे। पहले तो सरयू ने उससे अपना जीवन-वृत्तांत छिपाया, पर धीरे धीरे वह सब जान गई। पर सरयू के प्रति स्नेह मे कमी नहीं हुई।

जीवन के अन्तिम दिनो मे सरयू अपने अतीत की कहानी अक्सर सुनाती पर उस अतीत पर उसे पश्चात्ताप नहीं था। इस बूढ़े व्यक्ति के हाथो में उसे सौंप देने के लिए अपनी माता को वह कभी क्षमा नही कर सकी। जिसे हम लोग 'अन्तरात्मा' कहते हैं उससे बिलकुल शून्य होते हुए भी, अपने जीवन में सरयू ने जो कुछ किया था, उसके लिए उसे दुःख नहीं था। मानवता की एक बहुत बडी माँग को पूरी करने मे उसने लोगो की सहायता की थी—वह यही मानती थी।

यही सरयू की कहानी है। दुनिया में ऐसे लोग है जो स्त्रियों और बच्चो के व्यापार की बात को झूठ समझते हैं। किन्तु इसका कोई उपाय नहीं है। जिस चीज पर हम विश्वास न करना चाहे उसे झूठ समझ लेने मे हर्ज ही क्या?

सरयू को साधारण कोटि के व्यक्तियो मे रखना अथवा उसका साधारण नियमो से विचार करना उसके प्रति अन्याय होगा। उसने कई बार कहा था कि अधिकतर अपराधी अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार नहीं होते, अत दण्ड देने की अपेक्षा उनका सुधार करना चाहिए।

आगामी २०० पुस्तकें

नीचे लिखी २०० पुस्तकें शीघ्र ही छप रही हैं। ये हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों-द्वारा लिखाई गई हैं। आप भी इनमें से अपनी रुचि की पुस्तकें अभी से चुन रखिए और अपने चुनाव से हमें सूचित भी करने की कृपा कीजिए।

विचार-धारा

मानव-संबंधी

(१) जीवन का आनन्द
(२) ज्ञान और कर्म
(३) मेरे अन्त समय के विचार
(४) मनुष्य के अधिकार
(५) प्राच्य और पाश्चात्य समस्या
(६) मानव धर्म
(७) जातियों का विकास
(८) विश्व प्रहेलिका

समाज-संबंधी

(१) संस्कृति और सभ्यता का विकास
(२) विवाह प्रथा, प्राचीन और आधुनिक
(३) सामाजिक आन्दोलन
(४) धर्म का इतिहास
(५) नारी
(६) दरिद्र का क्रन्दन

राजनीति-संबंधी

(१) समाजवाद
(२) चीन का स्वातन्त्र्य-प्रयत्न
(३) राष्ट्रों का संघर्ष
(४) स्वाधीनता और आधुनिक युग
(५) युवक का स्वप्न
(६) योरपीय महायुद्ध
(७) मूल्य, दर और लाभ

विश्व-उपन्यास

(१) तावीज़
(२) आना केरेनिना
(३) मिलितोना
(४) डा० जेकिल और मि० हाइड
(५) पंपियायी के अन्तिम दिन
(६) अमर नगरी
(७) काला फूल
(८) चार सवार
(९) रेबेका
(१०) डेविड कूपर फील्ड
(११) जेन्डा का कैदी
(१२) वेनट
(१३) कोवेडिस
(१४) रोमियो-जूलियट
(१५) दो नगरों की कहानी
(१६) टेस
(१७) रहस्यमयी

आधुनिक उपन्यास

(१) चुनारगढ़
(२) विषादिनी
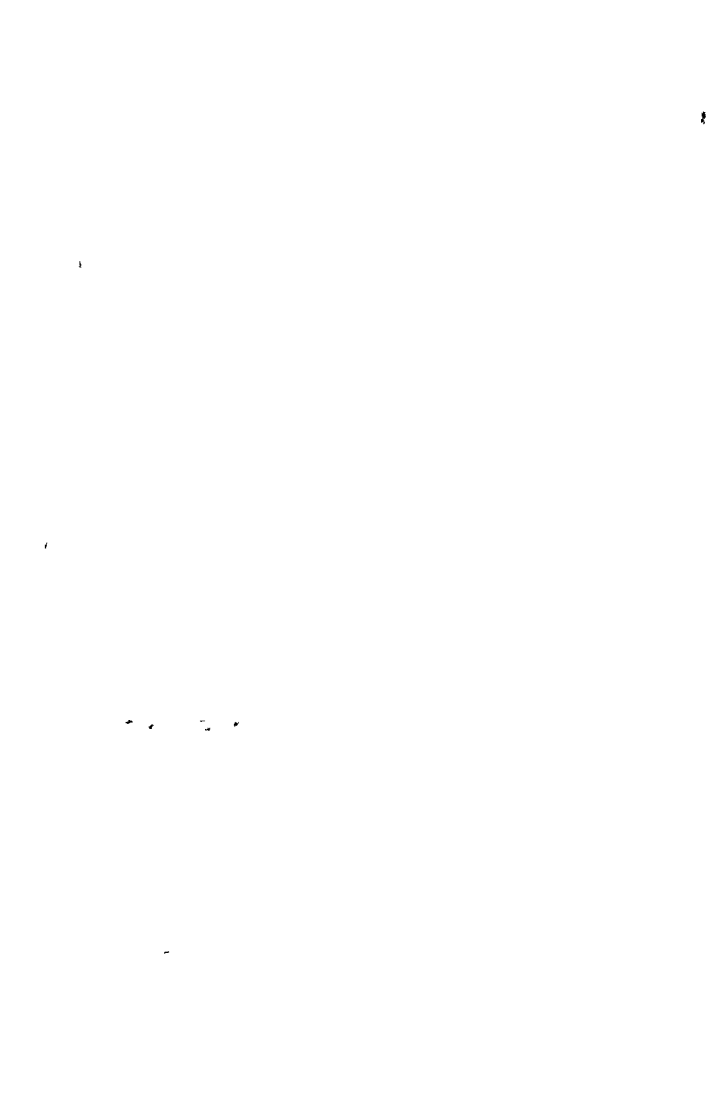
('ख' विभाग)—लेखकों की अपूर्व चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

('ग' विभाग)—विभिन्न विषयों पर चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

('घ' विभाग)—भारतीय भाषाओं की चुनी हुई कहानियाँ—६ भाग

विज्ञान

(१) स्वास्थ्य और रोग
(२) जानवरों की दुनिया
(३) आकाश की कथा
(४) समुद्र की कथा
(५) खाद विज्ञान
(६) मनुष्य की उत्पत्ति
(७) प्राकृतिक चिकित्सा
(८) विज्ञान का व्यावहारिक रूप
(९) प्रकृति की विचित्रतायें
(१०) वायु पर विजय
(११) विज्ञान के चमत्कार
(१२) विचित्र जगत्
(१३) आधुनिक आविष्कार

हिन्दी-साहित्य

अमर साहित्य

(१) वैष्णवपदावली
(२) मीरा के पद
(३) नीति संग्रह
(४) हिन्दी की सूफी कविता
(५) प्रेममार्गी रसखान और घनानन्द
(६) सन्तों की वाणी
(७) सूरदास
(८) तुलसीदास
(९) कबीरदास
(१०) बिहारी
(११) पद्माकर
(१२) श्री भारतेन्दु

साहित्य-विवेचन-निबंध-संग्रह, इत्यादि

(१) हिन्दी-साहित्य में नूतन प्रवृत्तियाँ
(२) हिन्दी-कविता में नारी
(३) हिन्दी के उपन्यास
(४) हिन्दी में हास्य-रस
(५) हिन्दी के पत्र और पत्रकार ?
(६) हिन्दी का वीर-काव्य
(७) नवीन कविता, किधर
(८) ब्रजभाषा की देन
(९) हिन्दी के निर्माता (द्वितीय भाग)
(१०) बालकृष्ण भट्ट
(११) बालमुकुन्द गुप्त
(१२) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(१३) बाबू श्यामसुन्दरदास

धर्म

(१) गीता (शाङ्करभाष्य)
(२) ,, (रामानुजभाष्य)
(३) ,, (मधुसूदनी टीका)
(४) ,, (शङ्करानन्दी टीका)
(५) ,, (केशव काश्मीरी की टीका)
(६) योगवासिष्ठ (११ मुख्य आख्यान)